मकातीब

मौलवी मुहम्मद इलयास रह०

मौलवी सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)

मकातीब
मौलवी मुहम्मद इलयास रह.

मौलवी सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)
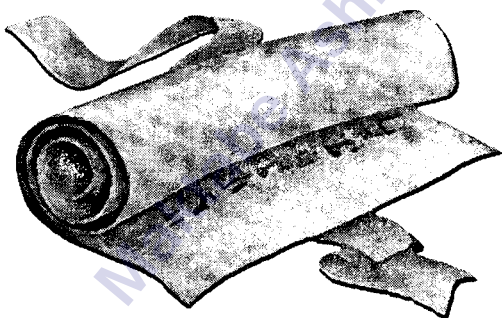
अनुवादक
अहमद नदीम नदवी

इदारा इशाअते दीनियात (प्रा)लि०
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.

मकातीब मौलवी मुहम्मद इलयास रह.

मौलवी सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)

ISBN: 81-7101-556-5
Edition: 2009
TP-044-09

Published by
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.
168/2, Jha House, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110 013 (India)
Tel.: 2695 6832-34 Fax: +91-11-2694 2787
Email: **sales@idara.in info@idara.com**
Visit us at: **www.idara.com**

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ख़तों के पढ़ने से पहले

अलहम्दु लिल्लाहि व सलामुन अला इबादिहिल्लज़ी-नस्तफ़ा, अम्मा बाद।

दीन के मशायख बुज़ुर्ग, उलेमा और मुस्लिहीन के मकातीब व रसाइल (ख़ुतूत) के मज्मूए पुराने ज़माने से पाये जाते हैं। ये ख़त उनके दिली जज़्बात और असली ख़्यालात का आईना होते हैं और कभी-कभी ये मज्मूए उनके सही हालात व ख़्यालात और उनकी दावत व तहरीक के असली मुहर्रिकात मालूम करने का उनकी सवानेह (जीवनी) के मुक़ाबले में ज़्यादा मुस्तनद ज़रिया समझे जाते हैं, इसलिए कि सावानेह और सीरतें दूसरे लोगों की तर्तीब दी हुई होती हैं, और उनमें उनके लिखने वाले के ज़ौक़ व रुझान का अच्छा ख़ासा दखल होता है, कम से कम तर्जुमानी और इस्तिम्बात (नतीजा निकालना) पूरे का पूरा लिखने वालों की ओर से होता है और अपने ज़ौक़ व रुझान से बिल्कुल आज़ाद और मुजर्रद हो जाना बहुत मुश्किल बात है। इस्लामी कुतुबख़ाने (लाइब्रेरी) में ख़तों के मज्मूओं का एक बड़ा ज़ख़ीरा (भंडार) मौजूद है, जो बड़ी तारीख़ी और इल्मी अहमियत रखता है। हिन्दुस्तान के इस्लामी दौर ने इस कुतुबख़ाने के बड़े-बड़े क़ीमती अतीए पेश किए हैं। इन तोहफ़ों में दो मज्मूए ख़ासतौर पर नुमायां हैं और इस मौज़ू (विषय) की किताबों में उनका मक़ाम बहुत बुलन्द है। एक हज़रत शेख़ शर्फ़ुद्दीन यह्या मुनेरी रहमतुल्लाहि अलैहि के मकातीब (ख़तों) का मज्मूआ, (जिसका नाम) 'मक्तूबाते सह सदी है', दूसरे इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी रहमतुल्लाहि अलैहि के मकातीब का मज्मूआ है जो मारफ़तों और हक़ीक़तों का बड़ा ख़ज़ाना है।

मौलवी मुहम्मद इलयास रहमतुल्लाहि अलैहि की सवानेह तर्तीब देने का ख़्याल हुआ तो उनके ख़तों की तलाश हुई, जो उनके जज़्बात व तास्सुरात और उनकी दावत और दीनी जद्दोजेहद के अन्दरूनी मुहर्रिकात का मुताला करने का

सबसे मुस्तनद और भरोसे का ज़रिया है। इस सिलसिले में ख़तों का एक अच्छा मज्मूआ दस्तयाब हुआ। खुद ख़ाकसार लिखने वाले को मौलवी ने बड़े तफ़्सीली, लम्बे, ज़ोरदार और असरदार ख़त लिखे थे, जिसमें से कुछ तो छोटे किताबचों के बराबर थे। उन्हीं की मदद से और उनके इक़्तिबासों से ख़ाकसार ने किताबचा 'एक अहम दीनी दावत' तर्तीब दिया था, जो मौलवी ने एक-एक लफ़्ज़ करके सुना था। यह मालूम करके कि ख़ाकसार लिखने वाले को मौलवी के ख़तों की ज़रूरत है, कुछ दूसरे दोस्तों ने अपने-अपने नाम के ख़त इनायत फ़रमा दिए थे, जिनमें से ज़्यादा क़ीमती ज़ख़ीरा वह है, जो मियां जी ईसा साहब के नाम है, मेरे मोहतरम बड़े भाई मौलवी हकीम डाक्टर सैयद अब्दुल अली साहब[1] ने इन सब ख़तों को एक मज्मूए में जमा करवा दिया। जमा होने के बाद मालूम हुआ कि न सिर्फ़ दावत के उसूल व आदाब और उसकी रूह व ज़वाबित के लिहाज़ से, बल्कि अपने बुलन्द मज़ामीन और दीनी हक़ीक़तों के लिहाज़ से भी एक गरांक़द्र ज़ख़ीरा है।

इन ख़तों में मौलवी को यक़ीन व एतमाद, ईमानी क़ुव्वत, इस्लामी हमीयत, दीन की फ़िक्रमंदी, बेचैनी व बेकली, ताल्लुक़ बिल्लाह, दीन की सही समझ, शरीअ़त के मक़ासिद और दीनी रूह की मारफ़त का सही अन्दाज़ा होता है और मालूम होता है कि इन ख़तों का लिखने वाला अपने वक़्त का आरिफ़ था और वह दीन की जद्दोजेहद और एक ख़ास तरीक़े से दीन को ज़िंदा करने और ताक़त देने के लिए अपने को मामूर और ज़िम्मेदार समझता था।

कुछ दोस्तों और बुज़ुर्गों ने इस मज्मूआ की इशाअत की तहरीक की, उनकी राय में इससे इस सिलसिले की तक्मील होती है जो सवानेह और मलफ़ूज़ात से शुरू हुआ है, बल्कि यह मज्मूआ इस सिलसिले की सबसे ज़्यादा क़ीमती और भरोसे के क़ाबिल चीज़ है, क्योंकि यह सीधे-सीधे मौलवी के लफ़्ज़ों और ख़्वाबों की ताबीर है और इन मज़्मूनों और इन मज़्मून वालों के दर्मियान कोई वास्ता और हिजाब नहीं।

1. देखिए टिप्पणी पृ० 21

ख़ाकसार को इन ख़तों की इशाअत में तरद्दुद था और इसी का नतीजा है कि यह मज्मूआ कई वर्ष की ताख़ीर के बाद शाया हो रहा है। बड़े तरद्दुद की चीज़ तो यह थी कि इस मज्मूए का सबसे बड़ा हिस्सा इस ना-अह्ल के नाम है। ये ख़त उस दौर में लिखे गए हैं कि मौलवी पर दावत पूरी तरह वाज़ेह और मुनक़्क़ह हो गई थी, और इसका तबियत पर सख़्त ग़लबा था, उस वक़्त इल्म वालों में से कोई मुतवज्जह नहीं हुआ था और न मौलवी को कोई ऐसा आदमी मिलता था जिससे वह अपने दिल की पूरी बात तफ़्सील से कह सकें। ऐसी हालत में इस नाचीज़ का आना-जाना शुरू हुआ। शुरू के ख़त जो सबसे ज़्यादा लम्बे और तफ़्सीली हैं, उसी दौर की यादगार हैं। अब इन ख़तों को पढ़ता हूं तो मुझे सख़्त शार्मिंदगी होती है, उनमें जिस एतमाद व मुहब्बत और जिन उम्मीदों को ज़ाहिर किया गया है, उनका किसी तरह अपने को अह्ल नहीं पाता, कोशिश की कि मक्तूब इलैहि के नाम के इज़्हार के बग़ैर वे शाया हों तो ऐसा मुम्किन न मालूम हुआ कि ख़तों के अन्दर जगह-जगह ऐसे इशारे हैं कि यह बात छुप नहीं सकती और छुपाने की ज़्यादा कोशिश की जाए तो पढ़ने वालों के दिल में ख़ामख़ाही जुस्तजू पैदा हो जो इज़्हार ही की एक हुनरमंदाना शक्ल है।

तरद्दुद की दूसरी वजह यह थी कि इन ख़तों की ज़ुबान आम पढ़ने वालों के लिए ना मानूस है और उनके मज़ामीन आम सतह से बुलन्द हैं। ये किताबी मज़ामीन नहीं हैं जो मुरव्वजा इस्तिलाहों में लिखे गए हों, जिनको एक तालिबे इल्म मुताला करके हल कर ले, उनका ख़ासा हिस्सा दक़ीक़ व लतीफ़ है, जो या तो वे लोग समझ सकते हैं, जो मौलवी की बातें सुनते रहे हैं और उनकी ताबीरों और इस्तिलाहों के आदी हैं या जिन्होंने तसव्वुफ़ और हक़ाइक़ व मआरिफ़ की किताबों का अच्छी तरह मुताला किया है, या फिर वे जिनको काम करते-करते इन मज्मूओं से मुनासबत पैदा हो गई है।

लम्बे तज़बज़ुब और कशमकश के बाद यह ख़्याल हुआ कि इस मज्मूए की इशाअत उन लोगों के लिए बड़ी फ़ायदेमंद और तक़्वीयत की वजह होगी जो दावत के काम में मश्ग़ूल हैं और इससे मुनासबत रखते हैं। इन ख़तों से उनकी

हिम्मतें बुलन्द होंगी, उनकी निगाहों में दावत की क़ीमत व अहमियत बढ़ेगी। उसका सही मौज़ू और मक़्सद मालूम होगा, बहुत सी ग़लतियों और कोताहियों पर तनब्बोह होगा और उसको बहुत से उसूल व आदाब मालूम होंगे, मुम्किन है कि इसकी इशाअत किसी अह्ल के लिए अमल का मुहर्रिक या उसकी तक़्वियत की वजह बन जाए और इस तरह किसी ना-अहल की बे-अमली और पस्त हिम्मती का कफ़्फ़ारा हो जाए और 'अद्दाल्लु अलल ख़ैरि कफ़ाइलिही' के उसूल पर (जो इन ख़तों में बार-बार दोहराया गया है) एक बे-बज़ाअत और तहीदामन के लिए अमल बन कर मग़्फ़िरत का ज़रिया बन जाए। यही उम्मीद है जो इस मज्मूए की इशाअत के लिए मुहर्रिक बन रही है। व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बिअज़ीज़०

पढ़ने वालों की आसानी के लिए तशरीह तलब इशारों और इबारतों के हाशिए पर तौज़ीह कर दी गई है, साथ ही ख़ास मज़्मूनों और नुक्तों के मुख़्तसर तौर पर फ़ायदों को ज़ैल में (जिसका इशारा मौजूद है) अलग लिख दिया गया है।

—अबुल हसन अली नदवी,

लखनऊ

13 सफ़र 1372 हि०

बिस्मिल्लाहिर्रहमाननिर्रहीम

अबुल हसन अली के नाम

(1)

इस ख़त के फ़वाइद

(1) अल्लाह तआ़ला के यहां शिकायत मबग़ूज़ और तलब महमूद।

(2) मुस्तक़्बिल की कोशिश माज़ी के शुक्र से खाली नहीं होना चाहिए।

(3) हक़ की तब्लीग़ और उसे बुलन्द करने के लिए इंफ़िरादी और इज्तिमाई नक़्ल व हरकत मज़हब का जिस्म है।

(4) मज़हब का बातिन ईमान व एहतिसाब है।

(5) मज़हब इरादे और नीयत के एतबार से मस्लहतों को ख़त्म कर देता है।

(6) किसी अमल के मौक़े पर उसके दीनी और दुन्यवी मस्लहतों की नीयत और उनको अमल का मुआवज़ा समझना घाटे की वजह है और नफ़ा के तौर पर उनकी उम्मीद रखना रहमत की वजह और तरक़्क़ी की मूजिब है।

मख़्दूम व मुकर्रम, मुअज़्ज़म व मोहतरम सलाला-ए-ख़ानदाने नुबूवत अक़ामनल्लाहु व ईयाकुम लिआलाए कलिमतिही व एहया-ए-सुननि नबीयिही

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

नामा नामी तबियत पर मुतक़ाज़ी हुआ कि वह मसर्रत की तरफ़ रुख़ करे और ख़ुशी का हिस्सा ले, लेकिन अब तक इस्तिक़ामत का नापैद होना और अज़ीयत का उंक़ा होना इस मसर्रत को उभरने नहीं देता।[1]

1. ख़ाकसार (अबुल हसन इलैहिर्रहमत) ने अपने ख़त में लखनऊ के आप-पास के इलाक़ों में तब्लीग़ी काम के शुरू करने की इत्तिला दी थी और इस्तिक़ामत व अज़ीमत की कमी की भी साथ-साथ शिकायत की थी, ऊपर की लाइनों में इन्हीं दो चीज़ों की तरफ़ इशारा है।

मौलवी मोहतरम! कोई अन्दरूनी वलवला तक़ाज़ा कर रहा है कि मैं कुछ लिखूं और अपनी कमज़ोरी और आपकी इज़्ज़त पर आंच आने का डर कोई मज़्मून शुरू करने में रुकावट बन रहा है। अगर कोई मज़्मून तहरीर में आ जाए और जनाब की अच्छी तबियत उसमें बेहतरीन मानी न डाल सके, तो उसकी ऐबपोशी फ़रमा दें—

मन स-त-र मुस्लिमन स-त-र हुल्लाहु यौमल क़ियामति मन रा-अ औरतन फ़-स-त रहा का-न कमन अह्या मौउदतन कमा फ़ी अबूदाऊद)

हज़रत मौलवी मोहतरम! आदमी को अपने वजूद में जो निस्बत अल्लाह तआला के वजूद से है, चाहे वह ज़ात में हो या सिफ़ात में हो, या दूसरे अतीयों में, ज़ाहिर है कि उसके यहां के मुक़ाबले में, जो कुछ उसके पास हो जाए, कुछ भी नहीं और यह भी ज़ाहिर है कि जो कुछ उसको अता हुआ है, वह उसकी अपनी असली हालत के एतबार से (जो कि मनी है, वही कमज़ोरी और गन्दगी अल्लाह के क़ब्जे और तहारत के मुक़ाबले में हर वक़्त बाक़ी है) और इस्तिहक़ाक़ के मुक़ाबले में बहुत ही कुछ और बहुत ज़्यादा है। सो अगर अपनी सई और कोशिश में दोनों हालतों को बराबर-बराबर करते हुए अल्लाह की राह में जिहाद और कोशिश जारी रखे, तो यह कमज़ोर इंसान जितनी तरक़्क़ी पा सकता है, वहां तक कोई तक़रीर या तहरीर या किसी ज़कीउत्तबा इंसान की रूहानियत परवाज़ नहीं कर सकती। इंसान की महरूमी और नाकामियाबी और घाटे की वजह इन दोनों हालतों की मुनासबतों की रियायत का न होना है।

या यह कि अल्लाह तआला के ख़ज़ाने में देने की जितनी गुंजाइश है, उसे देखते हुए और ज़्यादा की तलब और उसके मुनासिब कोशिश नहीं करता है, बल्कि जो कुछ उसको मिल चुका है, उसपर उसी तरह बस करता है, जैसे खुदा के ख़ज़ाने में और कुछ न रहा हो और कभी आगे की कोशिश अब तक के दिए हुए के शुक्र से ख़ाली होती है और जो चीज़ें उसको हासिल नहीं है, उनका लालच, पिछले अतीयों के बिला इस्तिहक़ाक़ के शुक्र से रोक देता है, हासिल की हुई की शिकायत रह जाती है। अल्लाह के यहां शिकायत मबग़ूज़ है और तलब महमूद।

बहरहाल मेरी मारूज़ यह थी कि यह तब्लीग़ जो कुछ भी आप फ़रमा रहे हैं उसके लिए कुछ अरकान और कुछ शर्तें हैं, जिस क़दर उनकी रियायतें सही होंगी (जिसके अहम वही दो हिस्से हैं, जो पहले अर्ज़ कर चुका[1]) तो उसमें इस क़दर खुदा की खुदाई का तमाशा देखेंगे कि बस उनका क्या ज़िक्र किया जाए, जो अब तक मेरे ज़ेहन में दीन में कमी की वजह है, वह एक ज़ाहिर के मुताल्लिक़ है और एक बातिन के मुताल्लिक़ है।

ज़ाहिर के मुताल्लिक़ यह है कि जमाअतें बना कर दीन की बातों के मुताल्लिक़ निकलना छोड़ दिया, हालांकि यही बुनियादी असल थी। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) खुद फिरा करते थे और जिसने हाथ में हाथ दे दिया, वह भी मज्नूनाना फिरा करता था। मक्के के ज़माने में मुसलमानों की तायदाद अफ़राद के दर्जे में थी तो हर-हर फ़र्द मुस्लिम होने के बाद फ़र्दीयत व शख़्सीयत के तौर पर अलग-अलग दूसरों पर हक़ अर्ज़ करने की कोशिश करता रहा। मदीने में इज्तिमाइयत थी, तमद्दुनी ज़िंदगी थी, वहां पहुंचते ही आपने हर चारों ओर जमाअतें रवाना करनी शुरू कर दीं, सो उसका छूट जाना मज़हब के जिस्म का चला जाना है।

और मज़हब का बातिन ईमान व एहतिसाब है। बहुत से आमाल में साफ़-साफ़ ज़िक्र किया जाता है ईमानन व एहतिसाबन, इसलिए हर अमल के बारे में वारिद ख़िताबों के ध्यान के ज़रिए अल्लाह की अज़्मत और उसकी बड़ाई और उसके क़ुर्ब और यक़ीन को बढ़ाते हुए और उन आमाल पर जो दीनी व दुन्यवी मस्लहतों और दीनी व दुन्यवी इनामों और अतीयों का वायदा फ़रमाया है, उनको अता के तौर पर, न कि मुआवज़े के तौर पर यक़ीन करते हुए इन अमलों में ध्यान करते रहना यह मज़हब का बातिन है।

मज़हब इरादा और नीयत के एतबार से तो रोज़ की मस्लहतों को ख़त्म करने वाला है और मस्लहतों के इरादे पर नाकामी और घाटा है और अता के तौर

---

1. यानी अपने वजूद और अल्लाह के अतीयों की मजमूई रियायत और मुराक़बा।

पर उम्मीद रखना रहमत और कमाल के बढ़ाने की मूजिब है।[1]

जनाब के फ़रमाने से मैंने इस वक़्त मुख़्तसर लिख दिया। जनाब इसके अंदर अच्छी कोशिश फ़रमावें। मुझे इसके अंदर ऐसी-ऐसी उम्मीदें हैं जो ज़ुबान व क़लम को इज़्हार से रोकती हैं, ख़ुदी और मस्लहतों से नीयत को साफ़ करने के बाद इस काम में थोड़ी-सी जांबाज़ी इसमें अजीब आशनाई बख़्शेगी।

मेवात पर ख़ाकसारों ने बड़ी ताक़त से धावे का इरादा कर रखा है। पहले हमले में अल्लाह ने नीचा दिखलाया, लेकिन आप जैसे बुज़ुर्गों की हिम्मत और दुआ के साथ मुतवज्जह रहने की ज़बरदस्त ज़रूरत है। 'अल फ़ुर्क़ान' के जिस नंबर में आप का मज़्मून हो उससे मुत्तला फ़रमाएं।[2]

मेवात से सवा सौ डेढ़ सौ के अंदाज़ में आपके बाद से अब तक दिल्ली और उसके पास-पड़ोस के इलाक़ों में तब्लीग़ में मशग़ूल रहे, इस वक़्त चालीस-पचास के क़रीब करनाल की तरफ़ रुख़ किए हुए हैं। यह जुमा सोनीपत में पढ़ा था, इसके बाद अब का जुमा पानीपत में पढ़ने की उम्मीद है और इसके बाद का जुमा करनाल पढ़ने का ख़्याल है। जनाब आली ख़ुद भी और आंजनाब के दोस्त और दूसरे मुसलमान भी कम से कम वाली मिक़्दार से मदद में शिर्कत फ़रमा दें जो कि 'मन रा-अ मिनकुम मुन्करन फ़ल युग़य्यिरहु बियदिही फ़ इल्लम यस्ततिअ़

1. शरीअत की असल रूह और सही तर्तीब यह है कि हर अमल से सिर्फ़ रिज़ा-ए-इलाही मक़्सूद हो। अक्सर शरई हुक्मों की तामील और फ़र्ज़ और नफ़्ल इताअतों पर अल्लाह की तरफ़ से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबानी रहमत व रिज़ा व मग़्फ़िरत व जन्नत के वायदे और दीनी फ़ज़ीलतें नक़्ल की गईं, कभी उनके साथ इन आमाल की दीनी व दुन्यवी मस्लहतें और नफ़ा भी बयान कर दिए गए हैं; मोमिन को अपने अमल का मुआवज़ा तो सिर्फ़ रिज़ा व मग़्फ़िरत को समझना चाहिए या जन्नत को (जो उसकी ख़ुशनूदी का निशान और उसकी रिज़ा का महल व मक़ाम है), बाक़ी दूसरी मस्लहतों और नफ़ों को अल्लाह का अतीया और इनाम समझना चाहिए और उनकी क़द्र करनी चाहिए, मगर अमल का मुहर्रिक असली और नीयत सिर्फ़ रिज़ा-ए-इलाही हो और अमल के वक़्त उसका मुराक़बा और ध्यान हो।

2. एक हफ़्ता कुछ दीनी मर्कज़ों में, अल फ़ुरक़ान

फ़बिलिसानिही फ इल्लम यस्ततिअ़ फ़बिक़ल्बि-ही व-ज़ालि-क अज़ अ़फ़ुल ईमान०[1] औ कामा क़ा-ल में है।

दोबारा अर्ज़ है कि इस तब्लीग़ का अब तक छूटा रहना बे-वजह न था। लतीफ़ मामलों की रियायत ज़रूरी है। इन्किसारे क़ल्ब और बन्दिशेराह पेश आने से पहले इन की रियायत के लिए तबियत का अन्दाज़ से आमादा होना और तबियत का एहसास के क़ाबिल होना बड़ा दुशवार है।

अहबाब की ख़िदमत में सलाम मस्नून।

फ़क़त वस्सलाम
बन्दा मुहम्मद इलयास गुफ़ि-र लहू
ब-क़लम इनामुल हसन कांधलवी[2]
मार्च 1940

(2)

इस ख़त के फ़वाइद-

1. इस वक़्त का वबाई मरज़ क़ौल (तक़रीर व तहरीर की शक्ल में यानी दोनों) की मिक़्दार में ज़्यादती है और वबा के असर से वबा के ज़माने में कोई ख़ाली नहीं होता।

2. इंसान महज़ अल्लाह का ख़लीफ़ा होने की हैसियत से क़ीमती है, बाक़ी उसके सब एतबार सिफ़ली होते हैं।

3. तब्लीग़ में निकलने वालों को दूसरों की हिदायत से नज़र बिल्कुल बन्द कर लेनी चाहिए।

4. निकलने वालों की ज़िम्मेदारियां और आदाब,

---

1. जिस तरह किसी शरई मुन्कर के मुक़ाबले में मोमिन के ईमान का आख़िरी दर्जा और सबसे कमज़ोर अमल दिल से इंकार और उसको बुरा समझना और उसके ज़वाल के लिए अपनी क़ल्बी तवज्जोह और दुआ की ताक़त का इस्तेमाल करना है, उसी तरह किसी मारूफ़ के मुक़ाबले में मोमिन की हमीयत और ईमान व आखिरी तक़ाज़ा पसन्दीदगी और मुहब्बत और उसके फ़रोग़ में क़ल्बी तवज्जोह और दुआ की ताक़त का ख़र्च करना है।

2. तब्लीग़ी जमाअत के मौजूदा अमीर।

5. अगर इशराफ़े नफ़्स से महफ़ूज़ हो और दावत या हदिया पेश करने के बारे में मुहब्बत और काम की हुरमत व ताज़ीम का यक़ीन या गुमान का ग़लबा हो, तो उसकी दावत या हदिए को मस्कनत और तवाज़ो के साथ क़ुबूल किया जाए।

6. अल्लाह जल्ल जलालुहू की मुहब्बत के बाद सब आमाल से और सब नेमतों से अफ़ज़ल नेमत मुस्लिम-मुहब्बत है।

निज़ामुद्दीन

6 अप्रैल 1980 ई०

बख़िदमत आली उम्दतुल आमाल वल अमानी मुकर्रम व मोहतरम हज़रत सैयद साहब दा-म मज्दुकुम!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

इससे पहले गरामी नामा आली शरफ़ सुदूर लाकर बहुत दिनों तक अपने लिए आख़िरत का वसीला समझते हुए उसकी हिफ़ाज़त करता रहा और बार-बार अपनी आंखों और दिल को तसल्ली देता रहा। इसके मुताल्लिक़ मुझे मज़्मून भी अच्छे-ख़ासे काफ़ी लिखने थे और मज़्मून के काफ़ी होने ही ने देर लगाई, मैं ख़ुद लिख नहीं सकता[1] और दिल की बात अदा करने के क़ाबिल लिखने वाला हर वक़्त मिलता नहीं, मुस्तक़िल ख़त व किताबत का मेरे पास कोई नज़्म नहीं। आखिरकार अब दस पन्द्रह दिन से दिखलवा रहा हूं। वह ख़त इस ज़माने की राहे रुश्द की तरह ऐसा गुम हुआ कि पता ही नहीं चलता और मुझे सरसरी तौर पर भी उसका मज़्मून ज़ेहन में नहीं कि अपनी याद से उस पर कुछ लिख दूं।

मगर यह बन्दा-ए-नाचीज़ उसके लिए बे-इरादा गुम हो जाने को अल्लाह की जानिब से समझता है, क्योंकि इसमें शक नहीं कि इस वक़्त वबाई मरज़ जो आम है, वह क़ौल तक़रीरन या तहरीरन की मिक़्दार से ज़्यादती है और वबा आम जो होती है, उससे कोई ख़ाली नहीं होतौ, वह ज़हरीला माद्दा कम व बेश हर एक में होता है, अल्लाह ने अपनी रहमत से उससे महफ़ूज़ फ़रमाया।

1. मौलना ने वफ़ात से कई साल पहले अपने क़लम से लिखना छोड़ रखा था, ख़ुद मज़्मून अपनी ज़बान से इर्शाद फ़रमाते, दूसरा नक़ल कर लेता।

अल्लाह जल्ल जलालुहू की अज़ली सुन्नत में जो नाक़ाबिले तब्दील और ग़ैर लाइक़े तहवील है हिदायत के साथ वाबिस्ता है, सो जोह्द करते-करते जो चीज़ तबियत पर मुन्कशिफ़ हो, वह तो तबियत की नुन्शरह करने वाली हक़ीक़त, इल्म को खोलने वाली हक़ीक़ी तमानियत और ईमान को ज़ौक़ का जायज़ा चखाने वाली और दिल व दिमाग़ को किसी नाक़ाबिले इज़्हार कैफ़ियत से मुतकय्यफ़ और हक़ीक़त आशना करने वाली बात है और जो सच्ची और वाक़ई बात बग़ैर जोह्द, सिर्फ़ तक़रीर और तहरीर से पैदा हुई हो, वह महज़ ज़ाम का पैदा करने वाला मज़्मून और हक़ीक़त का हिजाब (जिसको बुज़ुर्गों ने 'अल इल्मुल हिजाबुल अकबर' लिखा है) राहे मौला में एक सद्दे सिकन्दरी है, तो शायद वह तहरीर ऐसी ही होती। बिला इरादा जो चीज़ मौला की तरफ़ से पेश आए, वह हमारी सवाबदीद के ख़िलाफ़ हो तो हुआ करे, क़तअन वही ठीक है। बहरहाल इस वक़्त गरामी नामा के बारे में कोई मज़्मून ज़ेहन में नहीं जो लिखूं, अलबत्ता इतना ज़ेहन में है कि कुछ मज़ामीन थे ज़रूर, ख़ैर, अल-ख़ैरु फ़ीमा व-क़-अ

बहरहाल इस वक़्त मुझे इन कुछ बातों के बारे में लिखना है—

1. जयपुर का सफ़र 2. आपका मौजूदा गरामीनामा, 3. अन्नदवा के बारे में जिसको इस वक़्त तलाश कराया, मगर न मिला, अपनी याद से लिखवाना, 4. इस वक़्त एक सफ़र सामने है कुछ उसके बारे में, 5. मेवात के मौजूदा जज़्बात की कैफ़ियत मुंकशिफ़ करते हुए उसमें दुआ और तवज्जोह और हिम्मत और मश्विरा की दरख़्वास्त।

1. जयपुर का सफ़र— इस सफ़र में जैसा कि आदते इलाहिया हमेशा से इस सफ़र के उठने पर जारी है, अन्दरूनी हालत तो यह रही जो तहरीर और तक़रीर में नहीं आ सकती कि अपनी हैसियत, अपनी ताक़त और अपनी अह्लियत से बिल्कुल अलग शरीअत, तरीक़त, हक़ीक़त, गोया आंखों के सामने थीं और ग़ैबी मदद का ज़हूर और इलाही रहमत का आना, ऐसा महसूस होता था जैसे हिस्सियात महसूस हुआ करती हैं। ज़ाहिरी हालत यह थी कि बीसों-बीसों कोस से चारों तरफ़ हर-हर तबक़े के लोग ज़ौक़ लिए आ रहे थे और इसके ज़रूरी होने को तस्लीम करते थे और करने का इरादा लिए हुए वापस हुए और तीन

जगह, जिनमें से हर एक बड़ी है, तब्लीग़ी उमूर में कोशिश करने की एक मोहकम लब्बैक हो गई। (खुद टोडा मेम[1] में) जो स्टेट की तहसील है, हिन्डोन जो उस स्टेट की बहुत बड़ी जगह है, निज़ामत कहलाती है, क़रौली जो उससे मिली हुई एक मुस्तक़िल रियासत है और वहां किसी मज्मे का होना और कोई नई तहरीक लेकर जाना और हंगामी सूरत का रियासत में महसूस होना एक बड़ा जुर्म समझा जाता है, इन तीनों जगहों में तहरीक पर लब्बैक होना एक अजीब व ग़रीब बात है और दूर-दूर तक इसके असरात जाने की और किरनें पहुंचने की उम्मीदें हो गईं। इन लब्बैक कहने वाली जगहों में (अगर अल्लाह तआ़ला की ताईद शामिले हाल हो जाए और जो बीज इस वक़्त पड़ गया है, आप जैसे हिम्मत वाले लोगों की तवज्जोह और क़ुरबानियों से परवरिश पाने लग जाए) तो स्टेट जयपुर, टौंक, भोपाल, भरतपुर दूर-दूर जगहों में उनकी जड़ों का जम जाना एक साफ़ बात नज़र आ रही है, खुदा करे कि ठीक हो।

2. मेरी उम्मीदों और तमन्नाओं की वदीअत गाह, मोहतरम सलाला-ए-ख़ानदाने नुबूवत जनाब आली का मेहमानाने नुबूवत[2] को साथ लेकर इस काम के लिए मुबारक क़दम का उठाना जिस क़दर अज़ीम हैं, उसी क़दर उसकी वुक़अ़त और उसके बारे में वारिद शुदा अख़बार व आसार व आयात पर नज़र रखते हुए और उन पर यक़ीन की कोशिश करते हुए उनके आदाब की रियायत करने पर उसका मुंतज होना मौक़ूफ़ है।[3]

---

1. जयपुर स्टेट में टोडा मेम एक तहसील है, वहां काज़ी साहिबान का एक ख़ानदान आबाद है। इस ख़ानदान के बहुत से लोग मौलवी से बैअत का ताल्लुक़ रखते हैं। यह सफ़र इन्हीं लोगों की दावत पर शैखुल-हदीस मौलवी ज़करिया साहब और दूसरे उलेमा को साथ लेकर फ़रमाया था।

2. मौलना अरबी मदरसों के तलबा को, जो दीनी उलूम हासिल करने के लिए वतन छोड़ करके दीनी मदरसों में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़्वाने करम के मेहमान होते हैं 'मेहमानाने नुबूवत' के लक़ब से याद फ़रमाया करते थे।

3. यही ईमान व एहतिसाब है जो दीन की रूह और बातिन है और इसी से आमाल में क़ीमत, नूरानियत और रूहानियत पैदा होती है। तफ़्सील के लिए देखिए 'सवानेह' बाब शशुम और 'एक अहम दीनी दावत।'

मौलवी! एक बात अर्ज़ करता हूं जो मेरे मुंह से कहने की नहीं, मगर आपके सुनने की है, यानी आप तो इस क़ाबिल हैं कि उसको सुन लें, मगर मेरा गन्दा ज़ेहन इस क़ाबिल नहीं कि उसको बयान करे। मौलवी! यह तो एक ज़ाहिरी बात है कि 'लौलल ऐतबारातु ल-ब-त-लतिल हिकमतु' और शरीअत में इसको इन लफ़्ज़ों में ताबीर करते हैं, 'इन्नमल आमालु बिन्नीयातु' सो मेरे हज़रत! इंसान में खुद अपनी ज़ात से जितने एतबारात हैं, सब उसके घाटे के और उसकी लानत के और सिफ़ली होने के हैं, एक एतबार के अलावा अल्लाह का ख़लीफ़ा होने की हैसियत से जो उस की क़ीमत है, सिर्फ़ इस एतबार से तो यह क़ीमती है, बाक़ी तमाम पहलू इसके मलऊन और सिफ़ली होने के हैं और उसकी गन्दगी और बेकारी के हैं, सो ज़ाहिर है कि हर आदमी के जो आमाल हैं उसका मंबा (स्रोत) उसकी ज़ात है। जब खुद ज़ात की यह कैफ़ियत है तो उससे सादिर होने वाले आमाल की भी यही कैफ़ियत है। आमाल अपनी ज़ात से कोई क़ीमत नहीं रखते, एक बेकार चीज़ है, इनके अन्दर जो क़ीमत आती है, वह अल्लाह के हुक्म के इम्तिसाल के ज़रिए उस ज़ाते आली की वाबस्तगी से आती है, तो जिस क़दर वाबस्तगी की वजहों पर क़ादिर होगा, उन आमाल की असली क़द्र व क़ीमत उसी क़दर है, तो आमाल में क़द्र व क़ीमत पैदा करने वाली असल स्कीम उनके बारे में आए हुए अहकाम को एक रस्सी समझ कर उस रस्सी से लटक कर अल्लाह तक पहुंचने की कोशिश करना है।

असल में ग़ौर किया जाए तो न आमाल मक़सूद, न उनसे मुताल्लिक़ अवामिर का ध्यान मक़सूद, बल्कि उन आमाल के मैदानों में अल्लाह तआला तक पहुंचने के लिए अवामिर की रस्सियां पड़ी हुई हैं, उन मैदानों में जाकर इन रस्सियों को पकड़ कर (यानी अल्लाह के हुक्म होने के ध्यान को मज़बूत करके) अल्लाह तआला तक पहुंचाने की कोशिश में लग जाना असल मक़सूद है और शरीअत बनाने वाले ने यही तफ़्सील रखी है)

इसलिए निकलने के ज़माने में निकलने वालों को जो इनमें गए हैं, उनकी हिदायत से बिल्कुल नज़र बन्द कर लेनी चाहिए, इसी लिए अल्लाह ने हिदायत

को अपने से वाबिस्ता कर रखा है, ताकि कोशिश में पड़ने वाला इस ख़ामख़ाह के इरादे में पड़कर कर अपनी कोशिश को बेकार न कर ले और नाक़िस न कर दे।

कोशिश करने वाले को कोशिश करते वक़्त अपने माव-ज-ब में नज़र को मख़्सूस रखनी और अपने क़ल्ब को हुक्म देने वालों की अज़्मत में मशग़ूल रखना, अपनी क़ुरबानी को खुलूस के साथ कामिल करने के ध्यान में मक़्सूर रखना, निकलने के ज़माने में खुसूसन ज़िक्र और तख़लिया की फ़िक्र में साअतों को गुज़ारने में मशग़ूल रखना, बस ये निकलने वालों की ज़िम्मेदारियों हैं और फ़िक्र कोई बड़ी चीज़ नहीं है, तंहाइयों में बैठकर अपने नफ़्स से यह कहना कि क़तअन यह चीज़ अल्लाह को राज़ी करने वाली है और मौत जो यक़ीनन एक आने वाला वक़्त है, तेरी नफ़्सानी ज़िंदगी को क़तअन दुरुस्त करने वाली है और 'अद्दाल्लु अलल ख़ैरिकफ़ाअिलिही' को सच समझ कर इस निकलने की वजह से जितनी नेकियां वजूद में आएं या आ सकने वाली हों इन सबको नया करके अल्लाह की खुश्नूदी को उसके साथ वाबिस्ता होने पर नफ़्स को ख़िताब करके तकल्लुफ़ के साथ यक़ीन करना, बस इसी का नाम फ़िक्र है।

साथ ही आदमी के लिए बहुत ज़्यादा ज़रूरी है कि अल्लाह तआला की खुश्नूदी की भी क़ीमत कर ले कि उसने क्या धरी है, 'रिज़्वानुम मिनल्लाहि अक्बर' इन चीज़ों को तंहाइयों में मुस्तक़िल बैठकर दिल में जगह दे और काम करने के वक़्त भी इस ध्यान पर जमे रहने की कोशिश में कमी न करे।

मक्तब के बारे में जैसी कशमकश की मैं राय रखता हूं कि इसको बग़ैर तफ़्सीली गुफ़्तगू और सोहबत के ज़ुबान से निकालने को मेरा जी नहीं चाहता, मेरी दिली रग़बत व ख़्वाहिश यह है कि इसमें जल्दी न की जाए, क्योंकि मक्तब जिस क़दर जज़्बात से चल सकती है, वह अभी बहुत दूर है। अभी एक लम्बी मुद्दत तक सिर्फ़ इसी तब्लीग़ पर इक़्तिसार करके इस्तिक़ामत और तरक़्क़ी फ़रमाते रहें। उमूमी हस्तेदाद जब पैदा हो जाए और इस्लाम की रग़बत पर कम से कम कुछ तरक़्क़ी करने लगें, तो अल्लाह चाहे थोड़ी कोशिश में बहुत से

मदारिस हो सकेंगे।[1] बहरहाल मेरी राय में अभी वक़्त से पहले की बात है। जल्द बाज़ी करना तो शैतानी काम है।

हज़रते आली ने जो कुछ भी तर्कीब अपने तब्लीग़ के लिए निकलने की लिखी है, यह तफ़्सीली तौर पर कुछ रायज़दनी नहीं है, सिर्फ़ इस बारे में दो बातें अर्ज़ करनी हैं और यह कि इस मामले में असली चीज़ जो है, वह कैफ़ियतें हैं। कैफ़ियतों के लिए तहरीर या कोई तक़रीर ज़ाबित नहीं हो सकती। जो चीज़ अल्लाह के इरादे ने सोहबत से वाबस्ता की है, वह इसके बग़ैर नहीं हो सकती। फ़ितरत के ख़िलाफ़ हो नहीं सकता, जिस बारे में जो इलाही सुन्नत जारी हो चुकी वह उसी तरह से होगी।

दूसरे यह कि मेरा ज़मीर गवाही दे रहा है कि यह काम असल में आप जैसे अह्ल और नुबूवत के ख़ानदान ही के करने का है, आपके दिलों से जिस क़दर इसके लिए शरहे सद्र के साथ इस्तिक़ामत ज़ुहूर में आती चली आएगी, उसी क़दर गोया उसके दुरुस्त होने की उम्मीदें सही होती चली जाएंगी। जब तक आप जैसे खुले दिल इसमें इस्तिक़ामत को नहीं पहुंचेंगे, नाअह्लों में उसकी नाकामी यक़ीनी है।

इज़ा वुस्सिलल अमरु इला ग़ैरि अह्लिही फ़ंतज़िरिस्साअत

---

1. तब्लीग़ी काम के शुरू में जैसा आमतौर से इस सिलसिले में होता है, क़ुदरती तौर पर मकातिब के क़ियाम की ज़रूरत महसूस हुई और इसकी ख़्वाहिश पैदा हुई, मौलवी की राय मालूम की गई, तो उन्होंने ऊपर वाला जवाब दिया। मौलवी की यह राय बड़ी गहरी दीनी बसीरत और वसीअ तजुर्बे पर मब्नी है, मुख़्तसर यह कि मकातिब व मदारिसे इस्लाममिया का वजूद व क़ियाम, दीनी जज़्बात व शौक़ व क़द्र और उमूमी तलब व एहसास के बग़ैर सही नहीं। इस इस्तेदादे उमूमी से पहले जब मकातिब व मदारिस क़ायम हो जाएंगे तो क़ायम न रह सकेंगे, इसलिए कि क़ौम न उनकी ज़रूरत का एहसास रखती है, न उनकी ख़िदमत का उसमें जज़्बा है, या उनकी उम्मीद के मुताबिक़ इस्लाही नतीजे न निकल सकेंगे, इसलिए कि उनके हज़्म की उसमें हस्तदोद नहीं, दीनी जज़बात और उमूमी तलब व एहसास (जोहर तालीमी इस्लाही दीनीयात की ज़मीन है) के पैदा करने के लिए उमूमी तब्लीग़ व दावत के ज़रिए पहले ईमान पैदा करने की ज़रूरत है। नबियों के इस्लाही तरीक़ों व तालीम की यही तर्तीब है। तफ़्सील के लिए देखिए ख़ाकसार राक़िम का मक़ाला 'जामिया मिल्लिया' 'अहदे नबवी की तालीमी ख़ुसूसियतें।

जनाब का और बिरादरे मोहतरम[1] और सबसे बढ़कर हज़रते आलिया मख़्दूमा मोहतरमा जनाबा 'वालिदा[2] साहबा का उसको कुबूलियत की नज़र से तवज्जोह फ़रमाना यह जनाब की ख़ूबी-ए-शहादत और तबियत की मौज़ूनी की ख़बर जैसा दे रहा है और मुझ नाचीज़ तहीदस्त के लिए एक मुबारक दामन तले आने की झलक दिखला रहा है, उसी क़दर इस काम के लिए अपने मादन में पहुंचने की उम्मीद दिलाकर दुनिया में कुछ क़ियाम करने और जड़ पकड़ने की उम्मीद दिला रहा है, 'अल्लाहुम-मस्नअ बिना मा अन-त अह्लुहू व ला तस्नअ़ बिना मा नहनु अह्लुहू' हज़रत वालिदा साहिबा को मेरा सलाम भी तहरीर फ़रमा दें और दुआ के लिए दरख़्वास्त फ़रमा दें।

3. अन्नदवा[3] रिसाला सामने न होने का क़लक़ है। मज़्मून कुछ ज़्यादा मुझको याद नहीं, सिर्फ़ इतना याद है कि कुछ बातों के बारे में मैंने कुछ लिखने को सोचा था, अलबत्ता नसरुल्लाह खां साहब[4] मौलवी नहीं हैं, बल्कि पटवारी हैं। पटवारी गिरी में सारी ज़िन्दगी गुज़ार कर डेढ़-दो वर्ष से तब्लीग़ में लगे हुए हैं। सिर्फ़ तब्लीग़ की बरकत से जो कुछ अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया है, वह उनको हासिल है। मौलवियत के लफ़्ज़ को बहुत इज़्ज़त के साथ सही जगह पर इस्तेमाल करना मुनासिब है। नाचीज़ के बारे में जनाब मश्विरा क़ुबूल फ़रमा लें तो दिली तमन्ना है कि मामूली नाम से ज़्यादा किसी लफ़्ज़ का इतलाक़ अलफ़ाज़

---

1. मक्तूब इलैहि के बड़े भाई मोहतरम व मुरब्बी मौलवी डाक्टर सैयद अब्दुल अली साहब नाज़िम नदवतुल उलेमा, जिनको अल्लाह ने तब्लीग़ से फ़ितरी व सही मुनासबत बख़्शी है और जिनकी सरपरस्ती में इस आजिज़ और इसके साथियों ने काम करना शुरू किया था।

2. वालिदा माजिदा (ख़ैरुन्निसा साहिबा) ने उन्हीं दिनों इस काम के शुरू करने पर अपनी बेहद ख़ुशी ज़ाहिर फ़रमाई थी और मसर्रत का ख़त लिखा था। ख़ाकसार ने अपने ख़त में इसका भी तज़्किरा किया था।

3. अन्नदवा के बजाए अल-फ़ुरक़ान

4. मेवात के मेरे पहले सफ़र के साथी व रहनुमा दो साहब थे। एक मुंशी नसरुल्लाह ख़ान साहब, दूसरे मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर साहब (मरहूम, साकिन फ़ीरोज़पुर नमक) मैंने अल-फ़ुरक़ान के मज़्मून 'एक हफ़्ता, दीनी मरकज़ों में' में मुंशी साहब को उनकी दीनी वाक़फ़ियत और शरई शक्ल व सूरत की वजह से मौलवी के लफ़्ज़ से याद दिया था, मौलवी ने उसकी तस्हीह फ़रमाई।

की बेक़द्री है।

अन्नदवा[1] में तहरीर है कि वह किसी की दावत क़ुबूल नहीं करते, यह बहुत ज़्यादा ग़लत है। इस बारे में एक तफ़्सील है, वह यह कि वह अशराफ़े नफ़्स से महफ़ूज़ हों और दावत या पेश करने वाले पर मुहब्बत और काम की हुर्मत और ताज़ीम का विजदान से यक़ीन हो या गुमान का ग़लबा हो, तो आपको फ़क़ीर-मिस्कीन ज़ाहिर करते हुए बड़ी तवाज़ो के साथ क़ुबूल करें। ऐसे को रद्द करना हराम है। 'तहादों' के फ़रमाने आली वाजिबुल इम्तिसाल का इम्तिसाल लाज़मी है।

अल्लाह जल्ल जलालुहू की मुहब्बत के बाद जो सब आमाल और सब नेमतों से ज़्यादा फ़ाज़िल (फ़ज़्ल वाली) नेमत है, वह हुब्बे मुस्लिम (मुसलमान की मुहब्बत) है। इस दावत और हदिए को क़ुबूल करने में इस हुब्बे मुस्लिम की अज़ीम दौलत का हासिल करना है। इस तफ़्सील के साथ जो विजदान और तजुर्बा फ़िक्री क़ुव्वत के इस्तेमाल करने से गवाही देगा, उसका हदिया, जो नज्र की सूरत हो या दावत हो या किसी और तरह हो, क़ुबूल करना ज़रूरी फ़रीज़ा और नेमते ग़ैर मुतरक़्क़बा है। बन्दा नाचीज़ के नज़दीक हलाल कमाई और ग़नीमत में हासिल किए हुए माल से ज़्यादा बाबरकत और बा अन्वार और बरकात से पुर हासिल करने का यह ज़रिया है और मुझे अन्नदवा का मज़्मून याद नहीं, ख़ुद अन्नदवा मौजूद नहीं। (दोनों जगह अन्नदवा से मुराद अल-फ़ुरक़ान समझा जाए।)

4. करनाल से आने के बाद अब तक वहां तब्लीग़ी सिलसिला कुछ न कुछ होता चला आ रहा है यानी तक़रीबन नौ जमाअतें, जिनमें हर एक दस-दस पर मुश्तमिल है, वह क़ायम हैं और काम व बेश काम कर रही हैं। इसके तर व ताज़ा करने के लिए हज़रत मख़्दूमी जनाब हाफ़िज़ फ़ख़रुद्दीन साहब[2] और मेरे अज़ीज़

---

1. सही 'अल-फ़ुरक़ान'

2. जनाब हाफ़िज़ फ़ख़रुद्दीन साहब पानीपती, मुक़ीम दिल्ली ख़लीफ़ा हज़रत मौलवी खलील अहमद साहब सहारनपुरी,

मोहतरम मौलवी एह्तशामुल हसन साहब[1] ने इरादा फ़रमाया था, जिसकी ख़बर किसी तरह करनाल पहुंचने की वजह से वहां के नवाब साहब ने आस-पास के दूसरे नवाबों को जमा करके इस चीज़ की कोशिश करने का उनके पहुंचने पर इरादा कर लिया, साथ ही वहां के नवाब साहिबान और दूसरे लोग ग़लती से उनके जाने की ख़बर को इस नाचीज़ बन्दे की आमद समझे, जिस पर वहां से तार आया और एक ख़त कि हफ़्ता (सनीचर) के बजाए दो शंबे (सोमवार) को वह इज्तिमा हो सकेगा, उस दिन आएं, इसलिए इस तार और ख़त से सबकी राय हुई कि बन्दा नाचीज़ भी इन मुबारक हस्तियों के साथ जाने का इरादा कर ले।

चुनांचे दोशंबा के दिन वहां जाना है, इसलिए जनाब खुद भी और जिस को जनाब से मुम्किन हो, मक्तूबात[2] के बाद और सेहर गाहियों में इस सुन्नत को दुनिया में जड़ पकड़े जाने की ओर ख़ल्क़ अल्लाह की इस राह में क़ुरबानियों की सुन्नते मुस्तमिर्रा पड़ जाने के लिए दुआओं में मश्गूल रहें और रखें।

5. इस वक़्त मेवात में आम ख़बरें और आवाज़ें फ़स्ल के बाद एहतिमाम के साथ तब्लीग़ के लिए निकलने की गर्मजोशी के साथ आ रही हैं और फैल रही हैं। ज़ाहिरी तौर पर तो अन्दाज़ा हज़ारों के निकलने का है, साथ ही ज़ाहिर में सूरतें तमाम मुल्क के अह्ले हल्ल व अक़्द और ताक़त के मालिकों के इस तरीक़े को ज़िंदगी का हिस्सा बना लेने की नज़र आ रही हैं, सो अब दर्ख़्वास्त यह है कि एक यह कि ये उम्मीदें जितनी हमारे विजदान की ताक़त है, इससे कई गुना ज़्यादा होकर वजूद में आएं और दूसरे यह कि इतनी जिहालत के भरे हुए लोगों का निकल ख़ड़ा होना (बावजूद बहुत मुश्किल होने के) और इस ज़्यादा तायदाद से खड़ा होना हरगिज़ इतना मुश्किल नहीं जिस क़दर निकल चुकने के बाद जिस ग़रज़ से निकले हैं, इस ग़रज़ का काफ़ी इंतिज़ाम होकर अपने काम में सही तौर पर लगे रहने का इंतिज़ाम हो जाना और खुद इस लगने का जो मक़्सूद है कि अल्लाह के साथ ताल्लुक़ और शरीअत का फैलना, वह भी हक़ तआला आसानी

---

1. मौलवी एहतशामुल हसन साहब कांधलवी, लेखक 'मुसलमानों की मौजूदा पस्ती का वाहिद इलाज' 'इस्लाही इंक़लाब' वग़ैरह।

2. फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद

से जहूर में लाएं। इसमें आप हमारे साथ क्या मदद कर सकेंगे? फ़क़त वस्सलाम

बन्दा ना चीज़ मुहम्मद इलयास : अज़ निज़ामुद्दीन

बक़लम इकरामुल हसन[1]

(3)

इस ख़त के फ़ायदे :

(1) ख़ूबी-ए-ज़न अल्लाह के यहां अजीब मक़्बूलियत रखता है और आसानी से हासिल होने वाला क़ीमती सरमाया है, जिससे अक्सर लोग महरूम हैं। (2) दीन की बातों को फैलाने के लिए मुल्क-मुल्क फिरना इस तब्लीग़ व दावत का जिस्म व माद्दा है। (3) अल्लाह के हुक्म पर जान देने का रिवाज डालना इस दावत की रूह है। (4) ख़ुल्क़ की मश्क़ और उसका तरीक़ा, (5) तंहाई और मज्मे में पढ़ने के अलग-अलग ख़वास व असरात हैं। (6) मुकल्लफ़, चाहे मर्द हो या औरत, फ़राइज़ के तर्क से मूरिदे लानत व ग़ज़बे इलाही हो रहा है (7) तब्लीग़ में अपना रुख़ सिर्फ़ मुकल्लफ़ की तरफ़ रखना चाहिए, अलबत्ता बच्चों को आला बनाना और बक़ा की उम्मीद से लगाए रखना अम्रे मुस्तहसन है, (8) इम्तिसाले अम्रे इलाही की हक़ीक़त यह है कि हुक्म का यक़ीन अज़्मते वलवला को दबा दे। (9) दीन की हर चीज़ का मक़्सूद दुआ की क़ूवत का बढ़ाना है। (10) जिस्मानी मश्ग़ूलियत के वक़्त क़ल्ब का क़ुव्वत के साथ दुआ में मश्ग़ूल होना अफ़ज़ल है वरना ख़ाली औक़ात दुआ से मामूर रखे गए।

786

अज़ निज़ामुद्दीन

दिल्ली

मखदूम व मोहतरम सैयदी व सैयदे आलम दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मुकर्रमतनामा—ए-सामी मूजिबे इज़्ज़त अफ़ज़ाई व शरफ़े दारैन हुआ। अल्लाह जल्ल जलालुहू व अम-म-नवालुहू इस ख़ुलूस को मक़बूल और मंसूर फ़रमाएं और

1. मौलवी इनामुल हसन के वालिद मरहूम

रोज़ अफ़ज़ूं रखें। हज़रते आली ने जैसा कि मेरे टूटे-फूटे लफ़्ज़ों को इज़्ज़त बख़्शी और इकराम फ़रमाया, हक़ तआला अपने यहां की मक़्बूलियत और इज़्ज़त व इकराम से जज़ाए जज़ील फ़रमाएं और इस ज़ब्दा-ए-ख़ानदाने नुबूवत की इस मुहब्बत को मेरे लिए सरमाया-ए-दारैन फ़रमावें।

ख़ूबी-ए-ज़न अल्लाह के यहां कुछ बे-तरह और बे-नज़ीर मक़्बूलियत रखता और अजीब असरात व बरकात व अनवारात रखता है, यह अजीब सह्ल हुसूल और क़ीमती सरमाया मोमिनों के लिए है, जिससे अक्सर लोग महरूम हैं। मुझ ज़ईफ़ के लिए आपके इस हुस्ने ज़न को दारैन में कारामद फ़रमावें जो बेहतरीन सरमाया है।

अन्दर से तबियत तलाश में है कि यह बात मालूम हो कि किस चीज़ की तहरीक है, इतनी मुख़्तसर हमेशा के लिए मारूज़ है कि असल जो तब्लीग़ है, वह सिर्फ़ दो बातों की है और बाक़ी जो हैं, उसकी सूरत और शक्ल बिठाने के लिए हैं, तो वे दो चीज़ें हैं, एक माद्दी है और एक रूहानी है। माद्दी से मुराद जवारेह से ताल्लुक़ रखने वाली है, सो वह तो यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई बातों को फैलाने के लिए मुल्क ब मुल्क और अक़्लीम ब अक़्लीम जमाअतें बना कर फिरने की सुन्नत को ज़िंदा करके फ़रोग़ देना और मालदार बनाना है।

रूहानी से मुराद जज़्बात की तब्लीग़ यानी हक़ तआला के हुक्म पर जान देने का रिवाज डालना, जिसको इस आयत में इर्शाद फ़रमाया है—

"फ़ला वरब्बि-क ला यूमिनू-न हत्ता हक्किमा-क फ़ीमा श-ज-र बैनहुम सुम-म ला यजिदु फ़ी अन्फ़ुसिहिम ह-र जम्मिम्मा क़ज़ै-त व युसल्लिमू तस्लीमा"

इसकी तश्कील के तौर पर इन कुछ चीज़ों के छांट रखा है—

1. एक, कलिमा तैयबा जो कि ख़ुदा की ख़ुदाई का इक़रारनामा है कि अल्लाह के हुक्म पर जान देने के अलावा हक़ीक़त में कोई मश्ग़ला हमारा नहीं होगा, उसके लफ़्ज़ों की तस्हीह के बाद नमाज़ के अन्दर की चीज़ों की तस्हीह करने, फिर बाक़ी उलूम सीखने की तरफ़ उस वक़्त को मश्ग़ूल कर लेना।

2. दूसरे, नमाज़ों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जैसी नमाज़

बनाने की कोशिश में लगा रखना[1] जब तक वैसी न बना ले, अपने को जाहिल शुमार करना।

3. तीसरे, तीन वक़्तों को, सुबह व शाम और कुछ हिस्सा रात का अपनी हैसियत के मुनासिब इन दो चीज़ों (इल्म हासिल करना और ज़िक्र) में मश्गूल रखना, तीन चीज़ें ये हो गयीं।

4. चौथे, इन चीज़ों के फैलाने के लिए असल मुहम्मदी फ़रीज़ा समझकर निकलना, यानी मुल्क ब मुल्क रिवाज देना।

5. पांचवें, इस फिरने में खुल्क़ की मश्क़ करने की नीयत रखना, जिसमें अपने मा अलैहि की अदायगी की सरगर्मी हो, चाहे ख़ालिक़ की तरफ़ से हो या ख़ल्क़ के साथ मुताल्लिक़ हो[2], क्योंकि हर आदमी से अपने ही मुताल्लिक़ सवाल होगा।

इल्म के लिए मेरा जी चाहता है कि तब्लीग़ के मुहकमे से निसाब मुक़र्रर किया जाए, इस सिलसिले के तरक़्क़ी पकड़ जाने पर आप जैसे अह्ले इल्म के मश्विरे की ज़रूरत होगी, बिलफ़ेल मैं ने नारसा तबियत से पांच किताबें तज्वीज़ कर रखी हैं—

1. जज़ाउल आमाल, 2. राहेनिजात, 3. फ़ज़ाइले नमाज़, 4. हिकायाते सहाबा, 5. चहल हदीस, (मौलवी ज़करिया शेखुल हदीस साहब) इनको तंहाई में देखना और मज्मे में सुनाना, दोनों मुस्तक़िल जुज़्व हैं। सिर्फ़ तंहाई में देखना, मज्मा में सुनाने की बरकतों को शामिल नहीं हो सकता और मज्मा में सुनाना तंहाई के अन्वारात को हावी नहीं हो सकता।

बच्चों से तब्लीग़ शुरू में करानी अगर सिर्फ़ आला होने की ग़रज़ से हो तो कोई हरज नहीं, लेकिन अगर सच्चे दर्दे दिल से महसूस किया जाए, तो मुकल्लफ़

---

1. हदीस शरीफ़ में है 'सल्लू कमा रऐतुमूनी उसल्ली', फ़ुक़हा और मुहद्दिसीन किराम अगरचे इससे ज़ाहिरी हैअत में मुशाबहत मुराद लेते हैं, लेकिन अगर सूफ़िया और आरिफ़ीन ख़ुशूअ और कैफ़ियते एहसानी भी मुराद लें तो क्या हरज है।

2. यही इकरामे मुस्लिम है और इसकी रूह यह है कि आदमी की नज़र अपने फ़र्ज़ पर हो और वह कलिमा गो की ताज़ीम और ईमान की हुर्मत है, सारे फ़िल्ने की जड़ दूसरे के फ़र्ज़ों पर नज़र और अपने फ़र्ज़ से सर्फ़े नज़र है।

चाहे मर्द हो, चाहे औरत, अपने फ़र्ज़ों को छोड़ने से लानत और अल्लाह के ग़ज़ब का मुस्तहिक़ बन रहा है और मौत की तक़्दीर से जो होगा, वह महसूस करने के क़ाबिल है तो ज़रूरी है। साथ ही इस हालत में मौत आ जाने पर जो ख़तरे यक़ीनी हैं, वे नज़रों में रखने के क़ाबिल हैं।

इसी तरह मुकल्लफ़ फ़र्ज़ों की बजावरी करे, तो चूंकि ख़िताबात उसकी तरफ़ वारिद हैं तो वह शरफ़े इम्तिसाल की इज़्ज़त व शराफ़त व समरात से जो कि बड़ी-बड़ी रहमत और नेमते जलीला हैं (मुतमुत्ता होगा) और मौत की तक़दीर से नजात, न सिर्फ़ नजात, बल्कि जन्नत जैसी उख़रवी नेमतों के दिला-देने का एहसान करना है, इसलिए अपना रुख़ सिर्फ़ मुकल्लफ़ की तरफ़ रखना चाहिए, अलबत्ता बच्चों को आला बनाना और बक़ा की उम्मीद से लगाए रखना एक अच्छा काम है।[1]

मौलवी! जनाब आली ने जज़्बा व वलवला न होने का तज़्किरा फ़रमाया है[2] और मुझे इस पर बड़ा रश्क है, मोमिन के लिए अल्लाह के इम्तिसाले अम्र की असलियत यह है कि हुक्म के यक़ीन और अज़्मत से इस क़दर मातहत हो कि वह वलवले को दबा दे। वलवला तबियत से नाशी होता है। यह अगर हो तो यह हुब्बे तबई हुई और जब हुक्म की अज़्मत और फ़र्ज़ीयत के एहसास से हो, तो यह हुब्बे अक़ली और हुब्बे ईमानी है। अगर कभी वलवला और शौक़ आ जाए, तो यह मुस्तक़िल अतीया क़द्र के क़ाबिल है, लेकिन असल में इल्तिफ़ात के क़ाबिल नहीं। इनशाअल्लाह यह सूरत इस्तिक़ामत की ज़्यादा उम्मीद दिलाने वाली है। हक़ तआला इस्तिक़ामत की दौलत (जैसा कि नुबूवत के ख़ानदान के शायाने शान है) से सरफ़राज़ फ़रमा दे।

रहनुमाई और दुआ की बात यह है कि मश्विरा दे देना तो मेरी सआदत है,

---

1. तब्लीग़ी काम के शुरू में कुछ महुल्लों में बच्चों से काम शुरू किया गया था, उसी की तरफ़ इशारा है।

2. ख़ाकसार ने अर्ज़ किया था कि काम तो हो रहा है, मगर जैसा शौक़ व वलवला और काम का जज़्बा होना चाहिए, वह नापेद है, मौलवी के इस मक्तूबे गरामी से बड़ी तस्कीन हुई और हिम्मत बंधी।

वरना इस काम के लिए ख़ुलूस के साथ ख़डे होने वाले के लिए ऐसी ताकीदी क़स्मों के साथ वायदे हैं कि ज़िक्र नहीं किए जा सकते, इनको पेशे नज़र रखने के ज़रिया-ए-यक़ीन में कोशिश फ़रमा दें।

दुआ के लिए जनाब इर्शाद फ़रमाते हैं, दुआ करने वाले के लिए इसमें शिर्कत की सआदत की बात है, वरना दुआ रहमत की तलब के लिए होती है। यह काम ख़ुद जालिबे रहमत है। यह बात हमेशा पेशे नज़र रहे ओर कभी नज़र ख़ता न करे कि मक़्सूद दीन की हर चीज़ का महज़ दुआ की क़ूवत को बढ़ाना है। इसमें हर वक़्त बहुत ही ज़्यादा सई की जाए।

अगर जवारेह के काम में मश्ग़ूल होने के वक़्त क़ल्ब क़ूवत के साथ दुआ में मश्ग़ूल रहने की बरदाश्त और मसरूफ़ियत और बख़ूबी मश्ग़ूलियत कर सके, तो इसमें बहुत कोशिश फ़रमा दें, वरना इस काम के लिए मक्तूबात और सेहर और इस अम्र के लिए निकलने के अतराफ़ और दर्मियान में ख़ाली औक़ात दुआ से आबाद रखें और हम ख़ादिमों को भी याद रखें, बन्दा नाचीज़ इसका इन्तिज़ार कर रहा है कि जनाब के ख़ादिम अपने तब्लीग़ी गांवों में इन बातों को फैलाने के लिए दूसरे गांवों में निकलने की हिम्मत और इस्तिक़लाल से दावत दें और इसमें पूरी हिम्मत और इस्तिक़लाल को कार फ़रमा करें, ख़ासतौर से रायबरेली का वह गांव जिसमें असरात तब्लीग़ के अल्लाह ने पैदा फ़रमा दिए हैं, इनको बाहर निकलने की दावत ज़्यादा इस्तिक़लाल से दें। यहां मेवातियों की जमाअत करनाल में बहुत-सी जगहों में तब्लीग़ करती हुई पहुंची, तीन चार दिन ठहरी, करनाल की हवा गोया कि बिल्कुल बदल गई, दस-दस की पांच-छः जमाअतें निकल चुकीं, और की ख़बरें आ रही हैं, वहां के नवाब साहबान भी कोशिश में शरीक हैं।

दूसरी ताज़ा ख़बर मेवात के बारे में बड़ी ख़ुशी की यह है कि उस वक़्त की तहरीक ज़्यादातर आम लोगों और ग़रीबों के तबक़े में थी। अब बहुत कुछ उम्मीदें वहां के अह्ले हल व अक़्द के खड़े हो जाने की हो रही है। दुआ व हिम्मत से मदद फ़रमादें।

मेरी भी तमन्ना है, ख़ुदा करे मेवात से जमाअतें इस्तिक़लाल के साथ

लंबे-लंबे और तवील-तवील ज़माने के लिए तैयार हो जाएं, तो दस बारह की जमाअत कुछ महीनों के लिए जनाब की निगरानी में काम करे। अल्लाह अपनी मेहरबानी की उम्मीदों से बहुत ज़्यादा अपने शायाने शान मदद फ़रमा दें। फ़क़त वस्सलाम

-30 अप्रैल 1940 ई०

(4)

इस मक्तूब के फ़वाइद—

(1) वसाइत और सहूलतें ज़ाती मशक़्क़त का बदल नहीं हो सकतीं, (2) जवारेह और क़ल्ब की शिकस्तगी नुज़ूले रहमत का सबब है। (3) किसी राह की ज़िल्लत को उठाए बग़ैर उसकी इज़्ज़त को पहुंचना आदत के तौर पर नहीं होता।

अज़ निजामुद्दीन

786

बआली ख़िदमते वाला दरजाते आली मंक़बत सलाला-ए ख़ानदाने नुबूवत अदामल्लाहु फ़ुयूज़कुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

गरामी नामा मिला और बड़े इन्तिज़ार के बाद पहुंचा। हालात से जो कुछ भी मसर्रत हो, वह क़रीने क़ियास है। बहुत से मामलों पर मज़्मून लिखने को जी चाहा, मगर तबियत रुक गई। अल-अजरु अला क़द्रिन्नुसुब, डाकियों की और वसाइत की दौड़ धूप हरगिज अपनी ज़ाती मशक़्क़त का बदल नहीं हो सकती।[1]

और आदाते ख़ुदावन्दीया आमतौर से अपनी दीन में जद्दोजेहद की मिक़्दार के साथ वाबस्ता हैं। आदमी किसी मक़्सद के लिए जितना अपने को ज़लील करता है और तक्लीफ़ों को झेलने के ज़रिए अपने हालात और जवारेह और क़ल्ब और क़ूवतों की शिकस्तगी और तअ़ब और इंकिसार को पहुंचता है, बस हक़ तआ़ला की रहमत के नुज़ूल का सबब होता है। 'अना अिन्दल मुन्कसिरति कुलूबुहुम वल्लज़ी-न जाहदू फ़ीना-ल-नह्दियन्नहुम सुबुलना०' किसी राह की ज़िल्लत उठाए बग़ैर उसकी इज़्ज़त को पहुंचना आदतन होता नहीं।

---

1. मक्तूब इलैहि ने मौलवी के गरामीनामों से अपने इस्तिफ़ादे का ज़िक्र करते हुए इसका इश्तियाक़ जाहिर किया था, जवाब में फ़रमाया कि यह ख़त व किताबत और नामा व पयाम ज़ाती मशक़्क़त से मुस्तग़नी नहीं कर सकता।

इसलिए जनाब, यहां के मेवात में 25 मई को होने वाले जलसे[1] की शिर्कत के लिए 24 मई की शाम तक यहां पहुंचने की तकलीफ़ गवारा फ़रमाएं, तो अल्लाह जल्ल जलालुहू की ज़ात से उम्मीद है कि तस्बीत व इत्मीनान और इन्शिराहे क़ल्ब के बारे में एक लम्बी मुद्दतों की ख़त व किताबत से ज़्यादा बेहतर होगा, ख़त व किताबत का ज़रिया ज़ईफ़ सबब है, जैसा कि वुज़ू के नामुम्किन होते हुए तयम्मुम। फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास बक़लम इनामुल हसन

(5)

इस मक्तूब के फ़ायदे

1. तबीयतों का तबीयतों से हिस्सा लेने का दस्तूर जाता रहा, 2. हम नादान अपनी कोशिशों के मुआवज़े को मुनाफ़े की मिक़्दार के महदूद कर देने के ज़रिए बहुत ही नाक़िस कर देते हैं, 3. अहम फ़र्ज़ों में कोशिश करने वाले और नफ़्लों में कोशिश करने वाले बराबर नहीं हो सकते, 4. अगर ख़राबियों के साथ नज़रंदाज़ी और परदा पोशी और ख़ूबियों की पसंदीदगी और एज़ाज़ का मुसलमानों में रिवाज हो जाए, तो बहुत से फ़ित्ने अपने आप दुनिया से उठाए जाएं। 5. अल्लाह तआला हर आदमी के साथ वही बर्ताव करेंगे जो वह आदमी सारी मख़्लूक़ के साथ कर रहा है। 6. हुज़ूर की बातें दूसरों में इस नीयत से फैलाए कि मेरे अलावा अल्लाह के सब बन्दे अपनी ज़ात से नेकतीनत और पाकनफ़्स हैं। वे दीन के जिस काम को करेंगे, वह ज़ाहिर व बातिन में अच्छा होगा, अल्लाह उसकी बरकत से मुझे भी हिस्सा अता फ़रमाएं। 7. मौक़े पर कोई थोड़ा सा भी हो, तो बे-मौक़े के हज़ारों से बेहतर होता है।

---

1. यह जलसा ज़िला गुड़गांव तहसील नूह में क़स्बा घासेड़ा में हुआ था, जो सड़क पर नूह से बिल्कुल क़रीब वाक़े है। इस जलसे में मेवात के उलेमा व मियां जी साहिबान और चौधरी साहिबान ख़ास एहतिमाम से मदऊ किए गए थे। बाहर के उलेमा में से शेख़ुल हदीस मौलवी ज़करिया साहब, मौलवी अब्दुल लतीफ़ साहब नाज़िम मज़ाहिरुल उलूम, मौलवी अब्दुल बारी साहब नदवी वग़ैरह शरीक़ हुए थे। मौलवी की तक़रीर और जलसे का मौज़ू ज़्यादातर इल्म को दीन के काम में लगाना था।

मुकर्रम व मअज़्ज़न व मोहतरम गौहरे ताबां,
मादने सियादत, मत्तअनल्लाहु बितूले हयातिकुम
अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

हज़रत मौलवी! दिल व दिमाग़ और तमाम ताक़तें कुछ ऐसी थकी हारी और ज़ईफ़ हो रही हैं कि किसी मज़्मून के लिखने की हिम्मत व ताक़त नहीं और दर असल यह तब्लीग़ की नौअ़ और यह जेहत कुछ ऐसी है कि इस तरफ़ को तवज्जोह करना ही मुझ ज़ईफ़ के थकन की वजह बन जाता है, क्योंकि इस लाइन में यह साफ़ दिखाई देता है कि वह असल मज़्मून, जो बयान के क़ाबिल है, इस असल मज्मून के मुक़ाबले में हर वह इबारत कि उसकी ताबीर के लिए तबियत मज़्मून तज्वीज़ करती है, वह एक आज़ाद को और एक वसीअ़ चीज़ को और एक नूरे मुतलक़ को पाबन्द कर देता नज़र आता है, जो उसकी शान के साथ कुछ भी मुनासबत रखता नज़र नहीं आता, इसलिए इस मज़्मून के साथ यह बात सही नज़र आती है कि अगर बोलें (तो मक़्सूद के इज़्हार में और उसके हावी होने में बिल्कुल क़ासिर और नाकाफ़ी होने की वजह से) तो मुश्किल और न बोलें तो मुश्किल (हम माद्दीयात में ऐसे फंसे हुए है, तबियतों का तबियतों से हिस्सा लेने का दस्तूर छूट चुका और अमली जद्दोजेहद में ख़ूब पसीना एक करके और कोशिश का हक़ अदा करके जो शरीअत के सीखने-सिखाने की असली सूरत थी वह मादूम करके अब इफ़ादा और इस्तिफ़ादा बेचारी एक ज़ुबान ही के ऊपर रह गया है, सो अगर ज़ुबान से कुछ न कहा जाए तो इस माद्दापरस्ती के दस्तूर की वजह से कोई सूरत ही नहीं, इफ़ादा और इस्तिफ़ादे की, इसलिए तो मुश्किल।

बहरहाल अर्ज़ यह है कि हम ख़ुदा की क़ुदरत और उसकी हक़्क़ानियत से नाशनासी के आदी, अल्लाह जल्ल जलालहू के काम के लिए खड़े होते भी हैं तो नारसा अक़्ल में और उसके एहाते में आने वाली मिक़्दार मुनाफ़े के साथ अपनी सई को महदूद करके खड़े होते हैं और अल्लाह के यहां से क़ानून है 'अना इन-द ज़न्नि अब्दी बी', तो अल्लाह के साथ जितना ज़न (गुमान) कर लोगे, उतना ही मिलेगा, तो हम नादान अपनी कोशिशों के मुआवज़े को मुनाफ़े की मिक़्दार के

महदूद कर देने के ज़रिए बहुत ही नाक़िस और कम कर देते हैं, हालांकि अक़्ले नाक़िस के मुताल्लिक़ सिर्फ़ इतना था कि हर कोशिश को उसके दर्जे में रखते हुए उसके मुआवज़े को अल्लाह तआला की शान के शायाने शान मिक़्दार पर हवाला करते हुए और 'लायुज़ीउ अजरल मुहसिनीन' पर ईमान रखते हुए बे चून व चरा अपने इस मामले में जुनूनी होने और कहलाए जाने की तमन्ना रखते हुए इन कोशिशों में अपनी फ़ना में अपनी बक़ा समझे, तो इन कोशिशों का दुनिया ही में जन्नत का मज़ा पाए'। लेकिन दस्तूर इसके ख़िलाफ़ हो गया, फिर अगर सुन्नत के ज़िंदा करने की नीयत से इन नीयतों से कोशिशों में लगना शुरू कर दें और अल्लाह से मांगते रहें, रहमते अज़लिया और अलताफ़े सरमदीया से इस दौलत के मिल जाने में हरगिज़ बुख़्ल का ख़तरा नहीं—

इसके अलताफ़ तो हैं आम शहीदी[1] सब पर
तुझसे क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता।

बहरहाल नाचीज़ बन्दे का मक़्सद यह है कि फ़राइज़ में (और फ़राइज़ में भी अहम फ़राइज़ में) कोशिश के मुआवज़े को और उनके दीनी और दुन्यवी असरात को जो अल्लाह ने खुले दिल के साथ कोशिशों पर अपने ऊपर हवाले कर देने की सूरत में वाबिस्ता फ़रमा रखे हैं, वे बग़ैर कोशिशों के नसीब नहीं हो सकते, इसी तरह मुनाफ़ा महदूद कर देने से भी बहुत नाक़िस हो जाते हैं, बहरहाल मक़्सद यह है कि बग़ैर सई वाले यानी क़ाइदीन (बैठने वाले) मुजाहिदीन (कोशिश करने वाले) जैसे नहीं हो सकते और अहम फ़राइज़ के मुजाहिदीन नवाफ़िल के मुजाहिदीन के बराबर नहीं हो सकते और तख़लियों को और तजल्लियों को मामूर रखने वाले और सहाबा व अंबिया की ज़िंदगी के नक़्शे क़दम पर कोशिश करने वाले कम चीज़ों में मसरूफ़ होने वाले के बराबर नहीं हो सकते। मुझे ताज्जुब है कि हम ऐसे फ़र्ज़ों में जान तोड़ कोशिशों की सुन्नत को ज़िंदा करने में अपनी जानें क्यों नहीं दे रहे, बहरहाल यहां का मुख़्तसर खुलासा यह है कि अफ़राद से मुतजाविज़ होकर कैफ़ियत के तौर पर इस तहरीक की खुशगवार हवाएं लहकने लगें, हालांकि अफ़राद ने भी कुछ अच्छी तरह से शान के मुनासिब लब्बैक नहीं

1. करामत अली ख़ां शहीदी वफ़ात 1840 ई० मसरूफ़ी के शागिर्द

कही, क्यों न क़ुरबान जाइए ऐसे सैयदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कि उनकी बतलाई हुई चीज़ के बावजूद इतनी थोड़ी और कमज़ोर मिक़्दार इत्तिबा के ऐसा नुमायां खुला एजाज़ और नश्व नुमा इस्लाम का और अन्दरूनी और बैरूनी नुस्रतें ख़ुदा-ए-पाक की ईमान को ताज़ा करने वाली यक़ीन को सरसब्ज़ी देने वाली माद्दी ज़िंदगी को सरसब्ज़ी देने वाली ऐसी खुली-खुली नज़र आ रही हैं, अगर अपनी कोशिशों की हक़ीक़त पर नज़र की जाए तो बावजूद इस हक़्क़ानियत के खुल जाने के फिर इस बेहुर्मती की कोशिश पर अगर पकड़ हो और ज़बरदस्त पकड़ हो और जिस तरह का भी अज़ाब लाया जाए तो कुछ ताज्जुब नहीं, लेकिन उसकी कमी और नाक़द्री और कुफ़रान पर सज़ा और पकड़ के बजाए ऐबों की सत्तारी और ज़ोफ़े अमल पर ग़फ़्फ़ारी और जव्वादी और करम और रहमत की ऐसी बारिश साफ़ नज़र आ रही है कि जैसा मैं शुरू ख़त में लिख चुका हूं कि बयान उसको मुहीत नहीं हो सकता। उलेमा की जमाअत निहायत तद्रीज और खुश गवारी के साथ इस्तक़बाल करती चली आ रही है, तिजारत और मुलाज़मत पेशों में ऐसी मक़बूल होकर उनको हिदायत के रास्ते पर लाती चली आ रही है, अंग्रेजी असरात से दहरियत में ग़रक़ाबों को साफ़-साफ़ रुश्द व हिदायत पर खींचती चली आ रही है, बिदअतों वग़ैरह अह्वा में गिरफ़्तार और फंसे हुओं को तद्रीजी निहायत रूफ़्क़ के साथ सुन्नत के रास्ते पर खींचती चली आ रही है, बावजूद इन सब तरक़्क़ियों के उसकी नाक़द्री का जितना शिकवा किया जाए, वह कुछ कम नहीं। इसकी ज़रूरत है कि जिस तरह से मदारिस में तालीम और दीन सीखने के लिए मुस्तक़िल उम्रें उसके लिए ख़र्च की जाती हैं, उसी तरह बड़े इस्तिक़लाल से इस तर्ज़ से दीने मुहम्मदी की तालीम के लिए वक़्तों को फ़ारिग़ करने की अपने से शुरूआत करें और दूसरों को दावत दें, इस अम्र के लिए हौसलों को बुलन्द करने की बड़ी सख़्त ज़रूरत है। नाचीज़ बन्दा मेवात में क़ौम के अह्ले हल व अक़्द को जमा करके इस तर्ज़ के जुज़्वे ज़िंदगी बनाने की दावत दे रहा है, उस दावत की आवाज को क़वी करने और उसके अन्दर आपसी मदद पर उभारने की बहुत सख़्त ज़रूरत है।

अलहम्दु लिल्लाहि! सु-म अलहम्दु लिल्लाह! टूडामीम में वहां के शरीफ़ लोग

भी क़ौमियत के तौर पर इस कोशिश के लिए कुछ हां करने को तैयार चले आ रहे हैं, लेकिन इस हां के पौधे की तर्बियत करने की बड़ी ज़रूरत है, ताकि यह 'हां' अमल तक और अमल दूसरे नतीजों को मुफ़्ज़ी हो। आंजनाब की वह उलफ़त व मुहब्बत जो जनाब की ख़ूबियों की बदौलत मेरी ख़राबियों और गन्दगियों के महसूस करने पर खूबियों को देखने और उसके पसंद करने में ग़ालिब आ गई है। मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि अल्लाह जल्ल शानुहू का मेरे साथ क़ियामत में यह ही बर्ताव रहे और हम सब मुसलमानों का, सबका और सबमें हर आदमी का अपने के साथ यही बर्ताव रहे। नाचीज़ बन्दे की नज़र में कोई आदमी कोई मुस्लिम हरगिज़ नहीं कि कुछ ख़ूबियों और कुछ ख़राबियों से ख़ाली है, हर आदमी में यक़ीनन कुछ ख़ूबियां और कुछ ख़राबियां होती हैं, अगर ख़राबी के साथ नज़र अंदाज़ी और छुपाने का और ख़ूबियों को पसन्द करने और उनके इकराम का हम मुसलमानों में रिवाज हो जाए तो बहुत से फ़ित्ने और बहुत सी ख़राबियां अपने आप दुनिया से उठ जाएं और हज़ारों ख़ूबियों की अपने आप बुनियाद पड़ जाए, मगर दस्तूर इसके ख़िलाफ़ है। इस तब्लीग़ में एक नम्बर जो चौथे नम्बर से नामज़द है, वह हक़ीक़त में सिर्फ़ यही एक नम्बर है और अल्लाह तआ़ला हर आदमी के साथ वही बर्ताव करेंगे कि जो वह आदमी सारी मख़्लूक़ के साथ बर्ताव कर रहा है। बहरहाल मैं आपके करम का और मुहब्बत का सिला अल्लाह ही के हवाले करता हूं और दुआ करता हूं कि अल्लाह की रिज़ा और मुहब्बत के बाद, जो इंसान के लिए बेहतरीन सरमाया (पूंजी) अल्लाह वालों की मुहब्बत का है, जो आपकी बदौलत मुझे नसीब है, अल्लाह तआ़ला मेरे लिए उस क़ीमती सरमाए को क़ियामत तक के लिए सलामत और बढ़ता हुआ रखे और जिससे मुझे यह सरमाया मिला है, (यानी आप की ज़ात वाला) उसको भी इसके अज्र व सिले से दारैन में उसकी शान के मुनासिब सलामत और बढ़ता हुआ रखें। जनाबे आली ने तालिब इल्मों में से कुछ के अपने से ज़्यादा ख़ुलूस और पुरजोश और बेहतर होने को तहरीर फ़रमाया है, यह सिर्फ़ मुबारकबादी ही को काफ़ी समझ लेने की चीज़ नहीं, बल्कि ये कुछ चीज़ें बहुत ज़्यादा ध्यान में रखने के क़ाबिल हैं। एक यह कि जो बात कुछ में नज़र आती है, हर एक के साथ यह

ही गुमान रखने में रियाज़त और सई और कोशिश करनी चाहिए।

यह मज़्मून दो हदीसों का खुलासा है कि 'इत्तहिमू अन्फ़ुसकुम' और एक 'ज़न्नल मोमिनी-न ख़ैरा' और यह बात कैसे नसीब हो सकती है, मुस्तक़िल मज़्मून को चाहती है, फिर पर रखूं तो खुदा जाने क्या मौक़ा हो, इसलिए मुख़्तसर तौर पर अर्ज़ है कि बन्दा ना चीज़ के नज़दीक कोशिश करने की अपने दिल में बुनियाद ही इस पर रखे कि अपने नफ़्स को तजुर्बे से ऐसा गन्दा, नाक़िस खुदग़रज़ और हर काम का बिगाड़ देने वाला यक़ीन करे कि अलताफ़े खुदावन्दी का क़िस्सा तो कुछ और है, यह मौत तक दुरुस्त होता नज़र नहीं आता, इसलिए सई और हुज़ूर की बातें दूसरों में इस नियत से फैला दे कि मेरे अलावा जो सारी मख़्लूक़ अपनी ज़ात से नेक नीयत और पाक नफ़्स है, वह दीन के जिस काम को करेंगे, वह जाहिर बातिन में एक अच्छा अमल होगा और उनकी बरकत से अल्लाह तआ़ला बाक़ायदा 'अद-दाल्लु अलल ख़ैरि कफ़ाअ़िलिही' अल्लाह तआ़ला अपने अलताफ़ से उन पाक हस्तियों की बरक्त से मुझे भी उससे हिस्सा फ़रमा देवे। जनाब ग़ौर फ़रमाएंगे तो बुज़ुर्गों की सवानहों से इसकी बड़ी ताईद आपको मिलेगी।

बन्दा नाचीज़ इस बात की बड़ी तमन्ना करता है कि तब्लीग़ के सिलसिले की ये कुछ किताबें हैं, उनके साथ तब्लीग़ की लाइन में क़दम धरने वाले तीन तरीक़ों के साथ बहुत जुड़े रहें, थोड़ा वक़्त हो, लेकिन हमेशा हो।

एक यह कि तब्लीग़ के निकले हुए ज़माने में तंहाई में देखना, दूसरे मज्मों में इन मज़्मूनों की दावत देना, दूसरे मज्मों में और ख़ास तज़्करों में उन मज़्मूनों का अपने ग़ैरों से सुनना और तब्लीग़ की ये किताबें ये हैं जो अब तक तज्वीज़ हो चुकी हैं और बहुत से मज़्मून ज़ेहन में हैं, इल्मवालों के इस्तिक़लाल से खड़े हो जाने के बाद इन मज़्मूओं में तस्नीफ़ का ख़्याल है

जज़ाउल आमाल, चहले हदीस, फ़ज़ाइले क़ुरआन, फ़ज़ाइले नमाज़, फ़ज़ाइले ज़िक्र, हिकायाते साहाबा, दोनों रसाइले तब्लीग़ मौलवी एहतिशाम व मौलवी ज़करिया वाले।

इस वक़्त जनाब गरामी नामा से जो उमूमी मज़्मून ज़ेहन में आया, मालूम नहीं फ़ायदेमंद है या ग़ैर-फ़ायदेमंद, वह ख़िदमत में पेश कर दिया। ख़ुसूसी हिदायतों की तरफ़ इस वक़्त तबियत मुतवज्जह नहीं और आप जैसी बा बरकत ज़ात ख़ुसूस की मोहताज भी नहीं, इन उमूम से ख़ुसूस जनाब की शान अख़्ज़ करने की बहुत ज़्यादा हक़दार है। टोडामीम से क़ाज़ी साहबान में से दस पन्द्रह की जमाअत तब्लीग़ के लिए सहारनपुर तशरीफ़ लाने की कोशिश फ़रमा रहे हैं, ज़्यादातर चूंकि मुलाज़मत पेशा हैं और रियासत का क़िस्सा है और वह भी हिन्दुवानी और फिर वह एक वक़्ती, देखने में दुश्वार नज़र आ रहा है और अल्लाह को सब आसान है, दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह पूरा फ़रमा दें।

6 अप्रैल के सहारनपुर में मदरसा मज़ाहिरुल उलूम का सालाना जलसा है। अगर हज़राते मुबल्लिग़ीन ऐसे-ऐसे मौक़ों में, कुछ दिनों पहले और कुछ दिनों बाद सही उसूल के साथ तब्लीग़ी सरगर्मियों के मौक़े ढूंढ़ते रहें और इस बारे में हर तरह की तक्लीफ़ और नागवारियों को बरदाश्त करें 'हुफ़्फ़तिल जन्नतु बिल मकारह' के वायदे के मुताबिक़ यह जन्नत में जाने वाली स्कीम सरसब्ज़ हो सकती है। हर काम के लिए कोशिश शर्त है और मौक़े पर कोई थोड़ा सा भी हो तो बे-मौक़ों के हज़ारों से बेहतर होता है। बस ज़्यादा क्या अर्ज़ करूं।

सब दोस्तों की ख़िदमत में सलाम मस्नून और काम की मुबारकबाद दें और दुआ की दर्ख़्वास्त फ़रमा दें।

बन्दा नाचीज़

मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

(6)

फ़वाइद मक्तूबे हाज़ा

फ़ 1. नवाफ़िल के अन्दर तक की मुदावमत भी यहबूबियत की शान पैदा करती है। **फ़ 2.** इबादतों, में बक़द्र दवाम (हमेशा रहने वाली) अल्लाह की मुहब्बत का सरमाया हैं। 'अहब्बुल आमालि इलल्लाहि अदवमुहा'

अज़-बस्ती निज़ामुद्दीन औलिया

मोहतरमानम[1] व आमाजगाहे आमालम शर्रफ़नल्लाहु बि अख़्लाक़िकुम
बहीया व मत्तअनल्लाहु बिमहासिनिकुमुन्नबवीया
अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

हज़रात आली मुक़ाम, दोनों के एक के बाद दूसरे गरामी नामे बाइसे इज़्ज़ व शरफ़ व करामते दारैन हुए। अल्लाह तआला आंगरामी ज़ातों को अपनी मरज़ीयात में पिछलों पर सबक़त ले जाने का नमूना बना दें और हम ख़ादिमों के लिए आपकी मुहब्बत का सरमाया ज़्यादा मिक़्दार में नसीब फ़रमा दें। अल्लाहुम-म आमीन। जनाब सैयद अबुलहसन अली साहब की अलालते मिज़ाज (बीमारी) से रंज व मलाल हुआ।[2] दस्त बदुआ हूं कि अल्लाह तआला जल्द हासिल होने वाली पूरी सेहत अता फ़रमाएं और खुद बीमारी भी जो नेक लोगों के लिए एक नेमत है, जब तक मुक़द्दर है, उस वक़्त तक बीमारी से क़ज़ा (मुक़द्दर) पर राज़ी रहने और बुराइयों को दूर करने वाला यक़ीन दे दें। मेरा तो जी चाहता है कि इस पर मुबारकवाद दूं कि इस चौदहवीं सदी में अल्लाह के रास्ते में खुलूस के साथ सफ़र करने और जद्दोजेहद करने के नतीजे में सफ़र का मरज़ हुआ।

हल अन-ते इल्ला इस्बउन दुमियत व फ़ी सबीलिल्लाहि मा लकीत०

यह बीमारी इससे ज़्यादा सूरत वाली हैसियत नहीं रखती कि दुनिया में जैसे हज़ारों-हज़ारों को बुख़ार आते हैं, एक आपको भी आ गया, लेकिन इस निस्बत से धरती पर शायद मुम्ताज़ हो गया कि ज़ाहिर में इसकी वजह एक ऐसी चीज़ के लिए क़दम उठाना है कि वह तर्ज़े ज़िंदगी अगर हो जाए और जानें जा कर भी अगर मस्लूक हो जाए तो निहायत मश्ग़ूल रहनेवाले और अपने मश्ग़लों से फ़ारिग़ न हो सकने वाले तमाम उम्मते मुहम्मदिया के लिए रुश्द व हिदायत की वाफ़िर

---

1. बनाम डाक्टर हकीम मौलवी सैयद अब्दुल अली साहब व ख़ाकसार अबुल हसन अली।

2. ख़ाकसार तहसील फ़तहपुर तब्लीग़ी सिलसिले में गया था, वहां बारिश में भीगने की वजह से सीने में दर्द और बुख़ार हो गया। लखनऊ आकर देखने से मालूम हुआ कि सीने में तक्लीफ़ और मीयादी बुख़ार हो गया है। भाई साहब मद्दज़िल्लहु ने मौलवी को इस बीमारी की इत्तिला दी और अपनी फ़िक्र को ज़ाहिर किया। मौलवी ने इस इत्तिला पर यह गरामीनामा लिखा।

बहरा अन्दोज़ी ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने के लिए एक मुरदा तरीक़े को ईक़ान (यक़ीन) और मुहकम व पायदार ज़िंदगी देने के लिए यह क़दम था। अल्लाह ताआला इस शानदार वजह पर नज़र जमा कर उसके शुक्र की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमावें और मरज़ में भी सेहत से ज़्यादा रज़ाजूई के तरीक़ों पर ताक़त बख़्शें। अल्लाहुम-म आमीन

मौलवी एहतिशामुल हसन भी सफ़र में गए हुए थे, रात ही आए हैं, मश्विरा करूंगा कि वहां के क़ाबिल कोई आदमी मिल जावे तो जनाबे आली के इर्शाद के मुताबिक़ तलाश के बाद रवाना करूं, यह नाचीज़ बन्दा भी ज़्यादा तर बाहर रहा और अगर यहां रहा तो ऐसे इत्मीनान का वक़्त न मिला जो गरामी नामा के जवाब में जल्दी करता, जवाब में ताख़ीर की नदायत है, माफ़ फ़रमादें।

हज़रत मौलवी अबुलहसन अली मद्द ज़िल्लहू ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई नई बात ऐसी नहीं है कि जिसे लिखूं, मुझे हैरत है कि किसी काम के बराबर करते रहने को नया नहीं कहा जाएगा। हमेशा करते रहने के तर्ज़ पर बराबर कोशिश करते रहना आप ही जैसों का एक ख़ास हिस्सा है और यह भी एक नई बात है। यहां कोई आदमी (न बड़े तबक़े में, न छोटे तबक़े में) मुलाक़ात के वसाइल के इतने कम होने पर मुझे नहीं मिला, यह आपके बुलन्द हौसला होने की अलामत है, अल्लाह मुबारक फ़रमावें।

मुदावमत (हमेशा करना) एक ऐसी मक़्बूल और मुबारक चीज़ है कि यह नफ़्लों के अन्दर तक भी एक महबूबियत की शान पैदा कर देती है। मुदावमत एक ऐसी चीज़ है कि असल जो अल्लाह तआला की रहमत और इनामों के वायदे हैं, वे इसी से जुड़े हुए हैं—

इसके अन्दर कितने ज़्यादा और बड़े-बड़ मामलों की बशारतें हैं, वे सब इसी इस्तिक़ामत और मुदावमत से वाबिस्ता हैं—

'हमेशा किए जाते रहने वाले काम ज़्यादा महबूब हैं'।

'हमेशगी के जितना अल्लाह की मुहब्बत का सरमाया हासिल है', ख़ैर! मुझ जैसा नावाक़िफ़ आपके सामने लिखे, यह क्या बात हुई। बहरहाल इस नाचीज़ बन्दे को .... इस हमेशगी की जितनी क़द्र हो, वह वाजिब है और बहुत क़द्र के क़ाबिल है, यह ज़रूर याद दिलाता हूं कि मौलवी मौसूफ़ुस्सदर ने यहां तशरीफ़

आवरी के वक़्त कुछ वहां से आदमी भेजने के लिए बहुत थोड़ी सी उम्मीद मेरी मदद के लिए दिलाई थी, वह अगर हो सके तो आदमियों को भेज कर मदद फ़रमा दें, मगर शर्त यह है कि अपना खाएं और मेवात से गए हुए मिस्कीन, ग़रीब, जाहिल, पुराने कपड़े पहने लोगों में मिल-जुल कर गुज़ारने की हिम्मत बांध कर जावें और पहले से यह तै कर लें कि क़तई तौर पर और ज़रूर वहशत होगी और जी नहीं लगेगा, वहशत के होते हुए पक्का इरादा करके जावें, जनाब के यहां नटों की क़ौम अपने दौरे और घूमने के ज़माने में इधर रुख़ रखती हो या आप की तर्ग़ीब से रुख़ कर ले तो यहां निज़ामुद्दीन के आस-पास ख़बर होने पर कोशिश करें कि उनसे मिल लें और इन के वास्ते एक जमाअत को पैवस्त करने की कोई शक्ल निकाल लें।[1] शायद उस वक़्त कोई सूरत हो जाए। आंजनाब जैसा अपनी जगह से इतनी दूर की जगह कोशिश फ़रमा रहे हैं, खुद लखनऊ के सबसे ग़रीब मुहल्लों में ज़रूर और फिर ज़रूर कोशिश का इफ़्तिताह लाज़िमी भी समझें, इसमें किसी दुश्वारी को अहमियत न दें और रुकावट न समझें, आदमी को जिस वक़्त तैयार फ़रमा लें, उस वक़्त बन्दे को मुत्तला फ़रमा दें, ताकि तब्लीग़ के मुनासिब मुक़ाम का मश्विरा दिया जा सके। फ़क़त वस्सलाम

—बन्दा मुहम्मद इलियास उफ़ि-य अन्हु बक़लम हबीबुर्रहमान

—अज़ मौलवी एहतशामुल हसन साहब बसद इश्तियाक़े नियाज़ सलाम मस्नून क़ुबूल बाद

(7)

—अज़ निज़ामुद्दीन

बआली ख़िदमत मुकर्रमी व मोहतरमी जनाब मौलवी साहब दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

अर्ज़ आंकि हस्बे इर्शाद सामी यहां से नटों की तब्लीग़ व तालीम के वास्ते मौलवी हिदायत ख़ां साहब व क़ारी हाफ़िज़ एहसान साहब को रवाना किया था,

1. तहसील फ़तहपुर और दूसरी जगहों में नटों की एक क़ौम रहती है, जो बारिश भर यहां क़ियाम करती है और बाक़ी दिनों में मुल्क में जगह-जगह सफ़र करके ढोल की मरमत करके अपना पेट पालती है। मौलवी से इस क़ौम के लिए मुबल्लिग़ों और आलिमों की फ़रमाइश की गई थी, उसके बारे में यह इर्शाद है।

उम्मीद है कि पहुंचे होंगे, मगर अब तक उनकी कैफ़ियत मालूम नहीं हुई, चूंकि आठ दस दिन गए हुए हो गए, इस वास्ते कैफ़ियत का सख़्त इन्तिज़ार है।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम हबीबुर्रहमान

19 सितम्बर सन् 1940, 16 शाबान, बरोज़ जुमारासत

(8)

मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़म हज़रत सैयद साहब दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मेरे दो मुख़्लिस अज़ीज़ तब्लीग़ के लिए गए हुए हैं। उनकी कैफ़ियत और उनकी हालत का हर वक़्त इन्तिज़ार है और उनकी दिल बस्तगी और उनके खाने-पीने के बन्दोबस्त होने की तमन्ना है। जनाब आली! इस राह में क़दम उठाने को दीन की ख़िदमत समझ कर इन दोनों बातों की कोशिश में क़दम उठाएं। यह बात ज़रा ध्यान रखने की है कि हाफ़िज़ एहसान एक शौक़ीन और जज़्बात के मालिक और बहुत दिनों से तब्लीग़ के काम में मश्ग़ूल और सई किए हुए हैं, लेकिन इल्म और तदब्बुर की दौलत से कम आशना हैं और इसके बर ख़िलाफ़ दूसरे साहब मौलवी हिदायत ख़ां तब्लीग़ के काम से निहायत अजनबी और मुतवह्हिश और हमेशा से बहुत अजनबी हैं, लेकिन इल्म की दौलत और फ़हम व तदब्बुर अल्लाह ने नसीब किया है, इसलिए दोनों साहबों की हालत के मुनासिब दिलगीरी और तवाज़ो के साथ हर एक की नुसरत और मदद में जनाबे आली ज़रा बा ख़बर रहें। मुझे इन दोनों के खाने-पीने और दूसरी राहतों का फ़िक्र है, ज़रा खुसूसी ख़बरगीरी फ़रमा दें और दूसरी कैफ़ियतों से इस नाचीज़ बन्दे को मुतमइन फ़रमा दें। मेरा बहुत जी चाहता है कि आंजनाब की इस तज्वीज़ के असरात सुनूं कि तमाम अहले मदरसा इस स्कीम के मुताबिक़ तब्लीग़ के लिए निकलने वाले हैं। इसके ज़ुहूर में क्या और क्यों ताख़ीर है?

—फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु, 17 सितम्बर 40 ई०

दूसरे रिश्तेदारों की ख़िदमत में सलाम मस्नून और दुआ की दरख़्वास्त।

(9)

—अज़ निज़ामुद्दीन

मुकर्रम व मोहतरम सलाला ख़ानदाने नबवी मौलवी मौलवी सैयद अबुल हसन अली नदवी साहब अर-श-द नल्लाहु ईयाकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

गरामी नामा सामी ऐन शदीद इन्तिज़ार के वक़्त दिल का कमल खिलने का सबब हुआ, अल्लाह तआला जनाब को मय जनाब के अहबाब के मख़्लूक़ के खिलते रहने और सरसब्ज़ रखने का रास्ता डालने वाला बना दें। बहुत ही जी खुश हुआ, मुरादाबाद में जो कुछ पेश आया[1], अल्लाह तआला आंज़ात गरामी को ऐसे-ऐसे चश्मों के जाबजा पैदा होने का मख़्ज़न बना दें।

पिछली तहरीर लिखवाने के बाद खुदा जाने किस ग़फ़लत से दिन गुज़रे। बावजूद दिल पर सख़्त तक़ाज़ा रहने के जनाब को नियाज़ नामा न लिख सका। आज बुध के दिन यानी 2 ज़ीक़ादा को फिर लेकर बैठा हूं। खुदा करे कि इस मक़्सद को पूरा कर दूं। ज़ेहन बिल्कुल साफ़ है, कोई मज़्मून ज़ेहन में नहीं, बहरहाल दो ज़रूरी मज़्मून गुज़ारिश करने हैं— एक यह कि मेवात के डेढ़ हज़ार आदमियों के चार-चार महीने निकलने की अल्लाह के फ़ज़्ल से एक नेमत तलबिया और आमादगीदा का बहुत ना क़ाबिले एहसा हम पर इनामे जलील है, इस इमाम के मुनासिब शुक्र से इस्तक़बाल करने में वायदा 'लअजीदन्नकुम' जो सरासर हक़ औरलाम की ताकीम और नून की तश्दीद से जो उसकी तौसीक़ और तहक़ीक़ हो रही है, और मुतकल्लिम की ज़ाते गरामी की तरफ़ निस्बत और कम के ऊपर फ़ेल ज़्यादती के वाक़े होने से 'इज़ा स-ब-तश्शैहउ स-बत्त बिलवाज़िमी ही' जो अपनी फ़राबानी और फलने-फूलने की उम्मीदें, ज़िक्र की गई नेमत के शुक्र के इस्तिक़बाल करने से वाबिस्ता हो रही है, वह किसी इंसान और फ़रिश्ते

1. नूह के बड़े जलसे से वापसी पर मुराबाद कुछ घंटे ठहरना हुआ, जिसमें मदरसा शाही में उस्तादों और तालिब इल्मों के सामने इस अज़ीज़ ने एक तक़रीर की, जिसमें मदरसों की ज़रूरत व अहमियत बयान करते हुए आम दावत और अवाम से रब्त व ताल्लुक़ पैदा करने की ज़रूरत पर कुछ अर्ज़ किया गया।

के अन्दाज़ में आने से बहुत ज़्यादा नजर आती हैं इसलिए बहुत ग़ौर करना है कि उस का शुक्र क्या है, ताकि उसको अदा किया जाए, आप भी इसमें ग़ौर करके अपनी मुबारक राय से हम ख़ादिमों को फ़रमा दें।

नाचीज़ बन्दे के ख़्याल में इस शुक्रिए की जड़ हाथ में और क़ाबू में आने के लिए दो काम शुरू कर देने चाहिए। एक सबसे अहम, सबका मग़्ज़ यह कि मक्तूबात[1] के बाद और सेहर की औक़ात में और मशाग़िले हदीस और तफ़्सीर की तदरीस के इख़्तिताम के वक़्तों में और उसके लिए मुस्तक़िल इजाबत के औक़ात में शुरू करके दुआओं की कसरत।

दूसरे उन की मदद के लिए जिस क़दर हो सके अपने ताल्लुक़ात के सिलसिले को कामियाब बनाने के लिए फ़रावानी के साथ ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त के लिए आदमियों को भेजना, अगर थोड़े वक़्त को मिलें, तो यह भी फ़ायदे से ख़ाली न होगा।

जनाब के मौऊद वक़्त में तशरीफ़ आवरी का शिद्दत से इन्तिज़ार रहेगा। उन दो में की दूसरी यह है कि जनाब के गरामी नामा में जिस वक़्त ये मुबारक अलफ़ाज़ पढ़े गए हैं कि राय और तास्सुरात के इज़्हार का दायरा अभी आम नहीं होना चाहिए। तो उस वक़्त नाचीज़ बन्दे के दिल में यह..... था कि यह राय सुनहरे पानी से लिखने के क़ाबिल है और मियां यूसुफ़ बहुत खिलखिला कर बोले कि हां जी, जब आप मौलवी से इस मज़्मून के अखबार में देने की ताकीद कर रहे थे तो हम भी यह कह रहे थे कि यह नहीं होना चाहिए, मामूं की भी यही राय थी और शेखुल हदीस की भी राय न थी लेकिन इसके बाद भी बन्दा नाचीज़ के नज़दीक बड़े ज़ोरों के साथ, हर तरह की इशाअतों में मेरे इस मज़्मून की जो उस वक़्त कर रहा था, इशाअत की बड़ी ज़रूरत है, लेकिन जब तक मुशावरत में कोई मज़्मून तै न हो जाए, उस वक़्त तक तहरीरों के ज़ोर की शुरूआत न फ़रमाएं, क्योंकि मेरे ज़ेहन में एक ऐसी बीच की सूरत है जो इस राय के ख़िलाफ़ नहीं, इस वक़्त मेवात से अलहम्दुलिल्लाह सुम-म अलहम्दु लिल्लाी आमद शुरू

---

1. ख़ाकसार ने अपने अरीज़े में अर्ज़ किया था कि अभी आमतौर पर इस तरीक़े कार और इसके तास्सुरात के मुताल्लिक़ अख़बारों में मज़्मून लिखने से बचा जाए, तो बेहतर है।

हुई है, खुदा करे कि पाबन्दी और दिल जमई रहे और निकलने के ज़माने में ऐसी सही कोशिशों में मसरूफ़ रहें, जो दारैन की बहबूदी की वजह बने । इस वक़्त तक अस्सी से ज़्यादा सौ के क़रीब आदमी आ चुके हैं। पिछली तहरीर के तरह इसके शुक्र की बड़ी ज़रूरत है।

मालूम नहीं, शेरवानी[1] साहब को जनाब ने इधर लगाने की कुछ हिम्मत फ़रमाई, या नहीं फ़रमाई, इस वक़्त दिल्ली जाने की वजह से इसी पर बस करता हूं। सब दोस्तों की ख़िदमत में सलाम और इश्तियाक़े अहवाल। फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास, बक़लम इनामुल हसन

अज़ इनामुल हसन सलाम मस्नून, गुज़ारिशे दुआ व शौक़े लिक़ा

(10)

सलाला ख़ानदाने नुबूवत नक़्क़ादा मादने रिसालत मुकर्रम व मुअज़्ज़म जनाब मौलवी अबुल हसन अली साहब दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

गरामी नामा मिला। जनाबे वाला के जवाब की ताख़ीर की वजह से बड़ी कोफ़्त है, बन्दा तो पहले ही वालानामा का जवाब दे चुका है, न मालूम क्या वजह हुई जो आप तक न पहुंचा। बन्दा शव्वाल की तीन तारीख़ दोशंबा के आठ बजे की गाड़ी से रवाना होकर 1 बजे सहारनपुर पहुंचेगा, इनशाअल्लाह तआला और फिर ज़्यादा से ज़्यादा हफ़्ते को निज़ामुद्दीन वापसी होगी। इससे पहले जनाब तशरीफ़ लावें तो निज़ामुद्दीन में मेरी वापसी तक तशरीफ़ रखे, अपने दोस्तों के लिए हर वक़्त दुआ करता हूं।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम नसरुल्लाह, सलाम मस्नून

29 रमज़ानुल मुबारक, दिन जुमा, अज़ निज़ामुद्दीन

(11)

अज़ निज़ामुद्दीन

दरमियाने क़ारे दरिया तख़्ता बन्दम कर दही

1. नवाब सदा यार जंग बहादुर मौलवी हबीबुर्रहमान साहब शेरवानी

बाज़ मी गोई कि दामन तर मकुन होशियार बाश।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बहुत से गरामी नामों के आने से पहले से मज़्मून की अहमियत बेहद तक़ाज़ा कर रही थी कि लिखा जाए, इस पर गरामी नामों के तक़ाज़े, ख़ुद ख़्याल फ़रमाएं अर्ज़ हाल के कितने मुहर्रिक बने होंगे। मगर रोज़ाना हज़रत हाफ़िज़ हबीबुर्रहमान को सामने बिठा कर और तहरीर के जवाब के तबीयत पर ज़ोर देने के बावजूद तहरीरे मक़्सद की नज़ाकत और मक़्सद के उम्क़ और वुसत अब तक भी किसी हर्फ़ के लिखने की इजाज़त नहीं दे रही। तीन इज्तिमा लगातार हुए, एक सहारनपुर का, इसके बाद अलवर के क़रीब मौज़ा अनटवाल का, इसके बाद 4 मई ज़िला मथुरा, मौज़ा हाथिया का हैं, इन तीनों में जो ख़ैरियत और बरकत उम्मीदों की सरसब्ज़ी के मंज़र पेश आए, वे लिखे नहीं जा सकते हैं और साथ ही इन सब जगहों में उसूल की थोड़ी-थोड़ी बे-रियायतों की वजह से जो थोड़ी सी हिम्मत करने से उसकी पाबन्दी हो जाती और इस पाबन्दी पर बे बरकतों और उम्मीदों की सरसब्ज़ी और अज़ली नुसरत की फ़रावानी, क़तरा और दरिया की निस्बत वह कसीर हो जाती, पस इन दोनों बातों पर नज़रने हैरत और ज़ीक़ में डाला, किसी बात की तहरीर से क़लम को रोक दिया, अब तक भी कोई बात लिखने की हिम्मत नहीं होती, अगर हो सका तो शायद किसी वक़्त लिखूं।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास, बक़लम हबीबुर्रहमान, मंगल 6 मई

(12)

इस मक्तूब के फ़वाइद—

1. मज़हब के लिए हज़ारों जानों का ख़ुशी-ख़ुशी पेश कर देना उसकी क़ीमत के लिए काफ़ी नहीं हो सकता।

2. मज़हब की असल क़ीमत सोज़िशे जिगर और ख़ूने दीदा बहाना है।

3. इंसान एक गहरा समुन्दर है। एक इंसान दूसरे इंसान से किसी चीज़ का असर उतना ही लेगा जितनी वह चीज़ उस इंसान के अन्दर असर किए हुए है,

4. निकलने के ज़माने में जवारेह के इबादतों में मश्ग़ूल होने और क़ल्ब की कैफ़ियत पर निगरानी की ज़रूरत है।

अज़ निज़ामुद्दीन

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मुकर्रम मोहतरम बन्दा हज़रते अक़्दस जनाब सैयद साहब मत्तानल्लाहु बिअन्फ़ासिकुमुत्तयिबा

कई दिन हुए गरामी नामा सामी इज़्ज़त बख़्श और नफ़हाते तैयिबा रवाएहे मानूसा के साथ इज़्ज़त अफ़ज़ा हुआ था। हक़ीक़त में तो अपनी कमज़ोरी, ग़फ़लत और अदमे तयक़्क़ुज़ (न जागते रहना) जवाब में ताख़ीर की वजह हुआ और बहाना और तस्वील के तौर पर मसरूफ़ियत और मशाग़िल देर की वजह बने।

बहरहाल जिस मज़हब के लिए हज़ारों जानों का ख़ुशी-ख़ुशी पेश कर देना उसकी क़ीमत के लिए काफ़ी नहीं हो सकता और जिस मज़हब की असली क़ीमत सोज़िशे जिगर और ख़ूने दीदा बहाना थी, उसके लिए हमारा यह नाम के लिए क़दमों का उठाना और इतनी कमज़ोर और कम मिक़्दार में अपनी मेहनतों का वाबिस्ता रखना असल फ़रीज़ा से कुछ निस्बत नहीं रखता, लेकिन अल्लाह पाक की ज़र्रानवाज़ी और मराहिमे ख़ुसरुवाना और अख़ीर ज़माने वालों के लिए उनकी मसाई पर सहाबा के पचास के बराबर अज्र व सवाब मिलने की ख़ुश-ख़बरियां और सच्चे वायदे और 'ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़सन इल्ला वुस अहा' की जैसी बशारतें हमारी इन कोशिशों के बारे में बड़ी-बड़ी उम्मीदें दिला रही हैं। मेरे हज़रात्! आप साहिबों के सामने लब कुशाई, किसी तरह गुस्ताख़ी और जुर्रात से ख़ाली नहीं, लेकिन न इस वजह से कि इन हक़ मामलों की मेरे पास रियायत और आपके पास रियायत नहीं बल्कि इस वजह से कि आप जैसे उसका इरादा फ़रमा देंगे, तो उसको कर गुज़रेंगे अपनी तबियत की ख़ूबी और इस्तेदाद की ख़ूबी की वजह से और हक़ के साथ हक़ीक़ी तनासुब की वजह से आप उसकी क़द्र के अह्ल हैं।

एक काम की बात एक अह्ल की तरफ़ पहुंचने की नीयत से आस्ताने का

यह ख़ादिम अर्ज़ कर रहा है कि मेरे हज़रत! इंसान एक गहरा समुन्दर है। यह दुनिया में क़ायदा है कि एक आदमी दूसरे से सबक़ लेता है, इसलिए जिससे सबक़ ले रहा है किसी चीज़ की रग्बत और उसका असर उतने ही हिस्से में लेगा कि जितने हिस्से में उस अमल के अन्दर असर किए हुए है। मेरा मक़्सद इस मारूज़ से यह है कि निकलने के ज़माने में ज़ाहिर इबादतों में (जिसमें सबसे बुलन्द इल्म की तलब और ज़िक्र में इश्तिग़ाल है) अपने क़ल्ब की कैफ़ियत पर ज़्यादा निगरानी की ज़रूरत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं 'अत-तक़्वा हाहुना' (तक़्वा यहां है) इसलिए इन चीजों के क़ियामत में काम देने के क़ायल हैं या नहीं, जिसका मदार ख़शीयत के साथ इन मामलों के क़ियामत में काम देने के यक़ीन और ईमान के बक़द्र वाबिस्ता है, इसलिए इस मज्मूए में मश्ग़ूल रहने की सई को बहुत ज़्यादा लाज़िमी समझा जाए। सीखने-सिखाने के लिए नाचीज़ बन्दे की राय में मुबल्लिग़ों में और तब्लीग़ की जगहों में नीचे लिखी किताबों का रच जाना बहुत ज़रूरी है— जज़ाउल आमाल, रिसाला तब्लीग़, चहल हदीस, शेखुल हदीस मौलवी ज़करिया साहब, जो क़ुरआन शरीफ़ के बारे में हैं, फ़ज़ाइल नमाज़, फ़ाइले ज़िक्र, हिकायाते सहाबा, इन सब किताबों को असल, मतन के तौर पर ठहरा कर इन्हीं मज़्मूनों की और किताबों से तक्मील की जाए तो और बेहतर है, अल्लाह तआला आसान फ़रमा दें और क़ुबूल फ़रमा दें।

इन मज़्मूनों के ज़रिए जज़्बात को परवाज़ देने के मातहत दोम दर्जे में फिर मसाइल को साथ-साथ ज़म कर देना चाहिए, ज़रूरत के मुताबिक़ हर जगह के, सैयद रज़ा हसन साहब[1] पन्द्रह दिन से तब्लीग़ के लिए तशरीफ़ ले गए हुए है, शुरूआत तो मेरे साथ हुई थी, लेकिन मैं हफ़्ते को जाकर पीर को वापस आ चुका था, मौसूफ़ उस वक़्त से अब तक तब्लीग़ के वास्ते हिम्मत के साथ गश्त फ़रमा

1. मौलवी क़ारी सैयद रज़ा हसन साहब मरहूम, मौलवी सैयद अहमद साहब मुदर्रिसे अव्वल दारुल उलूम देवबन्द, व मशहूर आलिमे रियाज़ी के पोते, मौलवी के शागिर्द व मजाज़ व मोतमदे ख़ास थे, हज के सफ़र में मेवात के काम के निगरां व ज़िम्मेदार और सिंध व भोपाल और कई जगह दावत के सिलसिले के बानी और अमीर जमाअत थे। अल्लाह तआला ने बहुत सी ख़ूबियों, जो मुतफ़र्रिक़ हैं, उनकी ज़ात में जमा फ़रमादी थीं। शव्वाल 1365 हि० में भोपाल में इंतिक़ाल किया। (रहमहुल्लाहि तआला)

रहे हैं, अल्लाह क़ुबूल फ़रमाएं और मुबारक फ़रमाएं, उनके हाज़िर होने पर आपका पैग़ाम अर्ज़ किया जाएगा। इस वक़्त कोई ख़ास मज़्मून ख़िदमत में अर्ज़ करने के वास्ते मेरे ज़ेहन में नहीं है, बाक़ी इतना ज़रूर है कि नाचीज़, बन्दे के ज़ेहन में यह नक़्शा है कि जिस तरह अंग्रेज़ी सल्तनत के फ़ौजी फ़ौज में भरती हो रहे हैं दुनियावी मईशत (रोज़ी) के लिए, अल्लाह की सुन्नते हक़ीक़ी एलाए मुस्लिमीन के लिए उनके इस तरह मज़हब के लिए कोशिशों में लग जाने के साथ वाबिस्ता है– 'व लन तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला व लन तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तह्वीला'

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बक़लम हबीबुर्रहमान मुदर्रिस, 6 मुहर्रम बरोज़ दो शेबार

(13)

फ़वाइद मक्तूबे हाज़ा–

फ़ 1. मोमिनों का आपस का हुस्ने ज़न अल्लाह तआला के जूद व सख़ा के दहाने खोलने के लिए बेहतरीन मिफ़्ताहे रहमत है,

फ़–2. तरद्दुदों की बदालियां फ़िक्र के सरमाए को बे-महल लगाने से उठती हैं।

फ़–3. तब्लीग़ में बहुत वज्हों से अल्लाह के तक़र्रुब और याददाश्त से निस्बत पैदा होने की ऐसी मज़बूत वज्हें हैं कि हज़ारों जानें और सर उसकी क़ीमत में सस्ते हैं।

अज़ सगे आस्ताना अज़ीज़ी व अहमदी[1]

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बसलाला ख़ानदाने नुबूवत जौहरे ताबां मादने सियादत जनाब सैयद साहब दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

एक अपने ख़ानदान के ज़र्रा बेमिक़्दार ख़ादिम से अपनी ज़ाती जौहर और

---

1. हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ व हज़रत सैयद अहमद की तरफ़ इशारा है।

हुस्ने ज़न के सरमाए की बदौलत कैसी ख़िदमत वाबस्ता फ़रमा दी। यह बन्दा नाचीज़ न इसका अह्ल है ओर न बन्दे को मज़ामीन पर दस्तरस हासिल है, लेकिन आदतुल्लाह यह जारी है 'इन्ना इन-द ज़न्नि अब्दी बी' आप जैसे हज़रात के हुस्ने ज़न का भी असर होगा, और नतीजा होगा कि जो फ़ैयाज़े अज़ली से कुछ नसीब हो जाएगा, मोमिनीन का आपसी हुस्ने ज़न एक अजीब सरमाया है और अल्लाह तआला के जूद व सख़ा के दहाने खोलने के लिए बेहतरीन कुंजियों में से रहमत की कुंजी है। अल्लाह आपकी जूतियों की बदौलत मुझे और मेरे सब दोस्तों को इस क़ीमती दौलत से मालामाल फ़रमा दें और दौलत वाला फ़रमा दें।

मेरे क़ाबिले क़द्र और मख़्दूम बुज़ुर्ग! निहायत ग़ौर करने की चीज़ है कि इस दुन्यावी तरद्दुदों[1] की असल क्या है और माद्दा कहां से उठता है, इस पर ग़ौर किया जाएगा तो इसका सुराग़ पता बहुत बुरी जगह कनेक्शन का पता देगा, यानी ये चीज़ें ग़फ़लत की बुनियाद पर अपने ध्यान के सरमाया को बे-जगह वाबस्ता करने के ज़ुल्म की वजह से इन तरद्दुदों की बदलियां और हवाएं उठती हैं, लेकिन वाह रे हमारे सबसे बड़े मुरब्बी जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हमारे रब्बे अकबर जल्ल जल्लालुहू व अम्म नवालुहू कि इन तरद्दुदों पर, जब कि उनका कनेक्शन ऐसा गंदा है, बजाए डरावे और इन तरद्दुदों पर पकड़ करने के किस क़दर हिकमत और अच्छी नसीहतों से हमें उनका इलाज बताते हैं 'इन-न फ़िल्लाहि अज़ाअन मिन कुल्लि मुसीबतिन० यह तो इलाज बतलाया, लेकिन अपनी करीमी और जवादे बारगाह से, बावजूद हमारे इन तरद्दुदात के गुनाह होने के, चूंकि उनका मंशा ग़फ़लत है, इसलिए यह गुनाह हुआ और जिस पर क़ुरआन पाक की आयतों में जा बजा मुतनव्बह फ़रमा रखा है—

'वमा असाबकुम मिम मुसीबतिन फ़बिमा क-स-बत ऐदीकुम' (वग़ैरह-वग़ैरह) इसके ऊपर इस्तिक़लाल से शरीअत के मामलों के ध्यान में लग जाने और इस्तग़फ़ार करते रहने पर इन तरद्दुदों के इलाज का भी वायदा फ़रमाया और क़ियामत में बड़े अज्र का भी वायदा फ़रमाया—

---

1. ख़ाकसार ने अपने ख़त में अपने कुछ फ़िक्रों और तरद्दुदों की शिकायत की थी और दुआ की दरख़्वास्त की थी।

मेरे कहने का ख़ुलासा यह है कि बन्दा नाचीज़ की नज़र में इंसान दो बातों का ख़्याल करे। एक यह कि यह सब अपनी ग़फ़लत और कोताही की बुनियाद पर पेश आ रही हैं, जिसकी वजह से ज़्यादा से ज़्यादा इस्तग़्फ़ार करे, साथ ही इसके बावजूद चूंकि अल्लाह तआला का उसूल है–

'अल्लाह किसी नफ़्स पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता है'

चूंकि इसकी वज्हों का मालूम करना उसकी वुसअत से ज़्यादा था, इसलिए उसकी पकड़ तो नहीं की और उस पर सब्र करने और अल्लाह से अज्र का सवाब की उम्मीद रखने की शक्ल में ऐसे-ऐसे दर्जों और ऐसी-ऐसी अताओं के सच्चे वायदे क़ुरआन व हदीस में भरे पड़े हैं कि जिनका शुमार मुश्किल है।

ग़रज़ यह है कि एक तो उसमें इलाज की ज़रूरत है, वह तो 'इन्नफ़िल्लाहि अज़ा' है और मेरे नज़दीक वह 'फ़िल्लाहि' जो है, वह तब्लीग़ के अन्दर दिल-बस्तगी और शौक़ के साथ लग जाना है। तब्लीग़ में बहुत सी वज्हों से अल्लाह के तक़र्रुब और निस्बत याद्दाश्त के पैदा होने की ऐसी मज़बूत वज्हें जमा हैं कि अगर क़द्रदान इसमें जांबाज़ी और सरफ़रोशी करें तो हज़ारों जान और सर उसकी क़ीमत में सस्ती हैं और दूसरे ख़ुद इन तरद्दुदों में अल्लाह तआला से अज्र व सवाब की पूरी उम्मीद रखें, बिला तरद्दुद कामिल यक़ीन के साथ तो इन तरद्दुदों की तक्लीफ़ें अपने मुआवज़े के मुक़ाबले में (जो इनशाअल्लाह ज़रूर मिलेगा) ध्यान के क़ाबिल न रहेंगी। यह बन्दा नाचीज़ जनाब के ख़ानदान के लिए आमतौर से और जनाब की वालिदा और भाई-बहनों के लिए ख़ासतौर से दुआ गो है और दुआ जू है (यानी दुआ करता है और दुआ चाहता है)। मेरी तरफ़ से भी सबसे दुआ की दरख़्वास्त फ़रमाएं। जनाब के तशरीफ़ लाने की ख़ुशख़बरी रुएं-रुएं को तर व ताज़ा कर रही है। अल्लाह तआला हमें आपके ज़ातेगरामी से दोनों दुनिया में फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ फ़रमाएं। ये दोनों साहब जो तब्लीग़ के लिए गए थे, उनके लिए और मेरे लिए बड़ी पूंजी यह है कि आप बुज़ुर्गों के क़ल्ब की ताज़गी की वजह हुआ। अल्लाह तआला बाबरकत और दारैन में नफ़ा बख़्श फ़रमाएं और फूलने और फलने वाला फ़रमावें। मुझे बड़ा क़लक़ हुआ कि वह मौलवी अब्दुश-शकूर साहब[1] से मिलकर न आए, अगली बार ख़ुदा करे कि

1. लखनऊ के बड़े और मशहूर आलिम 'इल्मुल फ़िक़्ह' के लेखक।

कोई ऐसा मौक़ा हो तो, मश्विरे में तै हो जाने की शर्त के साथ, लखनऊ में जितनी जगहें अपने दोस्तों की हैं, इन सब जगहों में तहरीक के सुराग़ का पीछा करना चाहिए, मुम्किन हो तो दरेग़ न करना चाहिए।

—फ़क़त वस्सलाम

रमज़ानुल मुबारक के बाद मेरा अज़ीज़ मौलवी ज़हीरुलहसन[1] जो मौलवी अलाउल हसन और मौलवी बद्रुल हसन के बेटे और भतीजे हैं, जनाब के भाई साहब की ख़िदमत में लखनऊ इलाज के लिए जा रहे हैं। ख़ुदा करे मौसूफ़ की ज़ाहिरी व बातिनी तवज्जोहात सबबे शिफ़ा हों। तश्रीफ़ लाने की तारीख़ अगर मुझे मालूम हो तो मैं उस ज़माने में क़ियाम का एहतिमाम रखूं, जाहिर में तो मुझे कोई सफ़र नहीं है, लेकिन पेश आने में क्या देर लगती है।

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बक़लम हबीबुर्रहमान

(14)

बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया मुत्तसिल दिल्ली

मुकर्रम व इनायत फ़रमाए!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

करम नामा मौसूल हुआ, हालात मालूम हुए।

मेरे मोहतरम ! यह तब्लीग़ी काम हक़ीक़त में इंसान की रूह की ग़िज़ा है। अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से आपको इस ग़िज़ा से बहरावर फ़रमाया। अब इस आरज़ी फ़ुक़दान या कमी पर बेचैनी लाज़िमी चीज़ है।[2] आप इससे परेशान ख़ातिर न हों।

अगर कुछ दिन के लिए यहां तश्रीफ़ लाना हो जाए तो अल्लाह तआला

---

1. मौलवी ज़हीरुल हसन कांधलवी एम.ए. अलीग, जो मौलवी के भाई मुहम्मद साहब के सगे नाती और मौलवी के साढू थे, बड़े बाख़बर और खुले दिल के ज़िंदा दिल, दोस्त नवाज़, वसीउल अहबाब और खुले हाथ वाले बुज़ुर्ग थे, 47 ई० के हंगामे में अपने मकान पर शहीद हुए, आलल्लाहु दरजातुहू

2. रायबरेली के क़ियाम में बेकारी की वजह से तबियत में बदमज़गी और बेचैनी थी। ख़ाकसार ने ख़त में इसकी शिकायत की थी।

की ज़ात से उम्मीद है कि नफ़ा बख़्श होगा, तस्कीने ख़ातिर भी होगी और काम की जड़ भी मज़बूत होगी इनशाअल्लाह। फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

अज़ : एहतशाम सलामे शौक़, पहली अक्तूबर 41 ई०

(15)

फ़वाइद मक्तूबे हाज़ा

1. अल्लाह तआला मुसलमानों और मुसलमानों के ज़रिए आम इंसानों की तरफ़ रहमत और फ़ज़्ल व करम के साथ दीन की कोशिश के सरसब्ज़ होने के साथ ही मुतवज्जह हो सकते हैं,

2. अपनी ज़िंदगी और अपनी कोशिशों की नाव को अपनी अक़्ल की रसाई से बिल्कुल मुबर्रा व मुनज़्ज़ह रखते हुए अल्लाह तआला के फ़रमान पर डाल देना मज़हब की बुनियाद है।

3. मस्लहतों और मनफ़अतों के खुल जाने पर कोशिशों का अज्र व सवाब हज़ारों गुना गिर जाना है।

अज़ निज़ामुद्दीन

मेरे मुकर्रम व मोहतरम मख़्दूम व मुअज़्ज़म दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

जनाब का गरायी नाम सामी इज़्ज़त बख़्श हुआ। ख़िदमते आली में बन्दे ने अर्ज़ किया था कि ये मुबल्लिग़ीन जमाअते मेवात से दिल्ली जब पहुंचें, आंजनाब उस वक़्त इआनत और मदद की हिम्मत फ़रमाएं। बन्दा नाचीज़ को हक़ वालों के सामने अपने ज़ोफ़ और हर तरह की कमज़ोरियों की बुनियाद पर बहुत मुश्किल नज़र आ रही है कि इस हक़ बात को पब्लिक के सामने किस क़ूवत से इज़्हार कर सकूं, दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह हमें हमारे हवाले न करें, बल्कि ख़ुद ही इस हक़ को इल्मन और अमलन खोलने में हमारी मदद और कार साज़ी फ़रमा दें, वह यह कि अल्लाह तआला मुस्लिमीन और मुस्लिमीन के ज़रिए आम मख़्लूक़ की तरफ़ रहमत और फ़ज़्ल व करम के साथ महज़ ख़ालिस इस

तरीक़े के सरसब्ज़ होने ही के साथ मुतवज्जह हो सकते हैं, वरना कमाले क़हर और कमाले लानत और निहायत ग़ज़ब के साथ उस वक़्त मख़्लूक़ के साथ इरादा किए हुए हैं। इस क़हर की आग का पानी इस तहरीक के सिवा हरगिज़ कुछ नहीं, मज़हब और शरीअत इस्लाम का मदार अपनी ज़िंदगी को और अपनी जद्दो जेहद और मसाई को अपनी सवाबदीद और अपनी अक़्ल की रसाई से बिल्कुल मुबर्रा-मुनज़्ज़ह रखते हुए महज़ हक़ जल्ल व अला के फ़रमान पर अपनी कोशिश की नाव को दिल व जान से डाल देना बस यही मज़हब की बुनियाद है, यहां तक कि जब सई करेगा, मस्लहतें ज़रूर दिखाई देंगी, एक लाज़िमी चीज़ है उस वक़्त जब ये मन्फ़अतें आंखों के सामने आने लगें और मस्लहतें दिखाई देने लगें, इन कोशिशों का अज्र व सवाब हज़ारों गुना गिर जाता है और दर्जा कम हो जाता है, जैसा कि ग़ज़वा-ए-बद्र का वाक़िया बसीरत वालों के सामने है कि इस ग़ज़वे के बाद वालों की मसाई गो ज़्यादा हैं, मगर पहले वालों के बराबर दर्जा नहीं है।

और दूसरी नज़ीर मक्का फ़त्ह में है जिसको सूरः हदीद में साफ़ उतार दिया है– 'ला यस्तवी मिन्कुम मन अन-फ़-क़ मिन क़ब्लिल फ़त्हि व क़ातल०'

तो मक़्सद यह है कि मज़हब को मस्लहतों से इतनी दूरी है कि मस्लहतों के आंखों के सामने आ चुकने के बाद अज्र व सवाब नहीं होता या कम होता है। ख़ुलासा यह है कि बन्दा नाचीज़ इस वजह से परेशान है कि हमारे ज़माने वाले ज़माने की परेशानियों और आने वाली हालतों के भूत से परेशान तो इस क़दर हैं कि जिसका कोई हद व हिसाब नहीं। मेरा अन्दर से ज़मीर इतना मुतमइन है कि इस चीज़ को सच्चाई के साथ इन्शिराहे सद्र लिए हुए खुले दिल से महज़ इस तहरीक को फ़रोग़ देते हैं, यक़ीन कर लें कि अल्लाह तआ़ला शानुहू–

'मन का-न लिल्लाहि कनल्लाहु लहू', के वायदे के मुताबिक़, जबकि हम उस तहरीक में (जिसमें सरासर दीन की सरसब्ज़ी है) वसूक़े क़ल्ब के साथ उसमें अपना इलाज यक़ीन करके अपनी जहदों को उसमें वक़्फ़ कर देंगे, तो अल्लाह तआ़ला अपने ग़ैबी इरादे को हमारी सलामती और फ़रोग़ की तरफ़ क़तई तौर पर मुतवज्जह फ़रमा देंगे और आगे ज़ाहिर है– 'वल्लाहु यफ़अ़लु मा युरीद'

(अल्लाह जो चाहता है करता है)।

तो मेरी समझ में नहीं आता कि अपनी सारी परेशानियों को दूर करने और इलाज के इसमें मुज़्मर होने को इस वक़्त पब्लिक के सामने किस तरह खोल दूं, जी चाहे है कि आप जैसे लोग इस तरफ़ मुतवज्जह हों, इससे ज़्यादा क्या अर्ज़ करूं, इस वक़्त मेहमानों की ज़्यादा कसरत हो गई, मौलवी एहतिशाम से मालूम हुआ कि मौलवी मंज़ूर[1] साहब की मइयत में क़रीब में आपकी तश्रीफ़ आवरी होने वाली है, अल्लाह तआला ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा दें और बा बरकत करें।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास

बक़लम हबीबुर्रहमान

(16)

फ़वाइद मक्तूब हाज़ा

फ़1. तब्लीग के लिए दौड़-भाग करने वाले दूसरी जगहों पर जाने के बजाए हर-हर मर्कज़ से तब्लीग़ के लिए खिंचने को असल क़रार दें।

अज़ निज़ामुद्दीन

मुकर्रम व मोहतरम अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बन्दा हज़रत आली जनाब सैयद साहब दा-म मज्दुकुम

गरामी नामा आली बहुत खुशियों को लिए हुए आराइशे मज्लिस हुआ, लेकिन ख़बरों के दर्जे में, अल्लाह वाक़िआत पर मुंतज फ़रमाएं और इन ख़बरों और वाक़िआत को अपनी क़ुदरत से कि जिस पर तनेतंहा बिला किसी और सहारे के ये सातों ज़मीन और आसमान टिके हुए हैं, अपने फ़ज़्ल से और रहमत से अपनी ज़ाती क़ुदरत के साथ इन ख़बरों और वाक़िआत में उस क़ुदरत का ऐसा टिकाव कर दें कि यह मुद्दतों चलने वाली हो, यह उबाल और सतही न रहे कि दो चार सदियों में ख़त्म हो जाए। बुनियाद के मज़बूत होने की बहुत ही दुआ फ़रमाते रहें। आज यह बन्दा इस दुआ को लेकर मदरसा अमीनिया गया था, जिसमें अल्लाह के फ़ज़्ल और लुत्फ़ और रहमत ने बहुत उम्मीदों वाली शक्ल पैदा

1. मौलवी मुहम्मद मंज़ूर नोमानी साहब

फ़रमा दी, हज़रत मुफ़्ती साहब[1] ने तमाम मुदर्रिसों और तालिब इल्मों को जमा फ़रमाया और मेरी तहरीस के बाद मौलवी फ़ख़रुल हसन साहब ने तहसीन फ़रमाई। उन्वान बहुत ही अच्छा अख़्तियार फ़रमाया, इसमें जहां मदरसे के तालिबे इल्म और सभी मुदर्रिस शरीक थे, शहर के ताजिर-पेशा और मुख़्तलिफ़ लोग भी हाज़िर थे।

बन्दे की नज़र में जब तक तब्लीग़ के सीखने के लिए आमद की इब्तिदा नहीं होने की और तब्लीग़ की कोशिश करने वाले ख़ुद तब्लीग़ की जगहों पर तब्लीग़ के लिए जाने के बजाए हर-हर मरकज़ में तब्लीग़ के लिए खिंचने की कोशिश को असल क़रार नहीं देंगे, तो यह तब्लीग़ सतही से गहराव की तरफ़ रुख़ नहीं करेगी, यह बहुत गहरा क़ायदा है।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़िय-अन्हु, 28 जनवरी, सन् 1942 ई०

(17)

फ़वाइदे मक्तूबे हाज़ा

फ़ 1. तब्लीग़ के लिए किसी ख़ास जगह को मख़्सूस कर लेना और बाक़ी मौज़ों (गांवों) को उसके बाद पर रखना, संगीन बुनियादी ग़लती है।

अज़ निज़ामुद्दीन

अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहू

गरामीनामा ने दिल हिला दिया। और आंखों को तर कर दिया।[2] जिन बीमारों के साथ आपको ताल्लुक़े ख़ातिर है, अपना दिल भी वहीं पड़ा हुआ है, अल्लाह अपने लुत्फ़ से और ख़ालिस अपनी रहमत से रज़ा बिक़ज़ा की मुकम्मल

1. हज़रत मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साहब रह० मुफ़्ती आज़म हिन्द, वफ़ात 1372 हि०

2. ख़ाकसार ने अपने अरीज़े में कुछ जगहों के लोगों की लगातार बे-तवज्जोही और तब्लीग़ की नाक़द्री और मज़ाक़ उड़ाने का ज़िक्र किया था, साथ ही अपने भांजे सैयद महमूद हसन मरहूम की तश्वीशनाक बीमारी और अपने एक रफ़ीक़े तब्लीग़ मौलवी मुईनुल्लाह नदवी की बीमारी का तज़्करा करते हुए अपने ताल्लुक़े ख़ातिर और इन्तिशारे तबियत का इज़्हार किया था।

नेमत के साथ 'ग़ेरु अन-न आफ़ि-य-त-क औला बिना व रहमति-क अजमलु बिना' सेहत और फिर आपके तब्लीग़ी मक़्सदों में साथ देने की दौलत भी साथ-साथ नसीब फ़रमा दें। तब्लीग़ के लिए किसी ख़ास जगह को मख़्सूस कर लेना और बाक़ी मौज़ों (जगहों) को इसके बाद पर रखना[1] एक संगीन बुनियादी ग़लती है, ख़तरनाक और ज़हरीला ख़्याल है, हरगिज़-हरगिज़ इसको दिल में जगह न दें और इस ख़्याल को क़ल्ब में न आने दें।[2] जो रुकावटें आपने तब्लीग़ की लिखी हैं, वे ज़ाहिरी अस्बाब में सच हैं, लेकिन मुसब्बे हक़ीक़ी को असबाब बदलते देर नहीं लगती, तफ़्सीली गुफ़्तगू वाक़ई तशरीफ़ आवरी पर ही मुनासिब होगी और एक जमाअत का तब्लीग़ के लिए सफ़र करना, यह मौलवी ज़करिया की राय के बाद हो सकता है, मौलवी एहतशाम साहब भी इस वक़्त कांधला गए हुए हैं।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम हबीबुर्रहमान,

8 अप्रैल 42 ई०

(18)

अज़ निज़ामुद्दीन

मुकर्रम व मुअज़्ज़म व मोहतरम बन्दा दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

आपका वह गरामी नामा सामी, उसका जो फ़ौरी जवाब मेरी समझ में आया, वह जनाब की ख़िदमत में रवाना करके वह नामा सामी शेख़ुल हदीस की ख़िदमत में रवाना कर दिया था। बन्दा नाचीज़ भी इस तब्लीग़ के सिलसिले में एक तहय्युर (आश्चर्य) की हालत में है, मग़्ज़ की बात की अपने में अदा करने

---

1. कुछ दोस्तों की तज्वीज़ थी कि पहले एक जगह पर भरपूर तवज्जोह की जाए और जब तक उसकी इस्लाह न हो जाए, दूसरी तरफ़ रुख़ न किया जाए।

2. अगर एक जगह ही पर अपनी और तवज्जोह को जमाए रखा होता और दूसरी जगह की तरफ़ क़तई तौर पर तवज्जोह न की जाती, तो सख़्त हिम्मत शिकनी और दिल टूटने की वजह बनता, इसलिए कि कुछ जगहें क़तई तौर पर अह्लियत और इस्तेदाद से महरूम हैं, जगहों की तायदाद और नई-नई होने की वजह से हिम्मत अफ़ज़ाई और ताज़गी काम में रही।

की अस्लियत नहीं, अमल तो दरकिनार और ख़ुदावन्दी आदतें अटल, उनकी नुसरत और रहमत उसी रास्ते में है, जो वाक़ई है।

अब तक की कोशिशों का जो खुलासा है, वह एक काफ़ी मिक़्दार आलमे इस्लाम का ख़्याल के दर्जे में मुत्तफ़िक़ हो जाना है कि वाक़ई यह स्कीम सही और एक करने की चीज़ है और मुख़ालफ़त व शुबहात के तमाम मरज़ हलके और क़लील हो गए, लेकिन इस बन्दा नाचीज़ को जज़्बात के ग़ौर के साथ जो महसूस होता है, वह यह है कि इस ख़्याल की सरहद से अमली मैदान की हदों में संगीन जबाल व मनाविस हाइल (भारी पहाड़ रुकावट) हैं, इसलिए इन जिबाल व मनाविस पर नज़र करते हुए तवज्जोह इलल्लाहि और तवक्कुल और दुआ के साथ मुतवज्जह होने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला की मदद अज़्म के साथ वाबिस्ता है। 'व इज़ा अ-ज़म-त फ़-तवक्कल अलल्लाहि' के मंज़र का तसव्वुर सही करके उस पर नज़र रखते हुए तवक्कुल सही मदद की वजह होता है।

बहरहाल मेरा मक़्सद यह है कि इस वक़्त के काम के लिए नये अज़्म व हिम्मत की ज़रूरत है। शेखुल हदीस से जलसे के मौक़े पर आपके वफ़्द की दावत का ज़िक्र आया था, उन्होंने इर्शाद फ़रमाया कि राय और मश्विरे का दर्जा तो यह है कि पहले सूरत इंतिफ़ा के ततब्बोअ़ के लिए कुछ लोगों का मश्विरा हो जाए, जिनमें खुद शेखुल हदीस भी हों और आप भी हों और मियां एहतिशाम और यह नाचीज़ बन्दा भी और मेवात के कुछ पुराने तजुर्बेकार भी हों और बाक़ी जिन लोगों के साथ और जितने वक़्त के लिए आप मुझे भेजना चाहें, मैं सफ़र में जाने को तैयार हूं।

बर्मी तालिब इल्म शायद रवाना हो चुके हों[1] और उनकी तरफ़ से ताल्लुक़े ख़ातिर है और उनकी परेशानी में ज़्यादा तबियत मलूल है, काश वे मेरे पास (दो तीन) चिल्ले गुज़ार कर तश्रीफ़ ले जाते तो बहुत सी बरकतों और आसानियों की उम्मीद थी। समझ में नहीं आता कि वे सिर्फ़ अब तक के फ़हम (समझ) की मिक़्दार पर काम किस तरह चला लेंगे। बन्दा नाचीज़ के नज़दीक यह तब्लीग़ शरीअत, तरीक़त, हक़ीक़त तीनों को पूरी तरह समोए हुए है, सो जिस नाज़ुक

1. दारुल उलूम नदवतुल उलेमा के कुछ बर्मी तालिबे इल्मों ने, जिनमें मौलवी मुहम्मद अनवर बर्मी, मौलवी नजमुद्दीन वग़ैरह थे, अपने मुल्क में काम करने का इरादा किया था।

ज़माने में किसी चीज़ का एक तिहाई भी ज़्यादा मुश्किल हो रहा है, वह बग़ैर तालीम और बग़ैर सीखे अपने तिगुने के साथ ज़म हो कर कैसे किया जा सकता है। बहरहाल अल्लाह उनके लिए सहल फ़रमा दें अपनी नुसरत, रहमत, ग़ुफ़रान हर तरह की ख़ैर व बरकत शामिले हाल फ़रमा दें।

19 अप्रैल 1942 ई०

(19)

—अज़ निज़ामुद्दीन

मुकर्रम व मोहतरम दा-म मज्दुकुम!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

जनाबे अली के गरामी नामे में बस्ती के मुताल्लिक़ जो तहरीर था[1], उसके बारे में शेख़ुल हदीस दा-म ज़िल्लुहुम की बातें हुईं। उनकी राय है जो निहायत मुनासिब है और ऐने सवाब मालूम होती है कि बस्तीवाले सालाना जलसा किया करते हैं, जिसमें मदरसा मज़ाहिरुल उलूम से भी हज़रात तशरीफ़ ले जाया करते हैं। अगर वह जलसा क़रीब में होने वाला हो तो उसमें तब्लीग़ को ज़म कर दें, ताकि सहारनपुर के लोग दूसरे सफ़र से भी सुबुक दोश हो जाएं। उसमें शेख़ुल हदीस साहब भी तशरीफ ले आएंगे और अगर उस जलसे में देर हो तो जनाब आली जो तारीख़ मुनासिब समझें, मुकर्रर फ़रमा कर मुत्तला फ़रमा दें। इनशाअल्लाह मुक़र्रर वक़्त पर हाज़िरी की कोशिश करूंगा। सब दोस्तों से सलाम फ़रमा दें।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास

बक़लम इनामुल हसन अज़ इनाम सलाम मस्नून

(20)

फ़वाइद मक्तूब हाज़ा

1. अगर तक़रीर के बाद अमल पर पड़ने की तज्वीज़ न हो तो अवाम में ढिठाई और बे अदबी के लफ़्ज़ बोलने की आदत पड़ जाएगी।

1. करही ज़िला बस्ती में हिदायतुल मुस्लिमीन एक बहुत पुराना मदरसा है, जो मौलवी सैयद जाफ़र अली (बिन कुत्ब अली बस्तवी, वफ़ात 1288 हि०) साहब का क़ायम किया हुआ है, उसके मोहतमिम मौलवी हिदायत अली साहब इस नाचीज़ के वास्ते से मौलवी को ज़हमत देना चाहते थे, ताकि तब्लीग़ की बुनियाद पड़ जाए।

—अज़ निज़ामुद्दीन

मुकर्रम व मोहतरम सैयदी व सैयदे आलम मत्तानल्लाहु बितूले हयातिकुम व अफ़ा-ज़ अलैना शआबीबे बरकातिकुम व नफ़ाना व जमीअ़ल मुस्लिमीन लि उलू मिकुम व ख़ुलूसिकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

जनाब का वालानामा दिल के कमल के खिलने की वजह बना। इस वक़्त इस क़दर अवाइक़ सामने हैं, इधर मियां यूसुफ़ के हाथ में कुछ निकलने की वजह से, उधर मौलवी एहतिशाम के जामा मस्जिद से गिरकर हाथ में चोट लगने या टूटने की वजह से दोनों ख़ास तक्लीफ़ में मुबतला हैं। शेख़ुल हदीस को बुख़ार भी आया और मदरसे के खुसूसी कामों में लगे हुए हैं और इन सब में बेहतरीन मज़बूत रुकावट यह है कि इस वक़्त मेवात में तब्लीग़ के बढ़ावा दिए जाने की ज़्यादा ज़रूरत पेश आई हुई है, वह यह है कि अल्लाह ने कुछ ऐसे अस्बाब पैदा फ़रमा दिए हैं कि अगर दस पन्द्रह दिन के लिए ताक़त जमा हो जाए तो उनका तब्लीग़ के लिए निकलना, 50-60 की तायदाद से हज़ारों की तायदाद की तरफ़ तरक़्क़ी कर सकता है और इस वक़्त की थोड़ी सी ग़फ़लत से इस निकलने में कमी हो गई तो फिर ऐसा मौक़ा आगे के लिए ज़ाहिरी तौर पर नज़र नहीं आता। उधर यह बात मैं समझता हूं जब तक पब्लिक के सामने अमली नमूना न हो तो सिर्फ़ मिंबरों पर की तक़रीर अमल पर पड़ने के लिए काफ़ी नहीं हो सकती। अगर तक़रीर के बाद अमल पर पड़ जाने की स्कीम न हो तो अवाम के अन्दर ढिठाई और बे-अदबी के लफ़्ज़ बोलने की आदत पड़ जाएगी, इसलिए मेरे ख़्याल में इस वक़्त आप और मौलवी हिदायत अली साहब अपने-अपने असरात से जितने आदमी को लेकर आ सकें, लेकर आएं, वरना अपनी-अपनी ज़वाते नफ़ीसा के साथ जल्द से जल्द मेवातियों को फ़रोग़ देने के लिए यहां तशरीफ़ ले आवें और यह आने का ज़माना किसी क़दर काफ़ी है। इस क़ियाम के ज़माने में फिर सफ़र के लिए किसी तश्कील का मश्विरा हो जाएगा, अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि फिर इस सफ़र के लिए कोई बेहतरीन तश्कील पैदा हो जाएगी।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम हबीबुर्रहमान,

7 मई 1942 ई०

(21)

अज़ निज़ामुद्दीन

मोहतरम बन्दा दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

जनाब आली के दावतनामे का अपने लब्बैक की तक़्सीर से जो अफ़सोस हो, वह बजा है और अगर अन्दरूनी नफ़्स के चोर की वजह से असली सबब उसकी गर्मी की परेशानी और सफ़र का तप और सख़्ती हो, तो मैं इंकार नहीं कर सकता।

'वमा उबर्रियु नफ़्सी इन्नन्नफ़-स ल- अम्मारतुम बिस्सूइ' लेकिन मैं उसूली तौर पर अपने नफ़्स को इस पर आमादा करना चाहता हूं कि–

'क़ुल नारु जहन्न-म अशद्दु हर्रा' इस लिए मेरी नज़र में मेरे लिए जो वजह रोक बनी, वह तो एक ज़ाहिरी रुकावट मौलवी ज़करिया, मौलवी यूसुफ़, मौलवी एहतिशाम, इन तीनों को मरज़ों के लिहाज़ के लाहिक़ होने की रुकावट और इस वक़्त तब्लीग़ी मंज़र इसका शिद्दत से तक़ाज़ा कर रहा था कि जिस क़दर भी हो सके, ख़ुद इस जगह कोशिश की ताक़त को समेट कर इकट्ठा किया जाए और हिम्मत से उसको फ़रोग़ देने में अपनी जमईयत को जमा किया जाए और बिखराव से उसकी हिफ़ाज़त की जाए, उसी क़दर आगे के लिए उम्मीद भरी शक्लें पैदा हो सकती थीं।

बस ये वज्हें नाचीज़ बन्दे की ज़ाहिरी नज़र में या वाक़ई थीं या तस्वीले नफ़्स थीं, जो मेरे लिए रोक बनीं, लेकिन इस वजह से तामील न होने का क़लक़ तहरीर के क़ाबिल नहीं है। आंजनाब के यहां से मदद का पहुंचना बहुत ही उम्मीदों से गुदगुदाता है। सब अज़ीज़ों, दोस्तों और ख़ानदान के बड़े-छोटों की ख़िदमत में, वह जो वाजिब है, और दुआ की दरख़्वास्त है। मौलवी एहतिशाम के हाथ की हड्डी दोबारा तोड़ी गई अब उसको इत्मीनान की बतलाई जा रही है। अल्लाह तआला तमानियत के साथ ख़ैरियत से मुकम्मल आफ़ियत को पहुंचा दें, यूसुफ़ के हाथ का घाव रोज़ धोया जाता है और खोला जाता है, बत्ती अभी तक अन्दर जा रही है, वैसे सही हो रही है। सहारनपुर से कई दिन से मौलवी ज़करिया के बाल-बच्चों की ख़ैर-ख़बर नहीं आई।

फ़क़त वस्सलाम

नाचीज़ बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु
26 मई 1942 ई०

(22)

786

मुकर्रम व मोहतरम दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

जनाब ने बहुत बार तहरीर फ़रमाया है कि तेरी तहरीर मेरे ईमान की हयात की वजह है, तो हज़रत! हयात तो जिस्मानी भी बहुत क़ीमती है, ईमान की हयात तो कुछ ऐसी आसान, सहल, क़ब्ज़े की चीज़ नहीं कि जब चाहे, ख़तों में रवाना कर दिया करे, बहरहाल अहवाल की कैफ़ियत का एक तो वह रुख़ है कि अल्लाह के फ़ज़्लों, उसकी इनायतों और उसकी रहमत की क़िस्मों से ताल्लुक़ रखे है, सो उसकी क़िस्में हर तरह की इतनी ज़्यादा हैं कि बारिश या दरिया से तश्बीह देना ज़ुल्म और तंक़ीस है। जामिया मिल्लिया वाले ऊंची हिम्मत के साथ अपने इदारे का हिस्सा बनाने की फ़िक्र में तश्कील सोची जा रही है, इस पिछले जुमा को 20-25 दिल्ली वाले, जिनमें जामिया का भी वफ़्द शामिल था, तज्वीज़ डाक्टर ज़ाकिर[1] साहिब ही की थी, जो बड़े शौक़ और ख़ुलूस से थी, मगर ठीक उस वक़्त पर शदीद बीमारी की वजह से तशरीफ़ न लेजा सके, उतनी ही तायदाद लगभग मेवातियों की थी, लेकिन इतना फ़र्क़ है कि दिल्ली वाले 5-6 दिन काम कर के वापस आ गए, लेकिन मेवात वाले अल्लाह तआला उनके इस्तिक़लाल को क़ुबूल फ़रमाएं और ज़्यादा से ज़्यादा उनकी इक़्तिदा को रोज़ अफ़ज़ूं फ़रमा दें। वह अब का जुमा केराना गुज़ार चुके, अल्लाह चाहे अगला जुमा झंझाना गुज़ारेंगे। बड़ी नुमायां तब्दीली और इंक़िलाब यह है कि आपके तशरीफ़ ले जाने के बाद मसाई पर मेवात के अलावा भी लोग हरकत करते हैं और निकलते हैं, मेवात के उलेमा वाली स्कीम[2] ने कुछ असर क़ुबूल नहीं किया, हक़ीक़त में यह स्कीम बड़ी गहरी है और बहुत ठोस है। ग़ैब पर ईमान यही चाहता है कि बड़ी दुश्वारी और बड़ी कोशिश से जारी हो। अंबिया अलैहिस्सलाम इर्शाद व हिदायत

1. डाक्टर ज़ाकिर हुसैन, जो बाद में राष्ट्रपति हुए।

2. ख़ैरतल रियासत अलवर के एक जलसे के मौक़े पर इस आजिज़ ने मेवात के उलेमा से इस दावत पर मुतवज्जह किया था और अर्ज़ किया था कि इसमें मदरसों की बक़ा है।

में जितने हक़ के मुहर है, शैतानों का इज़्लाल उतना ही यक़ीनी है, इसके वास्ते आप बहुत ही कोशिश करें। क़ाज़ी ज़ैनुल आबदीन[1] और मुहम्मद सुलैमान नूही[2] से आप सीधे-सीधे बात कर लें। अन्दरूनी कैफ़ी, उसकी क़ुबूलियत और तरक़्क़ी इस क़दर है जो विजदान से ताल्लुक़ रखे है, तहरीर को क़ैद में बांधी नहीं जा सकती। और रही दूसरी जानिब, इस बारे में अपने क़ुसूर और कोताही की, मैं अपनी मसाई को, अपने दर्द को, इस बारे में अपनी आवाज़ को, जिस क़दर अल्लाह तआला ने मुझे इस बारे में वज़ूह फ़रमाया है, उससे कुछ निस्बत नहीं पाता, इसलिए करम हो तो उसकी शायाने शान है और अद्ल हो तो हरगिज़ नजात की कोई सूरत नहीं।

फ़क़त वस्सलाम

मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु, 7 अगस्त 1942 ई०

अज़ राक़िमुल हुरूफ़ बन्दा मुहम्मद यूसुफ़ सलाम मस्नून व दुआ की गुज़ारिश

(23)

अज़ निज़ामुद्दीन, दिल्ली

16 अगस्त

मुकर्रम व मोहतरम! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

जनाबे आली के गरामी नामे ने अर्से से हम लोगों को तश्ना काम बना रखा है, ख़ुदा करे माने बख़ैर हो। आपके यहां के हालात का इंतिज़ार है। मेरा इरादा शाबान का आख़िरी हिस्सा सहारनपुर गुज़ारने का था, मगर मुबल्लिग़ों की जितनी तायदाद की बुनियाद पर यह इरादा था, उतनी तायदाद इस वक़्त वहां मौजूद नहीं, सिर्फ़ तीस के क़रीब आदमी वहां पर इस वक़्त काम कर रहे हैं। अगर इस वक़्त काफ़ी तायदाद में मुबल्लिग़ीन वहां मौजूद हुए, तो इनशाअल्लाह शाबान का अख़िरी हिस्सा वहां पर गुज़ारने का इरादा है, अल्लाह तआला कामियाब फ़रमाएं।

---

1. क़ाज़ी ज़ैनुल आबिदीन मुहम्मद सज्जाद साहब मेरठी
2. मौलवी सुलैमान साहब बाम्मोटवी, जो उस वक़्त नूह के मदरसा मुईनुल इस्लाम में मुदर्रिस थे।

मदरसा मज़ाहिरुल उलूम के तालिब इल्म निस्बतन कुछ ज़्यादा तैयार नज़र आते हैं, अगरचे हक़ीक़त में बहुत ज़्यादा दूरी है, इसमें आप लोगों की मदद और तवज्जोह की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। पिछले इतवार को मेवात के अलवर के क़रीब जलसा हुआ, जिसमें शेख़ुल हदीस साहब भी तशरीफ़ ले गए थे, जलसा दो जगह हुआ, जलसे की बरकतें तहरीर में नहीं लाई जा सकतीं।

जनाबे आली के आस-पास जो काम हो रहा है, उसकी रिपोर्ट के इंतिज़ार में हैं। सुना है कि जामिया मिल्लियया में तब्लीग़ी सिलसिला शुरू हो गया है बहुत नाज़ुक मसला है, उसके फलने-फूलने की कुछ शक्ल निकालें और कम से कम दुआ से ज़रूर मदद फ़रमाएं। फ़क़त वस्सलाम

(24)

अज़ इमामुलहसन कांधलवी, बाद सलाम मस्नून यह है कि जनाब के गरामीनामा का इंतज़ार भी अजब कैफ़ियत पैदा करने वाला है।

फ़वाइद मक्तूब हाज़ा

फ़ 1. अल्लाह जल्ल शानुहु कभी-कभी अपने बन्दों से ख़ैर का कलिमा ऐसे मौक़े पर अदा कराता है कि कहने वाले को मुख़ातब के फ़ायदा उठाने का वह्म व गुमान भी नहीं होता।

अज़ निज़ामुद्दीन
18 सितम्बर 1842ई०

मुकर्रम व मोहतरम बन्दा हज़रत मौलवी साहब दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। हज़रत आली जनाब का हदिया चुन्नीदा हदिया नातिक़ा[1] मुजिबे इज़्ज़त और सरफ़राज़ी की वजह और हज़ारों मूजिबे मन्नत व मरम हुआ। जनाब का यह फ़रमाना कि अपकी पूरी

1. रमज़ानुल मुबारक की छुट्टी में इस ख़ाकसार के ख़ास साथी तब्लीग़ में से दारुल उलूम के तलबा मौलवी काज़ी मुईनुल्लाह ग्वालियरी, मौलवी अब्दुल ग़फ़्फ़ार जौनपुरी, मौलवी मुहम्मद मुस्तफ़ा बस्तवी और मौलवी मुहम्मद ज़हूर फ़तहपुरी निज़ामुद्दीन गए। मैंने मौलवी रहमतुल्लाहि अलैहि को लिखा कि यह दोस्त मेरी सीधी कोशिशों की और उस वक़्त तक की कमाई हैं, इस पर यह गरामी नामा आया।

कमाई है, हज़रत आप जरा फ़िक्री क़ुवत से काम लें, यह बात नहीं है, बल्कि आपकी बहुत-सी कमाइयां हैं। मौलवी अब्दुल ग़फ़्फ़ार[1] साहब आपकी कमाई हैं, मौलवी हिदायत अली साहब[2], जो बीसियों बल्कि पचासों उलेमा के मरजा (रुजू करने की जगह) हैं, वे जनाब ही की कमाई हैं, अल्लाह जल्ल शानुहू कभी-कभी कलिमा तैयिबा अपने नेक बन्दो से ऐसे मौक़े पर अदा कराता है कि कहने वाले को मुख़ातब के नफ़ा उठाने का वहम व गुमान भी नहीं होता, बहरहाल बहुत गरमी क़द्र तोहफ़ा जनाब ने रवाना फ़रमाया, अल्लाह आपको जज़ाए ख़ैर दें, आपकी सई को मश्कूर फ़रमा दें। मैं अपनी हालत को क्या अर्ज़ करूं, 'दो गूना रंज व अज़ाब अस्त जाने मजनूं रा'। जिस वक़्त से तलबा (तालिबे इल्मों) का तबक़ा इस काम की तरफ़ मुतवज्जह हुआ है, उस वक़्त से मेरी तबियत का एक नया बोझ है, चूंकि कोई काम कभी किसी तरह बे-किए नहीं आ सकता। अब जितनी मुद्दत में यह काम आ सकता है, उसके मकारेह और उसकी बरदाश्त और उसमें इस्तिक़्लाल बस रमज़ानुल मुबारक है। अल्लाह से दुआ करने की चीज़ है, अल्लाह के बहुत अहसान हैं। हमें ताक़त दें कि हमारी नज़र हक़ तआला की आसानी से कह देने पर रहे और तरफ़तुल ऐन जो ज़ाहिर अस्बाब की दुश्वारी यक़ीनी है, उस पर हमारी नज़र न जावे। सिर्फ़ ह्यली सूरत हिम्मत की बक़ा की है, बहरहाल पूरा मंज़र जनाब तशरीफ़ आवरी के बाद देखेंगे, बड़ी ख़ुशी की चीज़ यह है कि मज़ाहिरुल उलूम से भी 14 नफ़र कुछ मुकम्मल सनद लिए हुए और ज़्यादातर दर्मियानी तलबा भी तब्लीग़ के लिए आए, कुछ वापस भी हुए और ज़्यादातर बाक़ी हैं। ख़्वाजा अब्दुल हई भी आख़िर अश्रा में इस मस्जिद में एतक़ाफ़ फ़रमा रहे हैं।

(25)

सहारनपुर, मदरसा मज़ाहिरुल उलूम

मुकर्रम व मोहतरम दा-म मज्दुकुम

---

1. मौलवी अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहब नदवी नगरामी

2. मौलवी हिदायत अली साहब मुहतमिम मदरसा हिदायतुल मुस्लिमीन करही, ज़िला बस्ती।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

जनाब का गरामी नामा बाइसे सरफ़राज़ी हुआ। एक सफ़र सहारनपुर का दरपेश था, ठीक रवानगी के वक़्त मौसूल हुआ। हज़रते वाला ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि ये दो बातें लिख देना जो ख़िदमत में हाज़िर हैं– एक यह कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम[1] का इर्शाद है– रमज़ानुल मुबारक़ महीनों में अफ़ज़ल महीना और हर नेकी को सैकड़ों कर देने वाले और मदरसे के मश्ग़लों से मदरसे वालों को फ़ारिग़ कर देने वाले महीने में इस काम को शुरू न करना शैतान का फ़रागत के वक़्त को निकाल देना है। इस काम को इस महीने में तो ख़ासतौर पर करना चाहिए कि मदरसे वालों के फ़राग़त का वक़्त है, साथ ही हर चीज़ की तिजारत के क़ीमती होने के ख़ास वक़्त होते हैं। इस काम के ज़्यादा से ज़्यादा क़ीमती होने का यही ज़माना है। यह शैतान का धोखा है कि इस काम को रमज़ान के बाद तक शुरू न किया जाए। हज़रत नाज़िम साहब इसके बारे में बात फ़रमाएं।

दूसरी यह कि नमाज़ की जहिरी सूरत यह लिबास है। इसका लिबास और इसकी असली हक़ीक़त ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ और हुज़ूरे क़ल्ब है। नमाज़ की ज़ाहिरी तरक़्क़ी से खुश होना आगे की तरक़्क़ी से रोक देता है। जिस क़दर मुम्किन हो, उसकी हक़ीक़त और मग़ज़ पर आमादा करना और लगाना चाहिए। अरबी ज़ुबान की सुन्नत को ज़िंदा करने से मसर्रत हुई[2] अल्लाह तआला दूसरे मदरसे वालों की तवज्जोह का मरकज़ बनाएं, आमीन, तमाम दोस्तों से सलाम फ़रमा दें।

फ़क़त वस्सलाम

इनामुल हसन कांधलवी

हज़रत मद्द जिल्लहू अज़ इनामुल हसन सलाम मस्नून, हज़रत वाला को मुस्तक़िल जवाब लिखाने की फ़ुर्सत बज़ाहिर मुश्किल थी, इसलिए यह मज़्मून बता दिया था।

---

1. अहमद बुख़ारी, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा वग़ैरह।

2. तबलीग़ के लिए बाहर जाने में कुछ दिन यह तरीक़ा रहा कि मदरसे के तालिबे इल्म आपस में अरबी में बात-चीत किया करें, मौलवी को इसकी ख़बर दी गई तो ख़ुशी ज़ाहिर की।

(26)

2 फरवरी 1943 ई०, मंगल का दिन

786

अल मुख़्दूम अल मुकर्रम व मोहतरम बन्दा हज़रत मौलवी अबुलहसन अली नदवी साहब ज़ी-द लुत्फ़ुहू

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। उम्मीद कि मिज़ाजे गरामी बख़ैर होगा। वाला नामा जुमा के दिन मिल कर बड़ी ख़ुशी की वजह हुआ। आपको मालूम है कि अज़ीज़म मुहम्मद यूसुफ़ एक जमाअत लेकर मेवात में गश्त के लिए गया हुआ है, अगर हो सके तो बहुत बेहतर हो कि आप अपने मुताल्लिक़ लोगो में से एक दो दिन या जितने ज़्यादा हो सकें, इन के साथ कुछ दिनों गश्त के लिए रवाना फ़रमा दें, ख़ासतौर से अगर मौलवी मुहम्मद मंज़ूर साहब तैयार हो जाएं तो बहुत ही बरकत की वजह बनेगा, साथ ही ऐसे मौक़ों पर गश्त में शरीक होने से इस काम की हक़ीक़त सामने आ सकती है। फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बक़लम मुहम्मद सुलैमान ग़ुफ़ि-र लहू

(27)

14 फरवरी 1943 ई०

मुकर्रमी व मोहतरमी, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मिज़ाजे मुबारक, कार्ड आपका मौसूल हुआ, हालात मालूम हुए! अज़ीज़म मुहम्मद यूसुफ़ व इनामुल हसन वग़ैरह की जमाअत ने मेवात से इस बार बहुत सी जमाअतें निकाली हैं। अल्लाह का शुक्र है कि उनकी कोशिशों से ज़्यादा आदमी आ रहे हैं, कराची का वफ़्द जा चुका है, लाहौर तक मौलवी मुहम्मद एहतशामुल हसन साहब तशरीफ़ ले गए थे, कल सनीचर के दिन शाम तक पहुंच गए होंगे, लाहौर में जमाअत ने बहुत जमकर काम किया। उसके फ़ज़्ल से उसकी मंशा के मुताबिक़ कामियाबी हुई। ऊंचे तबक़े के लोगों ने बहुत ज़्यादा दिलचस्पी ली, इस हफ़्ते में शायद आख़िर तक मौलवी यूसुफ़ वग़ैरह भी अपने एक महीने के गश्त से फ़ारिग़ होकर वापस हो जाएंगे। फ़क़त वस्सलाम

मौलवी मंज़ूर अहमद साहब[1] मायादार हैं, चोर हमेशा मायादार पर आया करता है इसलिए मुझे इत्मीनान नहीं कि जो रुकावटें उनके लिए इससे पहले इस तरफ़ आने में रोक बनी थीं, वे अब ख़त्म हो गई हैं। ख़ैर, यह मालूम होना चाहिए कि मौलवी के आने का कौन-सा महीना है, जिसमें उन्होंने आने का इरादा फ़रमाया है। जिस कार्ड का यह जवाब है, चूंकि इसमें रवाना करने वाले का नाम नहीं था, इसलिए मौलवी अबुल हसन अली के नाम रवाना किया जाता है, मज़्मून असल साहिबे ख़त के नाम है।

फ़क़त वस्सलाम

(28)

12 मार्च 1943 ई०

मुकर्रम व मोहतरम जनाब मौलवी साहब दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, उम्मीद कि मिज़ाजे गरामी बख़ैर होगा। वाला नामा शरफ़े सुदूर लाया, जवाब के तौर पर अर्ज़ है, लखनऊ के बारे में शेख़ुल हदीस साहब आपके ख़तों और आपकी बरकत से बहुत ज़्यादा शर्मिन्दा हैं कि तशरीफ़ न ला सके, ख़ुद मुझ पर उन्होंने कई बार तक़ाज़ा फ़रमाया है। एक तो जनाब की बीमारी इसमें रुकावट रही कि आपके मौजूद न होने पर जाना, न जाना, फिर यहां के लगातार मशाग़िल व मवानेअ़ भी सामने आते रहे, इनके अलावा मौलवी एहतशामुल हक़ साहब की बीमारी भी है। 'कुल्लु अमरिन मरहूनुन बिअव क़ाति ही'।

इसलिए अब तक की ताख़ीर ख़ैर की वजह ही हो सकती है। अब मैं कल सनीचर के दिन 13 मार्च को साहब ज़ादी मौलवी ज़हीरुल हसन साहब, कांधला की शादी की तक़रीब के सिलसिले में कांधला जा रहा हूं, वहां शायद शेख़ुल हदीस साहब तशरीफ़ लावेंगे, वहां कोई बात-चीत करके मुत्तला करूंगा। आपकी तन्दुरुस्ती के ज़माने का लिहाज़ बहुत ज़रूरी है। मौलवी हिदायत अली साहब को भी जवाब भेजा गया है, उनके पहले ख़त मिल न सके। —फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम मुहम्मद सुलैमान ग़ुफ़ि-र

1. मौलवी मुहम्मद मंज़ूर साहब नोमानी, एडीटर 'अल-फ़ुरक़ान'

लहू लिखने वाले अहक़र मुहम्मद सुलैमान का ख़िदमते वाला में सलाम मस्नून अर्ज़ और दुआ की दर्ख़्वास्त

मुहम्मद सुलैमान, ग़ुफ़िरलहू 5 रबीउल अव्वल सन् 62 हि०

(29)

26 मार्च 1943 ई०, जुमा

हज़रतुल मुकर्रम ज़ी-द मज्दुकुम, सामी

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

उम्मीद कि मिज़ाजे गरामी बख़ैर होगा। आज नमाज़ जुमा के बाद वाला नामा सादिर होकर काशिफ़े हालात हुआ। मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से आपसी इख़्तिलाफ़ात की ख़लीज ख़त्म फ़रमाएं।[1]

हमारे लखनऊ आने के इल्तिवा के बारे में सही राय तो शेख़ुल हदीस ही तहरीर फ़रमावेंगे, लेकिन मेरी अपनी राय में मदरसा के इख़्तिलाफ़ के दूर करने के लिए यह सूरत ज़्यादा मुनासिब और बरकत वाली साथ ही आपसी इत्तिफ़ाक़ (मेल) की दावत देने वाली होगी कि आप मदरसे वालों को इस काम के लिए ख़ासतौर से हमारे आने के ज़माने में ज़्यादा से ज़्यादा तैयार फ़रमा दें और इन दिनों में बहुत ज़यादा इन्हिमाकसे वे इसमें हिस्सा लें, तो मुझे पूरी उम्मीद है कि इनशाअल्लाह आपस का इख़्तिलाफ़ ज़रूर ख़त्म हो जाएगा।

मौलवी ज़ियाउन्नबी साहब[2] यहां तश्रीफ़ नहीं लाए। मौलवी एहतिशामुल हसन साहब आजकल कांधला में हैं, जल्द ही आने की उम्मीद है। निहायत मुनासिब है कि जनाब मौलवी मंजूर अहमद साहब को यह तहरीर फ़रमा दें कि जैसे उन्होंने अब से पहले और दूसरे कामों के लिए मुस्तक़िल वक़्त दिया है, कुछ वक़्त मुस्तक़िल तौर से इसके लिए भी इनायत फ़रमा दें।

फ़क़त वस्सलाम

मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

---

1. दारुल उलूम में तलबा और कुछ मुदर्रिसीन और मंतज़िमीन में कुछ कशाकश पेश आ गई थी, जिस की तरफ़ इशारा है।

2. मौलवी ज़ियाउन्नबी अब्बासी साहब जौन पूरी, हाल मुक़ीम कानपुर

लिखने वाले नाचीज़ मुहम्मद सुलैमान का भी ख़िदमते वाला में सलाम मस्नून अर्ज़ है।

(30)

8 जून 1943 ई०, मंगल,

हज़रत मोहतरम ज़ी-द मुज्दकुमुल आली

सलाम मस्नून! आपका गरामी नामा सामी मौसूल होकर बाइसे सद इज़्ज़ व इफ़्तिख़ार हुआ। अल्लाह तआला ने नबियों को जिस राह पर भेजा है, शैतान उसी राह से हटाने और उखाड़ने के लिए आया हुआ है। जो आदमी जितना लगा हुआ है, उसी की मिक़्दार में शैतान उसके उखाड़ने की कोशिश करता है। उलेमा किराम भी इन्हीं में से हैं, फिर उलेमा में से ख़ास तौर से वे लोग जो लगे हुए हैं, या लगने का इरादा कर चुके हैं उन्हीं में से आप हैं। जब आप इस काम में लगने का पूरा इरादा और मुकम्मल इरादा फ़रमा चुके तो फिर इतनी देर की क्या वजह, या तो अपनी मक़ामी जगह में काम में लगे रहने की कोई मुस्तक़िल शक्ल पैदा कीजिए, या फिर जल्द से जल्द यहां चले आइए। 2 जुलाई 1943 ई० मुताबिक़ 28 जमा दस्सानी सन् 62 हि०, जुमा के दिन नूह में जलसा है, उससे जितने पहले आप आ सकें, तशरीफ़ लावें, साथ ही मौलवी मंज़ूर अहमद साहब को भी इसकी इत्तिला कर दें, आजकल आपके मदरसे की तालीम की तातील का ज़माना हैं, तलबा ग़ालिबन फ़ुरसत में होंगे, जिस तरह रमज़ान में आपने उनके निकालने की कोशिश फ़रमाई थी, अब भी अगर मदरसे के खुलने तक उनको तैयार करके यहां रवाना फ़रमावें तो उनके लिए बेहतर होगा और मदरसे की इस्लाह की तरफ़ बढ़ने का अच्छा ज़रीया है। फ़क़त वस्सलाम

बंदा मुहम्मद इलयास, उफ़ि-य अन्हु

बक़लम मुहम्मद सुलेमान ग़ुफ़ि-र लहू

(31)

मख़्दूमी व मोहतरमी हज़रत सैयद साहब दा-म बरकातु कुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

गरामी नामा मिला। जवाब में ताख़ीर बहुत सी वज्हों से हुई। उनमें से यह भी है कि मौलवी यूसुफ़ की बहन बहुत ज़्यादा बीमार है. सहारनपुर से

इलाज के लिए दिल्ली लाई गई है, कमज़ोर बेहद है, अपनी जगह से नक़्ल व हरकत मुश्किल है और तमाम घर वाले मलेरिया में पड़े हुए हैं। अपनी फ़ितरी कमज़ोरी से उसके सही इलाज को छोड़ कर (जो तब्लीग़ में लग जाना और आप जैसे लोगों, ख़ासतौर से सैयदों की ख़िदमत है) माद्दी इलाज में मश्ग़ूली है, बहरहाल निहायत नदामत है और जवाब में ताख़ीर का उज़्र नहीं है, बल्कि क़ुसूर का एतराफ़ और इज्ज़ का इज़्हार है।

हज़रत फूफी साहिबा रहमतुल्लाहि अलैहा[1] के इंतिक़ाल की ख़बर से इंतिहाई क़लक़ व सदमा हुआ। हज़रत फूफी साहिबा का साया आपके सर से नहीं उठा, बल्कि तमाम उन मुतवस्सिलीन के सर से उठा है, जो सैयद साहब के दामन से वाबिस्ता हैं और जिनके दिलों में हज़रत सैयद साहब की अज़्मत व मुहब्बत रासिख़ है, सब ग़म में शरीक है और सबको शरीक होना चाहिए। अगर किसी को एहसास न हो, यह उसकी बेहिसी है। अल्लाह तआला मरहूमा को अपने महासिन व मकारिम और उन हक़ों के मुताबिक़, जो हम सब पर वाजिब है, बल्कि अपने फ़ज़्ल व करम के मुनासिब दरजात की तरक़्क़ी और रिज़ा अता फ़रमाएं।

आपके तशरीफ़ लाने की ख़बर से ख़ुशी है और आपके ग़म से ग़म आं मोहतरम की तवज्जोहाते आलिया से तब्लीग़ को जिस क़दर नफ़ा पहुंचा है, अब तक लगने वालों में से किसी से नहीं पहुंचा। अल्लाह तआला आपकी मुक़द्दस तवज्जोहों को इस तरफ़ और ज़्यादा से ज़्यादा मबज़ूल फ़रमाएं।

मर्हूमा के ईसाले सवाब के लिए तब्लीग़ के इस काम से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है, ख़ास तौर से आप जैसा इल्म व अमल वाला और ज़ोहद व तक़्वा वाला तवज्जोह से उसमें लग कर करे। मर्हूमा के ईसाले सवाब की नियत से ज़्यादा से ज़्यादा इस तरफ़ तवज्जोह फ़रमाएं, आपके तशरीफ़ लाने का इंतिजार है।

हज़रत फूफ़ा साहब[2], हज़रत चचा साहब[3] और तमाम मुताल्लिक़ लोगों की

---

1. ख़ाकसार की फूफी अह्लिया मौलवी सैयद तलहा साहब ने टोंक (राजपूताना) में इंतिक़ाल किया, उनकी देख-भाल और ख़िदमत के लिए वहां जाना हुआ था, वहीं से मौलवी को ख़त लिखा, जिसमें मरहूमा के लिए मग़्फ़िरत की दुआ की दरख़्वास्त थी।

2. मौलवी सैयद तलहा साहब

3. जनाब सैयद मुहम्मद इस्माईल साहब मरहूम, जो हज़रत सैयद साहब के सगे नाती के लड़के और उस वक़्त उनके सबसे क़रीबी वारिस थे।

ख़िदमाते आलिया में सलाम अर्ज़ कर दें। मौलवी एहतिशामुल हसन साहब और क़ुरैशी साहब[1] एक जमाअत के साथ 22 दिन से बंगाल गए हुए हैं, शायद जुमारात तक दिल्ली पहुंचेंगे, तवज्जोहाते आलिया और दावाते सालिहा का उम्मीदवार हूं। फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास गुफ़ि-र लहू, 27 अक्तूबर सन् 43 ई०

(32)

786

मुकर्रम बन्दा[2] ज़ादत मकारिमकुम!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। जनाब का गरामी नामा अज़ीज़ी मौलवी यूसुफ़ सल्लमहू के नाम आया, जिसमें तहरीर था कि मेरी तहरीरों के हिस्से जमा किए जा रहे हैं[3] इस जुम्ले से बड़ी ख़लिश हुई, क्योंकि मैं पहले ख़तों में मौलवी अबुल हसन अली साहब को भी लिख चुका हूं कि तहरीरें अमल का वसीला हैं और मेरी तहरीरें ही क्या, तहरीरें अगर काफ़ी होतीं तो हज़रत सैयद साहब और हज़रत मुजद्दिद साहब रह० और शाह वलीयुल्लाह साहब रह० की तहरीरें कम नहीं और इनसे ऊपर क़ुरआन व हदीस भी इस ज़माने के बग़ैर अमल के नाकाफ़ी हो रहे हैं, तो इस वक़्त अमल की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, ताकि पिछली तहरीरें भी कारामद हों, उसी के मातहत यह अर्ज़ करता हूं कि 16 जनवरी को नूह में मेवात के चौधरी और ज़िम्मेदार लोगों को जमा किया गया है, जो मेवात ख़ित्ते के बड़े समझे जाते हैं, ये बहुत अजनबी हैं और इस काम से बहुत दूर, उनको इस काम में लगाने की नियत से चार पांच दिन पहले और पांच सात दिन बाद क़ियाम की नियत से जितने लोगों को साथ ला सकें, तशरीफ़ ला कर अमल के सींचने में कोशिश फ़रमाएं, तमाम मुहब्बत करने वालों से सलाम फ़रमावें। फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास

1. जनाब मुहम्मद शफ़ी साहब क़ुरैशी मौलवी से एतक़ाद रखने वाले और उनके ख़ास एतमाद के आदमी और एक बड़े ताज़िर

2. बनाम मौलवी अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहब जौनपुरी,

3. मौलवी के ख़तों के हिस्सों से अलग एक रिसाला तर्तीब दे रहा था, जो बाद में 'एक अहम दीनी दावत' के नाम से छपा।

(33)

786

बिइस्मिही सुबहानहू

हज़रत मोहतरम ज़ी-द मज्दुकुमुस्सामी! सलाम मस्नून, मिज़ाज सामी, वाला- नामा मिला, तब्लीग़ी हालात से आगाही हुई, अप्रैल में जमाअत का आना मुबारक हो,[1] मगर मुनासिब यह मालूम होता है कि इससे पहले कि वह जमाअत यहां तशरीफ़ लाए, अप्रैल के पहले अगर जनाबे वाला की निगरानी में, उसूलों की पाबन्दी करते हुए वहीं पर कुछ दिनों काम कर ले और इस तरीक़े से कुछ काम की मुनासबत पैदा कर ले, तो फिर अप्रैल में यहां आना बहुत ज़्यादा फ़ायदेमंद होगा, इसलिए इस मुक़र्ररा वक़्त से पहले इस जमाअत से आप अपनी निगरानी में वहां काम कराएं।

मैं अपनी तन्दुरुस्ती के लिए दुआ करता हूं[2], मगर इस शर्त के साथ कि मैं अपने वक़्तों के निज़ामुल औक़ात से गुज़ार सकूं और मेरे वक़्त का कोई हिस्सा लायानी (बेमतलब) कामों में न लगे, जैसा कि मेरी मौजूदा हालत अब है, जो चीज़ मेरे बग़ैर न हो सके, उसमें दख़ल देने वाला बनूं, वरना सबका इंतिज़ाम जमाअत कर ले, मुझसे मश्विरा लेते रहें। यह सबक़ मैंने अपनी इस बीमारी से हासिल किया है। मुहम्मद राबेअ़ चले गए[3], मौलवी अब्दुल्लाह साहब यहां मौजूद हैं[4], तलबा कल चले जाएंगे।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बक़लम मुहम्मद सुलैमान गुफ़ि-र लहू, 14 मार्च सन् 1944 ई०

---

1. पेशावर से इस ख़ाकसार ने लिखा था कि अप्रैल में एक जमाअ़त यहां से दिल्ली हाज़िर होगी उसका जवाब है।

2. मौलवी का मरज़े वफ़ात शुरू हो चुका था और बीमारी में तेज़ी थी, अरीज़े में अर्ज़ किया गया था कि आपकी ज़िंदगी उम्मत की अमानत है और दीन की मिल्कियत, इसलिए दीन की नुसरत समझकर अपनी सेहत के लिए दुआ फ़रमाएं।

3. मुहम्मद राबेअ़ सल्लमहू मक्तूब इलैहि के भांजे जो दिल्ली साथ गए थे और उनको छोड़ कर ख़ाकसार पेशावर गया था।

4. मौलवी अब्दुल्लाह साहब फुलवारवी नदवी, मुदर्रिस दारुल उलूम।

(34)

786

मुकर्रम व मोहतरम जनाब मौलवी अबुल हसन अली साहब दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

जनाब आली का 20 अप्रैल से बराबर इंतज़ार है। जनाब की काम के साथ जो दिलबस्तगी है, उसी की वजह से हम सबको आपकी एहतियाज और ज़रूरत है और आपको इसमें ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त और हिम्मत सर्फ़ फ़रमाने की ज़रूरत है। इस वक़्त फ़ौरी एक अहम ज़रूरत सामने है, वह यह है कि मुबल्लिग़ीन की मोतदबा (उल्लेखनीय) जमाअत कराची गई हुई है, वहां से एक तार जनाब को दावत का आया है, जिसकी सूरत यह है कि हैदाराबाद सिंध में एक बड़ा जलसा होने वाला है, उसमें अकाबिर (बड़े लोग) जैसे मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साहब और मौलवी तैयब वग़ैरह उम्मत के अकाबिर उलेमा शिरकत फ़रमा रहे हैं। उसमें तब्लीग़ी दावत की अहमियत के साथ बयान करने और इस काम पर तैयार करने के लिए बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। आप इसको अल्लाह से मांगते हुए और उसी पर भरोसा फ़रमाते हुए और इस्तिक़्लाल और दिल जमई के साथ दावत देने के अज़्म से हैदराबाद सिंध तशरीफ़ ले जाएं इनशाअल्लाह तआला अल्लाह तआला की ज़ात से पूरी उम्मीद है कि जनाब के लिए बहुत ज़्यादा ख़ैर व सआदत की वजह बनेगा।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास बक़लम इनामुल हसन

ख़र्च की जो जनाब को ज़रूरत है, वह हज़रत शैखुल हदीस मद्दज़िल्लहू से ले लें।

बनाम मियां जी मुहम्मद ईसा

इस मक्तूब के फ़वाइद–

फ़ 1. शैतान का हमला और रुकावट पूंजी की क़ीमत और गरानी के जैसी होती है। **फ़ 2.** तरीक़त तीन चीज़ों व मज्मूआ है, सोहबत (आदाब व अज़्मत के साथ), नफ़्स के हक़ (जबकि लज़्ज़तों से बचे हुए हों और अल्लाह के हुक्म के

मातहत निगहदाश्त हो) तीसरे ज़िक्र (पाबन्दी, दिल की बेदारी और अल्लाह की रिज़ा के लिए मशक़्क़त के साथ) फ़ 3. क़ियामत के हालात का ध्यान और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक़ का मुराक़बा।

अज़ निज़ामुद्दीन!

इनायत फ़रमाएम मियां मुहम्मद ईसा साहब नव्वरकुमुल्लाहु बिनूरिल आमालि व सब्बतकुम अलल इस्लामि

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

आपके एक के बाद दो गरामी नामें पहुंचे। मुझे बहुत अफ़सोस हुआ और ताज्जुब है कि आपके पहले गरामी नामे का जवाब नहीं गया। मैं अपने ध्यान में कभी का जवाब लिख चुका था, शायद फ़ीरोज़पुर में, वह जवाब पहुंचा होगा और मियां इलयास ने रवाना नहीं किया है। बहरहाल आपके कुल हालात को देखते हुए आंखों को ठंडक और दिल को राहत और ख़ुशी हुई।

मेरे प्यारे अज़ीज़! न करना एक ऐब और करना सौ ऐब रखता है। आख़िरत के काम पर खड़े होने वाले के लिए शैतान के हमले और रूकावटें माया की क़ीमत और गरानी जैसी होती हैं, लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी मदद शामिले हाल रहे, तो 'इन-न कैदश-शैता-नि का-न ज़ईफ़ा'० (बेशक शैतान की चाल कमज़ोर और फुसफुसी होती है) अल्लाह तआला आपको उसकी चालों से बचाए रखें और रुश्द व हिदायत और अपनी रिज़ा के रास्ते पर इस्तिक़ामत बख़्शें, तुम्हारी आंखें अपने बीवी-बच्चों और मां-बाप की तरफ़ से दीनी सर-सब्ज़ियां देख कर ख़ुश व ख़ुर्रम रखें, ज़िक्र के बारे में तस्बीह में ज़्यादती के मुताल्लिक़ असल यह है कि बग़ैर सोहबत के बतला देना ख़तरे से ख़ाली नहीं है। यह तरीक़त तीन चीज़ों के मज्मूओं का एक नुस्ख़ा है। सब मिला कर हम वज़न रहें, तो फ़ायदा पहुंचाता है, वरना नुक़्सानदेह होता है। वे तीन चीज़ें हैं—

एक सोहबत है, जबकि मय अपने आदाब और अज़्मत वग़ैरह के हो,

दूसरे अपने नफ़्स के हुक़ूक़, जबकि लज़्ज़तों से दूर हों और अल्लाह के हुक्म के मातहत निगहदाश्त हो,

तीसरे ज़िक्र के सब मामूलात, जबकि इस्तिक़्लाल और बेदार दिली और

ख़ालिस अल्लाह की रिज़ा के लिए नफ़्स को मशक़्क़त में डालने की नीयत से हों। नफ़्स एक-एक क़दम करके अपनी लज़्ज़त और हिस्से का रास्ता निकालता रहता है, अल्लाह उससे बचाए रखे। अगर आपसे ज़िक्र के बाद हो सके, तो मेरे से मिलने तक क़ियामत तक के हालात का जिस क़दर इस्तिक़लाल से हो सके उसके हक़ और अपने ऊपर आने वाला समझते हुए ध्यान किया करो और फिर जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दिल से तस्दीक़ किया करो कि जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बतला गए है, वही आख़िरत में काम आने वाला है।

1. वित्रों में कानों तक हाथ उठा लेने चाहिएं, जैसे तकबीरे तहरीमा में,

2. भूले से दोनों में एक सूरः पढ़ने से इस्तग़्फ़ार करे, आगे बचे और नमाज़ हो जाएगी।

3. 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास' पहली रक़अत में पढ़े, तो इस बारे में यह है कि आलमगीर इमामों का इंतिख़ाब किया करते थे। एक बार एक इमाम ने पहली रक्अत में 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास' पढ़ी और उसके बाद 'अलीफ़-लाम-मीम' पढ़ी, तो आलमगीर ने उसका दर्जा बढ़ा दिया, बस मुझे यही याद है।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम हबीबुर्रहमान

(2)

फ़वाइद मक्तूब हाज़ा

फ़ 1. असल मदार मौत के वक़्त सरगर्मी पर है।

फ़ 2— दीन के काम मज़ा आने के वास्ते नहीं हैं, बल्कि अज़्मते हुक्म के साथ इम्तिसाले अम्र और रहमत का यक़ीन पैदा करने के लिए हैं।

फ़ 3— बन्दगी की राह में सर पर आरे का चलना और तख़्ते सुलेमानी का मिलना दोनों नज़र अंदाज़ कर देने के क़ाबिल हैं।

फ़ 4— अमल बिला सोहबत और सोहबत बिला अमल ख़तरे से ख़ाली नहीं।

फ़ 5— जो शुरू से क़ब्ज़ व बस्त के नज़र अंदाज़ कर देने का आदी न हो गया, वह फिसले बग़ैर न रहेगा,

फ़ 6— हुक्म के तहत हलाल व हराम का ध्यान करना दीन है और हुक्म से नज़र हटा कर कोई और वजह ज़रूरी होने की क़रार देना दुनिया है।

फ़ 7— दीन का काम जी लगने की वजह से करना भी दुनिया है।

अज़ीजी मुहम्मद ईसा साहब!

अज़ाक़नल्लाहु व ईयाकुम हलावतल ईमानि व ज़ौक़ल ईक़ान!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

अल्लाह पाक का बहुत बड़ा शुक्र है और हज़ार-हज़ार शुक्र है कि हक़्क़ जल-ल व अला शानुहू ने ज़िक्र की शुरूआत पर क़ुबूलियत की निशानियां मुरत्तब फ़रमाईं, बारगाहे अक़दस से धक्के देने पर शुरूआत नहीं फ़रमाई, उसका जितना भी शुक्र अदा किया जाए, वह कम से कम है। अल्लाह तआला आपके लिए मुबारक फ़रमावें और सबात से हर रोज़ बढ़ती तरक़्क़ी देते हुए मौत के वक़्त निहायत सरगर्मी से अपने में मश्ग़ूल होते हुए मौत मुक़र्रर फ़रमाएं। असल मदार मौत के वक़्त सरगर्मी का है, मेरे अज़ीज़! कुछ बातें हमेशा ध्यान रखने के वास्ते ज़रा सुन लें।

एक यह है कि दीन के जितने काम हैं, वे मज़ा आने के वास्ते नहीं, बल्कि

अल्लाह तआ़ला के हुक्म की अज़्मत के मुवाफ़िक़ इम्तिसाले उम्र और उसकी रिज़ा का यक़ीन होने के वास्ते हैं, जिसके अन्दर जी का लगना और घबराना दोनों बराबर होकर निगाह सिर्फ़ इस बात पर जमती चली जाए कि अल्लाह के हुक्म (जबकि उसके हुक्म के मुवाफ़िक़ भी अपना सब अमल हो) की तामील (सरगर्मी के बक़द्र) अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और रहमत और मग़्फ़िरत से भरी हुई है, इसका यक़ीन हो तो आदमी की नज़र अपने अहवाल और उसके आसार पर न होनी चाहिए, बल्कि हुक्म की मुवाफ़क़त और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के हुसूल के यक़ीन पर रहनी चाहिए, ख़ूब समझा लो, इस राह में सर पर आरे का चलना और सुलैमानी तख़्त का मिलना दोनों एक दर्जे में होकर नज़र अंदाज़ हो जाना ज़रूरी हैं।

दूसरी बात यह है कि अमल बिना सोहबत और सोहबत बिना अमल ख़तरे से ख़ाली नहीं होती और हर एक के अलग-अलग उसूल हैं, बिना उसूल के भी ख़तरे से ख़ाली नहीं। मेरे अज़ीज़! जो कुछ कर रहे हो, बहुत ग़नीमत है, मगर निहायत अज़्मत के साथ पास आकर रहने की भी ज़रूरत है, आने से पहले सोहबत के आदाब से वाक़िफ़ होना बहुत ज़रूरी है, कोई चीज़ बिना आदाब के मुफ़ीद नहीं हो सकती। आदाब के मानी उसूल के हैं, यह कभी जी का लगना, न लगना, सूफ़ियों के यहां क़ब्ज़ व बस्त कहलाता है, हर चीज़ अपनी-अपनी लाइन में इतनी बढ़ती है कि जिसका कोई हद व हिसाब नहीं, क़ब्ज़ की लाइन की फिर मुसीबतें हैं और मकरूह और तबियतों के ख़िलाफ़ वाक़ियात हैं और बस्त की लाइन में ख़ुदावन्दी मख़्लूक़ की तस्वीर और कसरत है और ये दोनों हालते इम्तिहान के लिए हैं। हर एक दोनों रूख़ रखती है, अल्लाह तआ़ला की रिज़ा का भी और लानत का भी, जो शुरू ही से क़ब्ज़ व बस्त दोनों की लाइनों के नज़रंदाज़ करने का आदी हो गया, वह कभी न कभी फिसले बग़ैर न रहेगा, जब तक आदमी इम्कान के आलम में है, ये दोनों चीज़ें ज़रूर पेश आएंगी।

दुनिया का मफ़्हूम निगाह में बहुत ग़लत है। दुनिया में खाने-पीने की चीज़ों में लगे रहने का नाम दुनिया नहीं है। दुनिया पर लानत है और लानत की चीज़ का ख़ुद अल्लाह पाक की तरफ़ से हुक्म नहीं हो सकता, इसलिए जिस चीज़ का

हुक्म है, उसका हुक्म समझ कर उसके मातहत उसका, हराम व हलाल का ध्यान करना इसका नाम दीन है और हुक्म से हटकर ख़ुद अपनी जरूरतों को महसूस करना और हुक्म के अलावा और वजह इसके ज़रूरी होने को क़रार देना इसका नाम दुनिया है, यहां तक कि दीन का काम जी लगने की वजह से करेगा तो यही दुनिया है। काम में मश्ग़ूल होने की वजह को ध्यान में रखे कि वह क्या है। अगर वह जी लगने की वजह से हो तो वह दुनिया है, चाहे वे इबादतें हों और हर हुक्म को मालूम करके उसकी तहक़ीक़ में लगे रह कर उसके मुवाफ़िक़ करते रहना, इसका नाम दीन है। ख़ूब याद रखो, मैं दुआ करता हू और सबसे दुआ कराऊंगा। आप भी मेरे लिए और मेरे तमाम अलाइक़ के लिए दुआ करते रहें।

रोज़े में मिस्वाक करना मुस्तहब है, कुछ हरज नहीं। ख़त्म में[1] शरीक होना मुस्तहसन और आपके बुज़ुर्गों का मामूल है, लेकिन अगर मुब्तदईन (बिदअत करने वालों) के साथ तशब्बुह (एक जैसा होने) का ख़तरा हो, तो एहतियात मुनासिब है। 'अस्सलातु वस्सलामु अलै-क' के अन्दर भी यही बात है कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हाज़िर व नाज़िर जानकर मुब्तदईन के तशब्बुह की सूरत हो तो नाजायज़ है और अगर ग़लबा-ए-शौक़ में अपनी तरफ़ से पढ़े तो मुज़ायक़ा नहीं। ये ऐसी नाज़ुक चीज़ें हैं कि इनके अन्दर अक़ीदे के बिग़ड़ने का मौक़ा शैतान को मिलने का बहुत इम्कान होता है, इसलिए ख़तरनाक हैं।

मूसा से मुताल्लिक़ आप अल्लाह से दुआ करते रहें और उसके बड़ों को यहां भेजने की कोशिश के लिए तक़ाज़ा लिखे, तब्लीग़ी मामलों में तक़रीर-तहरीर और अमल के हर पहलू से कोशिश करते रहा करें, दीन की तब्लीग़ के फ़रोग़ के बग़ैर नामुम्किन है।

फ़क़त वस्सलाम

जिस-जिस से मुनासिब हो, सलाम फ़रमा दें।

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु अज़ निज़ामुद्दीन

बक़लम शौकत अली ख़ादिम, 9 शव्वालुल मुकर्रम

---

1. ख़त्म आयते करीमा या ख़त्म ख़्वाजगान वग़ैरह, जो तस्बीहों का मजमूआ है।

(3)

फ़वाइद मक्तूबे हाज़ा

अल्लाह अपने फ़ज़्ल से वह ज़िंदगी नसीब फ़रमाए कि सबक़त करने वालों के सामने नदामत की आंख न हो।

अज़ निज़ामुद्दीन

बख़िदमत अज़ीज़ी मियां मुहम्मद ईसा साहब अरशदनल्लाहु व इय्याकुम व सब्ब-त क़ुलूबना अला सायही

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

कई दिन हुए, आपका इनायत नामा मिला। दीन की तरक्क़ी, सबक़त और उसके लगाव की ख़बर मुबारकबाद ही की चीज़ है। अल्लाह तआला हर दिन बढ़ती हुई तरक़्क़ियां नसीब फ़रमावें और अपनी मुहब्बत और कामिल यक़ीन के साथ दीन के फैलाने की सरगर्मियों की हालत में मौत मुक़द्दर फ़रमावें। दुनिया में जितनी सरगर्मियां हैं, वे हक़ीक़त में मौत के वक़्त के लिए हैं। अल्लाह अपनी मेरबानी से वह ज़िंदगी नसीब फ़रमावे कि सबक़त करने वाले आदमियों के सामने आंख नदामत की न हो। तब्लीग़ के सिलसिले में मेरा जी चाह रहा है कि एक निसाब मुक़र्रर होकर वह हर-हर आदमी के यहां रग व पै में समा जावे, जिसको यों जी चाहता है कि अगर एक आदमी पढ़ा-लिखा है, पहले तो तनहाई में देखा करे और फिर सुनाया करे और उसमें जो आमाल हों, उस पर पहले अपने आपको जमाने की कोशिश करे, उसको मज्मा में फैला दे, अमली तौर पर पांच किताबों का एहतिमाम रहे, 'राहे निजात', 'जज़ाउल आमाल', 'चहल हदीस' (शेख़ुल हदीस वाली) 'फ़ज़ाइले नमाज़', 'हिकायाते सहाबा', इन पांचों को ज़िंदगी का हिस्सा बना देने का एहतिमाम किया जाए, इसलिए आप भी इसकी पाबन्दी से मुझे मुत्तला फ़रमाएं।

तब्लीग़ी जमाअतें इस वक़्त सब वापस हो चुकीं, अब मुल्क के बाहर[1] कोई जमाअत नहीं है। काश, ऐसा वक़्त हो जाए कि क़ौम के लाखों आदमी बाहर

---

1. मेवात के बाहर

गए हों, क़ौम के लाखों आदमियों का बाहर फिरते रहना ज़िंदगी का हिस्सा बना दिया जाए, तो यह बहुत सहल है। आप कोशिश फ़रमाते रहेंगे, तो यह कुछ नामुम्किन नहीं है, अलबत्ता बड़ी ख़ुशी की ख़बर यह है कि रायसीना, वाली-ए-पाल[1] ने अपने तमाम भाइयों में तब्लीग़ी मामलों के फैलाने का कुछ इरादा किया है। आपके वालिद व चचा चौधरी यासीन ख़ां साहब वग़ैरह हिम्मत वाले चौधरियों को इस मामले में ज़ोरदार कोशिश से हिम्मत के साथ लगावें, तो बड़े अज्र का मूजिब होगा। आप भी फ़ीरोज़पुर में अपने दोस्तों और अहबाब को इसकी ताकीद करें, बड़ा ताज्जुब है कि घर से मुश्किलों से निकलें और बाहर निकल कर घर बड़ा याद आता है, काश, तब्लीग़ के बजाए घरों पर रहना उतना ही मुश्किल हो, जितना आजकल तब्लीग़ में रहना मुश्किल है। फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास, उफ़ि-य अन्हु बक़लम हबीबुर्रहमान

(4)

इस मक्तूब के फ़ायदे

1. जिस तरह ईमान की ज़िंदगी दो सांसों पर है, इसी तरह उसकी तरक़्क़ी ख़्वाहिश के पूरा होने और रुकावट पर है।

2. क़ब्ज़ व बस्त, नुबूवत के दर्जे तक इंसान के लिए ज़रूरी हैं। कभी कभी मक़्सद के पूरा होने पर तबियत घबराती है और कभी-कभी पूरे होने पर तबियत खिली रहती है।

3. छोटे-से-छोटे आदमी के साथ मुहब्बत रखते हुए एतराज़ से बचते हुए और वाक़ई सिफ़ाते हमीदा पर नज़र रखते हुए, वक़्त गुज़ारना अदब है।

4. जब ख़िताब की नाक़द्री शुरू हो जाए, तो तब्लीग़ में सीधे-सीधे ख़िताब करना मुनासिब नहीं, उसके माहौल मे तब्लीग़ करे,

5. आदमी माहौल का असर लिया करता है, इस लिए ज़्यादातर कोशिश हवा को बदलने की करनी चाहिए।

6. दुनिया की मईशत के अस्बाब की कोशिश जब तक दीन की कोशिशों

1. पाल मेवात का बड़ा क़बीला, जिसमें बहुत से घराने होते हैं।

से मग़लूब नहीं होगी, ख़ुदावन्दी ग़ैरत दीन की दौलत से माला माल नहीं करेगी,

7. दीन एक क़िला है जो अपने दुरुस्त होने से दीनदारों की हिफ़ाज़त करता है और दोनों दुनिया की नेमतों का हासिल करने का ज़रिया बनता है।

8. आदमी का जाहिल व ग़ाफ़िल और हक़ की कोशिश में सुस्त होना हर फ़ित्ने की कुंजी है,

9. सूदी मामला करना ख़ुदा के ख़िलाफ़ इक़्दाम करने पर जुर्रात करना है।

इनायत फ़रमाएम जनाब मुंशी मियां जी मुहम्मद ईसा साहब

अस् अलुल्ला-ह ली व लकुमर्रुश-द वस्सलाम-त,

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

शव्वाल से मुहर्रम तक ख़ुदा जाने आपके कितने ख़त आ चुके, लेकिन तब्लीग़ की सरगर्मी और आपके कुछ सवालों के जवाब की नज़ाकत और सफ़रों की ज़्यादती वग़ैरह-वग़ैरह मामलों से मेरे दिल को क़लक़ है कि जवाब न जा सका और फिर आपकी तहरीरों के लम्बा होने का भी इस जवाब में बड़ा दख़ल है।

बहरहाल इस वक़्त आपके तीन ख़त मेरे सामने हैं—

एक 16 शव्वाल का,

एक में आपकी तारीख़ नहीं मिली,

एक 2 फरवरी का। मैं अल्लाह से दुआ मांगता हूं कि आपके ख़ातिर ख़्वाह तीनों के बारे में कोई बात लिख सकूं। क़ब्ज़ व बस्त (सांस खींचना व रोकना) के लिए असल तो यह है कि अभी इन चीज़ों के फ़िक्र में न पड़ो।

दूसरे यह है कि उस तहरीर को जिसे मैं लिख चुका हूं, कभी-कभी देख लिया करो,

तीसरे थोड़े में इसका जवाब यह है (गो इस वक़्त मेरी तबियत मुतवज्जह और हाज़िर नहीं है, मगर तुमने कह दिया है, तो मैं थोड़े में कहता हूं) कि अल्लाह ने इंसान की तरक़्क़ी का मदार जैसा सांस के अन्दर रखा है, तुम देख रहे हो कि एक अन्दर जाता है, एक बाहर आता है, उन दो सांसों की तरह कभी इंसान जो चाह रहा है, उसके पूरा होने में और कभी उसके अन्दर की रुकावटों में तरक़्क़ी रखी है, ज्यों-ज्यों अल्लाह के हर हुक्म में अल्लाह की अज़्मत पर नज़र रखने की आदत को

इतना बढ़ा लिया जाए कि उसकी अज़्मत का ध्यान अपने मक़्सदों के पूरा होने और न होने के तास्सुरात पर ग़ालिब हो जाए, उसी में इंसान का कमाल है, जी का लगना और जी का घबराना पहला बस्त है और दूसरा क़ब्ज़ है। ये इंसान के लिए सांस की तरह लाज़िम हैं। नुबूवत के दर्जे तक ये इंसान के लिए लाज़िमी हैं और हक़ीक़त यह है कि ये दोनों चीज़ें मक़्सद के पूरा होने और न होने पर मुनहसर नहीं हैं। कभी-कभी मक़्सदों के पूरा न होने पर तबियत घबराती है और कभी-कभी मक़्सदों के पूरा न होने पर तबीयत खिली रहती है। आदाब के वास्ते आप मौलवी यूसुफ़[1] और मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर[2] वग़ैरह सूझ-बूझ वाले उलेमा से किताबें मालूम करके पढ़ते रहें। मुख़्तसर यह है कि हैबत और अज़्मत और मुहब्बत के साथ छोटे से छोटे वहां के रहने वाले के साथ मुहब्बत रखते हुए और एतराज़ बचाते हुए और सिफ़ाते हमीदा (भली ख़ूबियों) पर जो कि वाक़ई हैं, उन पर नज़र जमाते हुए वक़्त गुज़ारने का नाम अदब है। अगर दीन में शुबहा होने लगे तो जम कर यह कह लिया करे, 'आमन्तु बिमा आ-म-न बिही मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम', पिछले पहर के वक़्त उठने की एक दुआ है, आप तशरीफ़ लाएंगे तो मैं अपनी 'हिस्ने हसीन' किताब में दिखा दूंगा और बेहतर हो कि आप हिस्ने हसीन ख़रीद कर किसी पढ़े-लिखे को सुना दें और फिर उसका एक विर्द रोज़ाना पढ़ लिया करें, वह पिछली मेरी दुआ पढ़ लिया करें, इनशाअल्लाह शक नहीं होगा, साथ ही ज़ुबान से कह लिया करें और सोच लिया करें कि इसका फ़रमाना तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ वाबिस्ता है। कुछ हकीमों तक की बातों का हमारी समझ पर मदार नहीं, साथ ही घबराने के वक़्त में किसी दीनी काम पर जमे रहना आदमी को सब्र करने वालों में सिर्फ़ यही एक सिफ़त ज़्यादातर शामिल कर सकती है, जिनके बारे में अल्लाह फ़रमाते हैं– 'इन्नल्ला-ह युहिब्बुस्साबिरीन०' बारह तस्बीह मुलाक़ात पर रखें। ख़त्म की जो शक्ल आपने तज्वीज़ फ़रमाई है, दूसरों पर एतराज़ मत करो और ख़ुद उसको तंहाई में पढ़ लिया करो। उसको पढ़ना सोते वक़्त मस्नून है, लेकिन

1. साहबज़ादा मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ साहब

2. मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर साहब मरहूम, साकिन फ़ीरोज़पुर नमक, सदर मुदर्रिस मदरसा मुईनुल इस्लाम, नूह, मेवात, मौलवी यूसुफ़ कांधलवी के (क्लास फ़ेलो) दरसी फ़ीक़ वफ़ात 1948 ई०

यह तरीक़ा मशरूअ़ नहीं है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊपर का दरूद बेहतरीन अमल है, मगर जो तरीक़ा आपने लिखा है, यह भी सलफ़ में नहीं है, इसलिए आप खुद इससे बचें और जो आपके अक़ीदे पर एतमाद रखता हो, उससे भी आप यह कह दें, अपने सास-ससुर वाले गांव में तब्लीग़ के लिए जमाअतें भेजने की कोशिश करें। खुद उनको सीधे-सीधे ख़िताब करना, जबकि ख़िताब की नाक़द्री शुरू कर दी है, ठीक नहीं। इसके पास के दो-चार कोस में जो गांव हैं, नई है, सिंगार है, बिछवा है, इन सब जगहों को मियां जियों[1] और ठोंडों[2] के हालात मालूम करके, उनको जमाअतें ले जाने की ताकीदें करो, इस आम कोशिश से अन्दाज़ा देखते रहो और बात ताकते रहो, इस तरह उनके अन्दर सलाहियत पैदा हो जाएगी और फिर ख़िताब फ़ायदेमंद होगा, वरना पहले से ज़्यादा ख़तरा है। फ़ीरोज़पुर नामक, और अडबर, चंदेनी, नगली, रोपड़ाका वग़ैरह के लोगों को भी तब्लीग़ी जमाअतें निकालने की ताकीद करते हुए इस सम्त में जमाअतें निकालने की कोशिश करो, हमेशा आदमी माहौल का असर लिया करता है, इसलिए ज़्यादातर कोशिश आम हवा के बदलने में रखनी चाहिए। मूसा ख़ां के मुताल्लिक़ मैंने भी कोशिश की और मालूम हुआ कि तुम्हारे वालिद ने भी कोशिश की, इसलिए इसके मुताल्लिक़ भी वही बात है, जो तुम्हारे सास-ससुर के मुताल्लिक़ है, आम हवा के बदलने की कोशिश करो और उसकी तबियत की उड़ान का अन्दाज़ा करते रहो, और फिर ख़िताब करो, इनशाअल्लाह! फ़ायदा होगा। इस वक़्त, अलहम्दु लिल्लाह! कि वह तब्लीग़ को गया है, यह आने वाला जुमा करनाल पढ़ेंगे। कोई शाबाशी और तबियत बढ़ाने वाला मज़्मून नवाब जुलफ़िक़ार अली ख़ां साहब के वास्ते से करनाल के पते पर लिख दें और अगर ऐसे वक़्त में खुद आ सकें, तो बहुत ही अच्छा हो और उसी जगह उसको ख़र्च भेज दो, तो तब्लीग़ के ज़माने में किसी की मदद करने में घर बैठे मदद करने से सत्तर हज़ार गुना सवाब होता है। बीमारी और कमज़ोरी की वजह से जो ये औराद (वज़ीफ़े) क़ज़ा हों, उनको दोहराया नहीं जाता और न पढ़ने से ६ ीरे से पढ़ लेना बेहतर है। अल्लाह तआ़ला आपके साहबज़ादे सईद को दोनों

1. मेवात में कुछ पढ़े हुए लोगों को मियां जी कहते हैं,
2. ठोंडे यानी मुखिया वग़ैरह।

दुनियाओं में सआदतमंद करे। आप मेरे बाल-बच्चों, घर वालों, दोस्तों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला इसकी जज़ा अता फ़रमावे। अलहम्दु लिल्लाह अब दोनों ख़ैरियत से हैं, आप मुतमइन रहें।

आपका तीन तस्बीहें पढ़ना, जिस तफ़्सील से आपने लिखा है, मुनासिब है और मुबारक है। अल्लाह तआला क़ुबूलियत का शरफ़ और तमानियत की सआदत नसीब फ़रमावें। आपके दूसरे ख़त में, जो आपने एक महीने के इन्तिज़ार के बाद तहरीर फ़रमाया, उसके जवाब की ताख़ीर से तो मुझे भी नदामत है। अल्लाह तआला आपको अज्र दे और मेरी इन कोताहियों को माफ़ फ़रमाए। इसमें तब्लीग़ की सरगर्मियों का ज़िक्र है कि 80 आदमी यहां तब्लीग़ के लिए आए और 25 आदमियो की जमाअत तैयार है। पहली ख़बर अलहम्दुलिल्लाह, सुम-म अलहम्दुलिल्लाह, अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल व करम, एहसान और नेमते जलीला है कि उनमें 80 आदमियों की मिक़्दार ऐसे नाज़ुक ज़माने में कि जहां इस अमल को हक़ारत की नज़र से देखा जा रहा है , और उसकी नाक़द्री की जा रही है, ऐसे ज़माने में दीन के फ़रोग देने के लिए घर से निकले, मगर मेरे अज़ीज़! अल्लाह का शुक्र बजा लाने के बाद अपनी कोताही पर भी एक गहरी नज़र डालनी चाहिए कि पन्द्रह साल कोशिश के बाद तब्लीग़ के ये अन्वारात, ये बरकात और यह इज़्ज़त और यह दुनिया के अन्दर नामवरी और यह हर तरह की नूरानियत और बहबूदी खुली आंखों महसूस करते हुए, फिर कुल 80 आदमियों की मिक़्दार निकली तो इतने लाख मिक़्दार में कितनी थोडी है और फिर निकल लेने के बाद घर को वापस जाने को इतने बेक़रार कि उनका थामना मुशिकल, तो घर से निकलें तो मुश्किल से और निकलने के बाद यह ख़त्म होने वाला घर अपनी तरफ़ ख़ींचता रहे, तो यह दीन का घर किस तरह आबाद होगा। जब तक घरों पर रहना इतना दुश्वार न होने लगे, जैसा इस वक़्त तब्लीग़ में रहना और जब तक तब्लीग़ से वापस जाना इतना तबियतों पर दुश्वार न होने लगे, जैसा इस वक़्त तब्लीग़ के लिए दुश्वार है और जब तक तब्लीग़ के लिए चार-चार महीने मुल्क दर मुल्क फिरने को ज़िंदगी का हिस्सा बनाने में

पूरे एहतिमाम के साथ आप लोग खड़े नहीं होंगे, उस वक़्त तक क़ौमियत सही दीनदारी का मज़ा नहीं चखेगी और हक़ीक़ी ईमान का मज़ा कभी नसीब नहीं होगा और अब तक जो मिक़्दार है, एक आरज़ी है। अगर कोशिश छोड़ दोगे, तो क़ौम इससे ज़्यादा गिरेगी। अब तक जिहालत उसकी हिफ़ाज़त कर रही थी और जिहालत की शिद्दत की वजह से दूसरी क़ौमें उनको हस्ती में शुमार न करने की वजह से तवज्जोह नहीं करती थीं, अब जब तक दीन की क़िलाबन्दी से अपनी हिफ़ाज़त नहीं करेंगे, दूसरी क़ौमों का शिकार हो जाएंगे।

बहरहाल मुझे रंज है कि वे आदमी बेशक आए, मगर वड़ी-बड़ी तदबीरों से रुके और उन्हीं की वजह से तुम्हारे जवाब में ताख़ीर हुई। दुन्यावी मईशत के अन्दर के अस्बाब की कोशिश और सई को जब तक दीन की दुरुस्त करने वाली चीज़ों में कोशिशों और सई से मग़लूब नहीं किया जाएगा, उस वक़्त तक ख़ुदा की ग़ैरत दीन की दौलत से मालामाल नहीं कर सकती, मुझे बहुत ही रंज और अफ़सोस है कि अब तक तुम्हारी क़ौम सुनती नहीं है, दिल्ली वालों की तरह कान बन्द किए हुए और आंखें फोड़े हुए है, उसके अन्दर यह मिक़्दार बहुत थोड़ी है। इसी तरह फ़िरोज़पुर के 25 आदमियों का वायदा इस कम हिम्मती की बदौलत पूरा नहीं हो सका। साल भर में दो या तीन या चार महीने दीन सीखने के लिए मुल्क-ब-मुल्क फिरने का रिवाज इस वक़्त दीन की बक़ा के लिए बहुत ज़रूरी है। दीन एक क़िला है कि जो अपने दुरुस्त होने से दीनदारों की हिफ़ाज़त करता है। और दोनों दुनियाओं की नेमतों के हासिल करने का ज़रिया बनता है, बड़ी कोताह नज़री है कि जो उसकी कोशिशों को दुन्यवी कारोबार का हरज समझते हैं। इलयास की तबियत अल-हम्दुलिल्लाह ख़ैर की तरफ़ चल रही है, लेकिन उसका अपना शौक़, जब तक तुम्हारी ताकीदें और तबियत का बढ़ाते रहना शामिल नहीं होगा, काफ़ी नहीं है। इस वक़्त मेरे कहने से करनाल गए हैं, ख़ुद उनके शौक़ को ज़्यादा दख़ल नहीं है, इसलिए आप ताकीद लिखें कि दुन्यवी कारोबार में मसरूफ़ रहने वाले बहुतेरे हैं। दीन के फ़रोग़ के लिए घर बार छोड़ना हर वक़्त अल्लाह ने मेवों को नसीब किया है, इसलिए वापसी की जल्दी न करें। इस क़िस्म का मज़्मून करनाल नवाब ज़ुलफ़िक़ार साहब वाले पते से लिख दें।

अपने यहां तक तब्लीग़ का जो हाल लिखा है, उससे दिल खुश हुआ। उम्मीद है कि तरक़्क़ी हो गई होगी, मौजूदा हालत से मुत्तला फ़रमाएं और अपने मुल्क की कैफ़ियतों की ख़बरगीरी रखते हुए उन चीज़ों के ज़रिए अपने मक़ामी लोगों को ख़बरें देते हुए ज़ोरदार कोशिश करें।

इस दूसरे ख़त में आपने पाबन्दी और हमेशा कहते रहने का ज़िक्र किया है। अल्लाह मुबारक करे। इशराक़ की चाश्त की चार-चार रक्अतें काफ़ी हैं। तब्लीग़ी जमाअतों को आपने सलाम कहा था। मुनासिब है कि करनाल लिखें और उनसे दुआ करा दें। आपने क़र्ज़ के बारे में लिखा। आपके इस रवैए से और अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होने से ख़ुशी हुई। आप तब्लीग़ में कोशिश करते रहें और अल्लाह से दुआ करते रहें। इनशाअल्लाह सब मुश्किलें आसान हो जाएंगी और बन्दे के पास रुपया बिल्कुल नहीं है, इसकी उम्मीद दिल से निकाल दें।

मेरे मोहतरम अज़ीज़! सूद का गुनाह ऐसा मामूली गुनाह नहीं है कि इतने बड़े गुनाह करने के बाद आदमी यों सोचे कि गुनाह हो गया होगा, अल्लाह ने उसको अपने साथ जंग का एलान क़रार दिया है, सूद वाले को खोते रहने और बर्बाद करते रहने का अह्द कर लिया है। यह अल्लाह जल्ल शानुहु की दस्तगीरी और लुत्फ़े ग़ैबी है कि तौबा की तौफ़ीक़ दे दी और आगे को बचे रहने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाई, तुम ख़ुद अपने आप को, अपने सब लवाहिक़ को तब्लीग़ में सरगर्म रहने और रखने में उस बड़े गुनाह के कफ़्फ़ारा और तौबा की नीयत करते रहो, मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि अल्लाह का लुत्फ़ दस्तगीरी फ़रमा दे और किसी वक़्त अदा हो जाए।

हाफ़िज़ मुहम्मद इस्हाक़ साहब का ताल्लुक़ ऐसा नहीं था कि अगर क़र्ज़ा उतारने की कोई सबील होती, तो यह बन्दा उसमें दरेग़ करता लेकिन नाचीज़ बन्दे की इस्तिताअत से यह बात बाहर है, लेकिन मैं दुआ करता हूं कि ग़ैब से अल्लाह तआ़ला सुबुकदोशी का इंतिज़ाम फ़रमा दें।

आपके तीसरे ख़त तारीख़ 2 फ़रवरी में घबराने और जी न लगने का तज़्किरा है, ये वही क़ब्ज़ की निशानियां हैं जो कई बार तज़्करे में आ चुकी हैं। ऐसे वक़्त की मुदावमत में दोगुना अज्र मिलता है और ऐसे वक़्त की इस्तिक़ामत

से दौलते इस्तिक़ामत मिलती है और इस हस्तिक़ामत से अजीब व ग़रीब बरकतें और आलमे क़ुद्स की दौलतें और फ़रिश्तों की बशारतें और दीन के ग़ैबी असरार इसी इस्तिक़ामत के कामिल होने के बाद नसीब हुआ करते हैं। अल्लाह तआला शानुहू आपको जी घबराने और दिल लगने दोनों शक्लों में अपने कारोबार में मुदावमत बख़्शें जिससे इस्तिक़ामत नसीब हुआ करती है और यह रोना तो बहुत बड़ी दौलत है और उस वक़्त में आख़िरत और अल्लाह की अज़्मत और वायदों को बहुत याद किया करो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोशिशों को ऐसे वक़्त में बहुत ज़्यादा ध्यान में रखा करो। आपने तीसरे ख़त में नाराज़गी के एहतिमाल का ज़िक्र किया, इसका बिल्कुल ख़्याल न करें और हरगिज़ दिल में जगह न दें। ताख़ीर की वही वजह थी, जो शुरू में ज़िक्र की। मैं आपसे मुताल्लिक़ लोगों, वालिद, सब दोस्तों के लिए दुआ करता हूं और दुआ चाहता हूं कि दोनों दुनियाओं में सब आफ़तों से महफ़ूज़ फ़रमाएं और दोनों दुनियाओं की नेमतों से मालामाल फरमा दें।

फ़क़त वस्सलाम

मैं अपने लिए और बाल-बच्चों, सब दोस्तों और मुताल्लिक़ लोगों के लिए चाहता हूं कि खुद भी दुआ करें और सब दोस्तों से दुआ करावें।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम हबीबुर्रहमान

यकुम (पहली) ज़िल हिज्जा 1358 हि०

तुम्हारे दो टिकट दो बार के वापस हैं और तीसरा लिफ़ाफ़ा जवाब में भेजा जा रहा है।

अस्सलामु अलैकुम[1] व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

सफ़र की ज़्यादती, मेहमानों का आना और दूसरी मश्ग़ूलियतों की वजह से जवाब में देर हो गई, इसकी वजह से यह सोच कर कि दोस्तों को तक्लीफ़ हुई होगी शिर्मिन्दगी और अफ़सोस है। अल्लाह तआला अपनी मेहरबानी से इसका बेहतरीन इलाज फ़रमावें। मेरे दोस्त! तुमने अपने यहां हर चीज़ को ख़ुदा बतलाने

---

1. इस ख़त के दो फ़ायदे न० 8 व 9 इससे पहले वाले ख़त में दर्ज हो गए।

वाले फ़िरक़े का ज़ुहूर लिखा है। मेरे दोस्त! आदमी का जाहिल होना और ग़ाफ़िल होना और हक़ की कोशिश में सुस्त होना, यह हर फ़ित्ने की कुंजी है और तबीयतों के और जज़्बों के इन नामुबारक और गन्दा सिफ़तों पर रहने से खुदा जाने कितने फ़ित्ने उठते हुए तुम देखोगे और तुम कुछ न कर सकोगे। उठते हुए फ़ित्नों के मिटाने और आगे के फ़ित्नों को रोकने के लिए तुम्हारे मुल्क में आई हुई स्कीम को मश्क़ करने के लिए यू.पी. के लिए निकलने पर ज़ोर देने के सिवा और कोई इलाज नहीं, जमाअतों के यू.पी. के ख़ित्ते में निकलने की कुछ ऐसी तासीरात हैं कि बावजूद सिर्फ़ थोड़ी-सी मिक़्दार, जो दो सौ को भी नहीं पहुंची होती अैर थोड़ी-सी मिक़्दार जो अपने घरों के मुक़ाबले में कुछ भी गिने जाने की हैसियत नहीं रखती, इतनी थोड़ी सी मुद्दत में इतना असर हुआ कि 'बड़े इंक़िलाब' का लफ़्ज़ ज़ुबानों पर आने लगा और तुम्हारे मुल्क की ठोस और पूरी-पूरी जिहालत वालों के नापाक जज़्बे दीन के फैलाने के मुबारक जज़्बों से बदलने लगे, लेकिन ये सब बातें खुली आंखों हो चुकने के बावजूद करनाल के बाद फ़राग़त के बावजूद यू.पी. को कोई नहीं निकाल रहा है, फ़िरोज़पुर से अब तक कोई जमाअत नहीं निकली, जिसका बड़ा क़लक़ है। आप अगर अमली क़द्रदानी चाहते हैं, तो सिर्फ़ अन्दर के जोश और ज़ुबान के बोल को काफ़ी न समझें, बल्कि ज़ोरदार और लगातार तहरीर के ज़रिए और रातों को अल्लाह के साथ मश्ग़ूलियत के पाबन्द होते हुए अपने लोगों को यू.पी. के लिए निकालने में सरगर्मी के साथ कोशिश करते रहें।

मेरे दोस्त! ग्वालदह के चौधरी और रायसीना के बड़े लोगों ने कुछ इरादे किए हैं कि वे तब्लीग़ी स्कीम को अपनी क़ौम का जुज़्वे ज़िंदगी बनाने में कोशिश करेंगे। 'फ़ज़ाइले नमाज़' जो किताब है, उसको पढ़े-लिखे खुद पढ़ें और दूसरों को भी सुना दें और नमाज़ की अहमियत और बेनमाज़ी के लिए खुदा की वईदें आम लोगों के ज़हन नशीं कराई जाएं। आपने सूदी मामला जो किया है, अल्लाह की वईदों पर नज़र करते हुए, न कि मौजूदा मुसीबतों पर नज़र करते हुए, पहले नदामत करें और दिल में पक्का इरादा करें कि आगे फिर सूदी मामला नहीं करेंगे, फिर उसके बाद तौबा और इस्तग़फ़ार करें। सूदी

मामला करना ख़ुदा की ख़ुदाई के ख़िलाफ़ इक़्दाम पर जुर्रात करना है। आप 'हस्बुनल्लाहु व नेमल वकील' हर नमाज़ के बाद दो सौ बार और यह दुआ हर नमाज़ के बाद सात बार पढ़ कर दुआ कर लिया करें। दुआ यह है—

'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल हम्मि वल हुज़्नि व अऊज़ु बि-क मिनल अज्ज़ि वल कस्लि व अऊज़ु बि-क मिन ग़-ल-बति दैनि व क़हरिर्रिजाल०'

इन दुआओं का असर ऊपर के ज़िक्र की गई (यानी नदामत, और न करने का पक्का अह्द, ख़ुदा की धमकियों पर नज़र और फिर तौबा) बातों पर भी मुदावमत रखोगे तो इनशाअल्लाह अजीब व ग़रीब बरकतें देखोगे। तहज्जुद की नमाज़ शुरू कर देना, यह क़ाबिले मुबारकबाद है।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम हबीबुर्रहमान

(5)

मक्तूबे हाज़ा के फ़ायदे

फ़ 1. दीन की कोशिशों के मुनाफ़ा को अल्लाह ने अपनी क़ुदरत के परदों में छिपा रखा है और इस लाइन की परेशानियों को सामने कर रखा है, ताकि कोशिश अल्लाह की बात पर इत्मीनान के साथ वाबिस्ता हो।

अज़ निज़ामुद्दीन

बख़िदमत मियां मुहम्मद ईसा साहब अल हम-नल्लाहु व ईयाकुम मराशिदे उमूरिना अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

आपका इनायत नामा बल्कि यों कहिए एहसास नामा मिला। अल्लाह तआला अपनी नेमत और उसके ऊपर शुक्रगुज़ारी की मज़ीद तौफ़ीक़ महज़ अपने फ़ज़्ल से नसीब फ़रमावें। आपने यह बहुत सच एहसास फ़रमाया कि तब्लीग़ सही उसूल में कोशिश करने की अहिलयत और मौक़ा इम्तियाज़ी शान के साथ आपकी क़ौम को अल्लाह ने ऐसा नसीब फ़रमाया है कि अगर उसकी नाक़द्री करे, तो आपकी क़ौम ज़्यादा गिरेगी, अल्लाह उसकी नाक़द्री से बचाए। अल्लाह बचा दे और अगर ये ख़ुलूस के साथ सही उसूल के शौक़ व ज़ौक़ के साथ इन उसूलों में सरगर्म हो जावें तो न सिर्फ़ सरबुलन्दी का उसको शरफ़ हासलि हो,

बल्कि मुसलमानों के हाथ थाम लेने का अल्लाह चाहे, इस कोशिश के अन्दर एज़ाज़ मुज़्मर पावेंगे, लेकिन अब तक तो कोशिश इतनी कमज़ोर है कि हमारे हाफ़िज़ इसहाक़ और मुंशी मुहम्मद यूसुफ़ बड़ी मुश्किल से करनाल तक गए और थोड़े दिनों में घर की सोच पड़ गई। कोई पूछे, घर पर रह कर तो ख़लक़त उम्रें गुज़ार रही है, जो दौलत कि घर से निकलने से मिलती है, वह निकलने ही पर मिलेगी। सच यह है कि इस दौलत की क़द्र ही उठ गई। जैसे आपका जी चाह रहा है कि आपके आने के दिनों में यहां जमाअतें आई हुई हों, मेरा भी जी चाह रहा है। कोशिश आप भी करें, मैं भी कर रहा हूं, लेकिन जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूं मैं अब तक किसी को ज़ी-हिस्स (एहसास वाला) नहीं पाता। सारा चोर यह है कि इन मामलों के बारे में जो मुनाफ़े हैं, उनको अल्लाह ने अपनी क़ुदरत के परदों में छुपा रखा है और इस लाइन की परेशानियों को सामने कर रखा है, ताकि इन चीज़ों के अन्दर की कोशिश महज़ अल्लाह की बात पर, इत्मीनान पर वाबस्ता हो, इसलिए इस लाइन में कोशिशें जभी पायदार रह सकेंगी, जबकि इन कोशिशों की वजह से, जो कुछ भी आमाल वुजूद में आवेंगे उन आमाल पर मंफ़अतों का मौत के बाद पर जो वायदा है (जिसको अज्र व सवाब कहते हैं), जिस क़दर उसकी याद्दाश्त में कोशिश की जाएगी, उसी क़दर साबित क़दमी पायदार होती चली जाएगी।

मुहम्मद इलयास साहब ने जो आपको जमाअतों का हाल लिखा था, वह सच था, लेकिन अज़ीज़ दोस्त! मैं उस दुख का क्या ज़िक्र करूं कि वर्षों की कोशिशों के बाद निकलते हैं और महीनों भी नहीं टिकते, ये दीनी कोशिश के अन्दर कुछ महीने नहीं गुज़ार सकते, मेरा मक़्सद यह है कि जब तक घर से एक आदमी हमेशा बाहर दीन का घर बनाने का एहतिमाम यानी तब्लीग़ में बारी-बारी के तरीक़े से लाज़िमी नहीं करेंगे, उस वक़्त तक दीन के साथ उन्स और पायदारी नहीं हो सकती, ईसा! तुम ग़ौर करो फ़ानी दुनिया के लिए तो घर के सारे लोग हों और इसके लिए सिर्फ़ एक आदमी कहा जाए और इस पर भी निबाह न हो, तो आख़िरत को दुनिया से घटा दिया, या नहीं घटा दिया? वे जमाअतें तुम ही देख लो कि ख़त लिखे हुए कई दिन हुए, वे सब वापस भी हो गए, जमाअतों के निकलने पर खुश होने नहीं पाता कि वापसी की आवाज़ें आ जाती हैं,

आपके यहां मुंशी मुहम्मद युसूफ़ और आपके वालिद ने एक महीना भी तो पूरा नहीं किया बहरहाल नौबत-ब-नौबत निकलने की कोशिश करो और निकलने के वक़्त को ज़ाया न किया जावे, मेरा जी चाहता है कि रजब और शाबान में सहारनपुर में तब्लीग़ बहुत ज़ोर से की जावे। इन दो महीनों की ख़ुसूसियत यह है कि रजब में तो मुदर्रिसीन फ़रिग़ होते चले आते हैं और शाबान में सब फ़ारिग़ हो जाते हैं, (रजब मैं तब्लीग़ की सरगर्मी जितनी होगी, उस सरगर्मी के बक़द्र सब के सब तब्लीग़ में मश्ग़ूल हो सकेंगे, तो उनका मश्ग़ूल हो जाना ज़रिया उलेमा में फैल जाने का हो जावेगा, शाबान में तलबा का इम्तिहान होता है तो तलबा इम्तिहान में मश्ग़ूलियत की वजह से मशग़ूल तो न हो सकेंगे, लेकिन अपने उस्तादों की सरगर्मी के बक़द्र एहसास व बेदारी ज़रूर लेंगे, वह एहसास अगर मुकम्मल हो गया तो वे रमज़ान को मेवात के अन्दर की तब्लीग़ में गुज़ारेंगे और अगर नाक़िस रही तो कम से कम अपने घरों पर तो जाकर करेंगे तो इन सबका अज्र व सवाब मेवात की जमाअतों ही को मिलेगा।

इसलिए आप बहुत ज़ोर दें कि इस ज़माने में वे जमाअतें ले जावें और सहारनपुर ही आप को जमाअतें मिलें। सहारनपुर के पहुंचने की तारीख़ से शताब ख़ां को भी मुत्तला कर दें।

—फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलियास उफ़ि-य अन्हु

कारकुनों और दोस्तों के नाम

(1)

इनायत फ़रमाएम जनाब हाफ़िज़ सुलैमान साहब!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू– ख़त तुम्हारा मिला और दूसरे ख़त मुहम्मद इक़बाल साहब के हाथ मिले। आप लोगों की फ़र्ते मुहब्बत की वजह से मसरूर भी हूं और महजूब भी हूं। अल्लाह तआला हमारी तुम्हारी मुहब्बत में इख़्लास पैदा फ़रमा दें, मियां जी मुहम्मद दाऊद साहब[1] के बाद सलाम को यह समझा दें कि हक़ीक़त में जो कुछ भी काम करने वाले हैं वे बारी तआला हैं, न नबी बग़ैर उसकी मशीयत के कुछ कर सकते हैं, अगरचे हज़ार कोशिशें करें और न औलिया और न बड़ी से बड़ी ताक़त वाले, गरज़ बग़ैर अल्लाह की मशीयत के कोई भी दुनिया भर में कुछ नहीं कर सकता और अल्लाह तआला में सब क़ुदरत है कि छोटे-छोटे अबाबील परिंदों को हाथियों पर फ़त्ह दिलवा दी, तो जबकि अल्लाह तआला ही काम करते हैं और क़ूवत व ज़ोर को कुछ दख़ल नहीं है, तो अगरचे, तुम कितने ही कमज़ोर हो, मुम्किन है कि अल्लाह तआला तुमसे वह काम लें जो बड़े-बड़े वाज़ कहने वालों से न हो सके और अगर अल्लाह तआला किसी काम को लेना नहीं चाहते हैं, तो चाहे नबी हज़रात भी कितनी कोशिशें कर लें, तब भी ज़र्रा नहीं हिल सकता और अगर करना चाहें, तो तुम जैसे ज़ईफ़ (कमज़ोर) से भी वह काम ले लें, जो नबियों से भी न हो सके।

ग़रज़, जबकि हमारे पास तुम्हारे जैसे ज़ईफ़ हैं, तो अल्लाह तआला तुम्हीं से सब काम ले लेंगे, तुम अपना काम किए जाओ और अपनी ख़स्ताहाली और कमज़ोरी पर हरगिज़ नज़र न करो और ज़ाहिर में कोशिश करो और बातिन में अल्लाह की तरफ़ रुजू करो। राब के लिए मुनासिब मौक़ा है, अच्छी पूरी मिक़्दार में बनवा लो और जो कुछ दाम हों, वह मुझे लिख दो, ताकि मैं इक़बाल के हाथ यहां से रवाना कर दूं, मगर जल्द लिखना, ताकि इक़बाल लेते आवें। तवे के मुताल्लिक़ कोशिश हो गई है, तैयार हो गया है, भेज दिया जाएगा।

1. गांव सेवका (मेवात) के बाशिंदे क़ारी दाऊद के नाम से ज़्यादा मशहूर थे, वफ़ात 1969 ई०

—बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु
बक़लम हबीबुर्रहमान
19 जनवरी 1929 ई०

(2)

अज़ निज़ामुद्दीन, मदरसा काशिफ़ुल उलूम
तारीख़ 10 अगस्त

बख़िदमत इनायत फ़रमाएम हाफ़िज़ मुहम्मद सुलैमान साहब
अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

आपका कई दिन हुए इनायत नामा आया। दाऊद के बारे में आप बार-बार तक़ाज़ा कर रहे हैं और मैं भी तुम्हारी तहरीर के इत्मीनान पर चाहता हूं कि उसी तरफ़ दाऊद रहे, चाहे तब्लीग़ के तौर पर गश्त करके और चाहे सह्हार के आस-पास किसी जगह मुदर्रिस होकर रहे। बहरहाल आप दोनों साहब जबकि आपस में हमख़्याल हैं और ख़ुलूस के साथ दीन की हमदर्दी में दीन की इशाअत चाहेंगे, तो मुत्तफ़िक़ होकर और एक जगह हो पर ज़्यादा बेहतर और मुनासिब होगा, मगर मजबूरी यह है कि दाऊद निहायत मक़रूज़ है, इस लिए क़र्ज़ा उतारने के लिए आमदनी की सूरत होनी ज़रूरी है। मेरे पास ऐसी ज़ाहिरी सूरत नहीं है कि ख़ातिरख़ाह तब्लीग़ की ख़िदमत के मुक़ाबले में उसकी ख़िदमत करता रहूं और न वहां कोई आमदनी की शक्ल है, इसलिए उसकी रवानगी में ताम्मुल हैं, मैं उसको बिलफ़ेल काफ़ी तंख़्वाह की जगह रखना चाहता हूं, अलबत्ता क़र्ज़ा उतर जाने के बाद बिना तंख़्वाह के मौक़े पर भी उसको इजाज़त दे सकते हैं, जब तक क़र्ज़ा है उस वक़्त तक तुम्हारे पास, जबकि कोई आमदनी की शक्ल नहीं, भेजना मुनासिब नहीं। अब्दुस्समद का क़िस्सा हक़ीक़त में परेशान कर रहा है। वह अगर तुम्हारे से माफ़ी चाह कर और तुम्हारा मुतीअ़ (आज्ञापालक) होकर न रहे, तो उसको मेरे पास वापस कर दो, पहले भी बार-बार लिख चुका हूं। फ़क़त वस्सलाम

मियां शेख़ अकबर साहब के क़िस्से से मुत्तला करते रहो। मै ज़रूर इस क़िस्से के लिए आता, मगर ऐसी रूकावटें बीच में पड़ी हुई हैं जो नहीं आने देतीं। बन्दे की तरफ़ से सब लोगों को सलाम पहुंचा दें और तमाम लोगों को समझा

दें कि झगड़े का अंजाम बुरा है, सुलूक रखो और झगड़े को ख़त्म करो।

—फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलायस उफ़ि-य अन्हु

वक़लम हबीबुर्रहमान 12 अगस्त 1929 ई०

(3)

अज़ निज़ामुद्दीन

मदरसा काशिफ़ुल उलूम

इनायत फ़रमा हाफ़िज़ मुहम्मद सुलैमान साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। पस अज़ सलाम मस्नून आं कि जो तलबा आपके मदरसे में इस लायक़ हों कि वे नमाज़ पढ़ा सकते हों, उन तलबा को सह्हार की मस्जिदों में मुक़र्रर कर दिया जाए, जहां पर नमाज़ी अच्छे होते हैं, वहां पर पांचों नमाज़ें पढ़ा दिया करें और जहां पर ज़्यादा न हों, वहां पर किसी एक दो वक़्त की पढ़ा दिया करें, तो बहुत ही बेहतर हो, इस शक्ल में दीनी व दुन्यावी दोनों मुनाफ़े होंगे, तुमको भी और अवाम को भी।

फ़क़त वस्सलाम मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बक़लम हबीबुर्रहमान ग़ुफ़ि-र लहू सन् 65 हि०

(4)

बख़िदमत मियां जी क़ारी दाऊद साहब ज़ादत फ़ुयूज़ुकुम व मियां इशरत ज़ादत इनायतुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

आप साहिबों की इनायत व मुहब्बत का मैं शुक्रगुज़ार हूं। अल्लाह तआ़ला हमारी मेहनतों को लिल्लाही और ख़ालिस फ़रमा कर उनकी बरकतों से दोनों दुनिया में फ़ायदा फ़रमाएं। अलहम्दुलिल्लाह, मैं ख़ैरियत से हूं, कुछ मामूली ज़ुकाम है। अपने दोस्तों से दुआ-ए ख़ैर का चाहने वाला और मुहताज हूं और दर्जों में तरक़्क़ी और परेशानी दूर करने के लिए दुआ करता रहता हूं।

फ़क़त वस्सलाम

मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बक़लम हबीबुर्रहमान उफ़ि-य अन्हु, सन् 29 ई०

(5)

अज़ निज़ामुद्दीन

गौहरे मादने सियादत अज़ीज़ी मौलवी सैयद रज़ा हसन मद्द फ़ुयूज़ुकुम अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। आज सात दिन हुए, आपका इनायतनामा पहुंचा। आपकी कैफ़ियत से मसर्रत और रमज़ान जैसे वक़ीअ और मुबारक महीने के अन्दर जमाअतों की महरूमी से मलाल और रंज हुआ, लेकिन आप रहम व क़राबत के सिले की वजह से, चूंकि तशरीफ़ ले गए हैं और तब्लीग़ के वास्ते भी तबियत राह ढूंढती रहती है, शायद ये बातें उसका किसी क़दर जब्र नुक़्सान कर दें, मेरा भी अपने सब अज़ीज़ों से सलाम फ़रमा दें। अब दिन बहुत हो गए हैं, आपका इन्तिज़ार है शायद दूसरे पंजे का ख़त शब व रोज़ में आने वाला हो, उसमें शायद अपने आने की तारीख लिखें। अल्लाह तआला आपको हमेशा इस्तक़लाल और मतानत और इक़्तिसाद के साथ राहे ख़ुदा पर मज़बूत रखते हुए अपनी रिज़ा के हासिल करने में कामियाबी अता फ़रमावें।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

19 रमज़ान, 1355 हि०

(6)

इस मक्तूब के फ़ायदे

1. जो क़ौम कलिमा तैयिबा और नमाज़ की चीज़ों की तस्बीह और शहादत के कलिमे के मज़्मून पर अब तक मुत्तला न हुई हो, उसका ऊपर की चीज़ों में मश्ग़ूल होना सख़्त ग़लती है।

2. दलीलों में कमी और दरेग़ न करो, मगर दुश्मनों की इस्लामी हुर्मत को हाथ से जाने न दो।

अज़ निज़ामुद्दीन

बन्दा मुहम्मद इलयास

इनायत फ़रमायानम जनाब हकीम रशीद अहमद व मौलवी नूर मुहम्मद

साहिबान

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। अर्ज़ आंकि बन्दा ने मौज़ा बेवां के एक तालिब इल्म के हाथ एक ख़त बनाम हाफ़िज़ अब्दुल हमीद साहब चरबी वाले और एक चमड़ा उन्हीं हाफ़िज़ साहब के पास भेजने के लिए रवाना किया था, न मालूम किस वजह से अब तक दिल्ली नहीं पहुंचा, जहां तक हो सके, एहतिमाम के साथ किसी आने वाले के हाथ एहतिमाम से रवाना फ़रमाएं।

ज़रूरी अहम बात यह है कि मेरे अहबाब अपनी ख़ुसूसी कोशिश और असल सई और अपने ख़्यालात और क़ुलूब की तवज्जोह का रूख़ अपने इन उसूलों की निहायत पाबन्दी के मातहत तब्लीग़ के फ़रोग़ देने ही में मश्ग़ूल रखें। यह नया खड़ा होने वाला फ़ित्ना[1] इनशाअल्लाह इस रवैए से अपने आप ख़त्म होगा, वरना बहुत ख़तरा है कि तबीयतों के छेड़-छाड़ के साथ ख़ुद तबई मुनासबत होने की वजह से ख़ुदा न ख़्वास्ता कहीं ज़ईफ़ न हो जाए। तजुर्बा है कि मुनाज़रों के नतीजे हमेशा बुरे रहे हैं, अलबत्ता सबकी राय कहीं खुले मुन्करात की दलीलों के मुतालबे पर हो जाए तो कभी-कभी इन दलीलों में कूवत और ज़ोर के साथ मुतालबा कर लेने में मुज़ायक़ा नहीं, वरना मेरे ख़्याल में तो वही बात है कि तमाम मुल्क के जामिओं में और मजामेअ़ में इस मज़्मून की इशाअत का एहतिमाम कर लिया जाए कि जो क़ौम कलिमा-तैयिबा और नमाज़ के अन्दर की चीज़ों की तस्हीह और कलिमा शहादत के मज़्मून पर अब तक पूरी तरह मुत्तला न हुई हो, जो इस्लाम की बुनियादी चीज़ है, तो बुनियादी चीज़ को छोड़ कर ऊपर की चीज़ में मश्ग़ूल होना सख़्त ग़लती है। ऊपर की चीज़ बग़ैर बुनियादी चीज़ के सही हुए, दुरुस्त नहीं हुआ करती।

दूसरे हर जगह आम तौर से और उनके मज्मे और इज्तिमा वाले गांवों में और उसके माहौल में अपने उसूल की निहायत पाबन्दी के साथ तब्लीग़ी फ़रोग़ में बहुत ज़्यादा कोशिश को बढ़ा दो, जहां तक हो सके, छेड़-छाड़ से बहुत बचते हुए, फिर भी कहीं ज़रूरत पड़ जाए, तो दलीलों के मुतालबे से हरगिज़ कमी और

1. मुनाज़रे, जिन का उस ज़माने में मेवात में कुछ सिलसिला शुरू हो गया था।

दरेग़ न करो, मगर हरीफ़ों की इस्लामी हुर्मत को हाथ से न जाने दो। बहरहाल अख़ीर मज़्मून का मतलब यह है कि अगर उनके साथ सख़्तगीरी करने पर उनके हमेशा को निकल जाने का ख़्याल हो, तो मैं मना नहीं करता।

मेरे दोस्तो! आप मदरसे की ज़ाहिरी इमारत की पुख़्तगी के अस्बाब पर आ रहे हैं, मेरा दिल अन्दर से कांप रहा है और हौल रहा है कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता अहबाब उस की ज़ाहिरी फ़रेफ़्तगी में बातिनी तामीर के मामले में कुछ हल्के न पड़ जावें। मेरी दिली तमन्ना है कि इस ज़ाहिरी पुख़्तगी को बेहूदगी की नज़र से देखते रहें, दिली तमन्ना से न देखें और अपनी ख़ुशी और दिल की ताज़गी का ज़रा सा हिस्सा भी उसमें मश्ग़ूल न करें। फ़क़त वस्सलाम

(7)

इस मक्तूब के फ़ायदें

1. दीन की रग़बत जिसकी वजह से लोग मक्तबों और मदरसों की मदद करते थे, ख़त्म होने वाली है और आगे चल कर रास्ता बन्द है।

2. उलूम जिन ग़रज़ों और फ़ायदों के लिए हासिल किए जाते थे, वे ग़रज़ इन उलूम से वाबस्ता नहीं हैं, इसलिए उलूम बेकार होते जाते हैं और फ़ायदे उनसे हासिल नहीं होते।

3. मदरसों का सुस्त पड़ जाना या बन्द हो जाना ज़माने वालों के लिए निहायत वबाल और बाज़पुरसी का ख़तरा रखता है।

बख़िदमत शरीफ़ मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़म व मोहतरम जनाब हाजी रशीद अहमद शरीफ़ अहमद साहब मत्तानल्लाहु बितूलि बक़ाइकुम व फ़ुयूज़िकुम व बरकातिकुम

अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

हज़रत हाजी शेख़ साहब! अल्लाह जल्ल जलालुहू व अम्म नवालुहू ने जो इज़्ज़त व सरवत और ख़ुसूसी दौलतों से आपको मुशर्रफ़ फ़रमा रखा है, उस पर नज़र करते हुए जो कुछ आपके साथ यह नाहंजार बे-अदबी और आपकी शान के ख़िलाफ़ गुस्ताख़ी करे, वह जिस क़दर भी नफ़रीन व नदामत और तौबीख़

व सरज़नश के क़ाबिल हो, वह हक़ और सही है, लेकिन जनाब के ऊंचे हौसले, हिम्मते मरदाना और ग़रीब परवर तबियत ने हम ख़ादिमों को आपकी बारगाह में ऐसा गुस्ताख़ बना रखा है कि ताल्लुक़ की क़ूवत, आपके अख़्लाक़ की आदत हिम्मत पैदा करती है कि आपकी ख़िदमत में अर्ज़-मारूज़ कर लेते हैं, चाहे बाद में नदामत हो और चाहे उस वक़्त नदामत के ख़िलाफ़ कोई शक्ल हो, उसी के मातहत एक निहायत ज़रूरी मारूज़ निज़ामुद्दीन के मौजूदा मस्अले के बारे में जनाब की तवज्जोह मब्ज़ूल करना है और वह यह है कि ज़माने वालों की तबियतों के बहाव को अब से प्रन्द्रह वर्ष पहले से अपनी कोताह नज़र से, लेकिन अल्लाह की तौफ़ीक़ से दी हुई बसीरत से यह अन्दाज़ा लगा चुका था कि यह रफ़्तार मदारिस और मकातिब की जो चल रही है, उसमें दो ख़राबियां हैं—

एक यह है कि जिस बुनियाद से चल रही है, यानी लोगों का रुझान और उनकी वह रग़बत जिसकी वजह से मक्तबों और मदरसों में मुख़्लिसाना कोशिश करने वाले खड़े होते हैं और चन्दा देने वाले चन्दा देते हैं, यह बहुत जल्द ख़त्म होने वाली है और आगे चलकर रास्ता उसका मस्दूद है, दूसरी वजह यह है कि उलूम जिन ग़रज़ों के लिए और असरात और मुनाफ़ा के लिए हासिल किए जाते हैं, और जिन ग़रज़ों के पाने के लिए इल्म तलाश किए जाते हैं, उन इल्मों के साथ वे ग़रज़ वाबस्ता न रहने की वजह से इल्म बेकार होते चले आते हैं। अब इल्मों से वे मुनाफ़े और ग़रज़ हासिल नहीं होते, जिनकी वजह से इल्मों की तौक़ीर और तहसील थी।

इन दो बातों पर नज़र करते हुए मैंने इस तर्ज़ (तरीक़े) की तरफ़ अपनी तवज्जोह को मुतवज्जह किया कि जिसको आप देख रहे हैं और जान रहे हैं और आप जैसे सब दोस्तों और बुज़ुर्गों से तालिब रहा कि आप मेरे मुईन व मददगार बल्कि उसके अन्दर ऐसी मरदाना हिम्मत से खड़े हों कि आप ही असल हों, क्योंकि आपकी हिम्मत, आपका हौसला, आपकी ताक़त, आपकी तबियत, आप का दिमाग़ इस क़ाबिल था और उसकी अह्लियत रखता है कि किसी जानदार काम को उठा लें, जानदार काम के लिए जानदार ही अह्ल हैं। मैंने इस काम के अन्दर

जिस क़दर आप जैसों की ख़ुशामद और हिम्मत और तहरीस (आगे बढ़ाना) और अपने मंसब से निहायत बरख़िलाफ़ गुस्ताख़ी और बे अदबी से लगाने में कोशिश की, उसमें बे-नसीब और नाकाम रह कर मैंने आख़िर में इसे काफ़ी समझा कि मैं जिस काम में लग रहा हूं, उसमें लगे रहते हुए मकातिब (मदरसों) की जो शक्लें पैदा होती रहें, सिर्फ़ उसकी सरसब्ज़ी की ज़िम्मेदारी आप ले लें, चुनांचे जनाब ने मकातिब का सिलसिला अपने हाथ में लिया, और आपकी निगरानी में जितना हो सका, उसकी परवरिश होती रही, लेकिन जो कुछ मैं समझ रहा था, वही पेश आया कि पिछले जो देने वाले थे, उनको दवाम हो ही नहीं सकता और आगे को रग़बतें हो नहीं रहीं, होती रग़बतें तो ज़वाल पर बहुत ज़्यादा हैं और न होती रग़बतें बड़ी-बड़ी कोशिशों से पैदा होनी दुश्वार हो रही हैं।

बहरहाल जनाब की ख़िदमत में मकातिब (मदरसों) के फ़रोग़ के लिए मेरे नज़दीक जो शक्ल बेहतर है, वह जनाब की ख़िदमत में अर्ज़ करता हूं, बग़ैर कोशिश कोई काम नहीं हुआ करता, आप अपनी तबियत को मुस्तक़िल फ़रमा दें, झिझक को पांवों से मसल कर इलेक्शन के ज़माने में जिन लोगों को आपकी कोशिश से माली फ़ायदा हो और बेकार लड़ाइयों वग़ैरह में उनका ज़्यादा माल बर्बाद होने से बचा रहा, उनके साथ ख़ैर ख़्वाही और उनकी हमदर्दी सिर्फ़ इस मामले में है कि आप उनको इस भले मामले में ख़र्च करने पर तैयार करें और इसमें कोशिश करें कि भले कामों में ख़र्च के अन्दर कोशिश करने से उनकी तबियतों का भी झुकाव होगा और माल के अन्दर भी तहारत और पाकी पैदा होगी और शुरू-शुरू में उनको मायल करने में कुछ देर भी लगेगी, तो थोड़े दिनों में कोशिश से इनशाअल्लाह ये रास्ते फिर जारी हो जाएंगे और उन लोगों के यह बात ज़ेहन नशीन करने में आप हिम्मत फ़रमा दें कि सैंकड़ों मदरसों का सुस्त पड़ जाना या बन्द हो जाना ज़माने वालों के लिए निहायत वबाल और निहायत बाज़पुर्सी का ख़तरा रखता है कि क़ुरआन दुनिया से मिटता चला जाए और हमारे पैसों में उसका कोई हिस्सा और हमारे दिलों में उसका कोई दर्द न हो, ये सब ख़तरनाक हैं। आपकी थोड़ी सी कोशिश से यह कसीर मिक़्दार क़ायम

रह सकती है और ये अगर थोड़े दिनों सर सब्ज़ रह गए, ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, अगर ये सरसब्ज़ हो गए तो और भी बहुत से लोग जारी करेंगे और यही मज़्मून बाहर के जो लोग अह्ले सरवत कसरत से आपसे ताल्लुक़ रखते हैं उनके आने पर ज़ुबानी ज़िक्र करने का और डाक के ज़रिए उनसे ख़िताब करने का आप अज़्म बिल जज़्म फ़रमा लें। नवाब छतारी के यहां बहुत सारा वक़्फ़ है। मेरे वालिद के ज़माने में सैंकड़ों माहवार हज़रत वालिद नव्वरल्लाहु मरक़दहू के वास्ते से बेवाओं और यतीमों और मिस्कीनों के मुक़र्रर थे, मेरे आने के बाद ख़ुद मेरे भी पांच रुपए आते रहे, सिलसिला-जुम्बानी न होने से ये पांच तक जाते रहे। अह्ले सरवत से ख़ैर में ख़र्च करने का ख़िताब और उन पर ज़ोर देने की आप मश्क़ फ़रमाएं, तो यह तहरीक शोबा-दीन का एक ज़बरदस्त काम है, मरने के बाद दीन की कोशिश में जितना हौसला बुलन्द हो चुका होगा, उतना ही कारामद होगा। —फ़क़त वस्सलाम

नोट— फिर मुकर्रर अर्ज़ है कि पहली शक्ल जो मैं कर रहा हूं उसको अख़्तियार न फ़रमावें, तभी यह दूसरी सूरत, वह न हो, तो यही करो जो मैं कर रहा हूं, वह असल दीन है। अलहम्दु लिल्लाह, सुम-म अल हम्दु लिल्लाह, हिम्मत को असल दीन के लिए बुलन्द रखो, कमरे हिम्मत को चुस्त फ़रमाओ, जनाब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहेपाक इस क़दर सर सब्ज़ (ख़ुश) होगी कि ख़्याल व गुमान वहां तक नहीं पहुंच सकता और अल्लाह चाहे, ऐसी खुली तरक्क़ी देखोगे कि कोई ताक़त उसका इदराक नहीं और अगर आप से यह तब्लीग़ी काम न हो सके, तो[1] दूसरा ही काम करो[2] यह शोबा दीन है और ज़बरदस्त शोबा है! मेरे इस ख़त को देखते रहने के लिए अपने पास महफ़ूज़ रखें और फिर हमेशा देखते भी रहें।

---

1. जो मैं कर रहा हूं,
2. अहले ख़ैर को दीनी मामलों में उभारना और उसमें ख़र्च करने पर तैयार करना।

(8)

दोस्तों और रिश्तेदारों के ख़िदमत में भेजे गए ख़त

(1932 ई० का आख़िर)

इस ख़त के फ़ायदे

फ़ 1. दारुल कदूरत (दुनिया) में मिलना-जुलना, कदूरत से ख़ाली नहीं।

सलाम मस्नून के बाद यह शेर ईद का हदिया और मेरा बदल है—

न दूरी दलीले सबूरी बुवद
कि बिसयार दूरी ज़रूरी बुवद।

वतन की कशिश, दोस्तों की इनायतों का जज़्बा, रिश्तेदारों के देखने का तक़ाज़ा, घर वालों का ताल्लुक़ एक-एक चीज़ मुस्तक़िल मक़नातीस (चुम्बक) था, मगर इन सब के बाद कोई ऐसी चीज़ इन सब पर ग़ालिब होकर रोक रही है कि जिसकी वजह से मैं आपसे चाहता हूं कि मेरे इस मतलब के लिए दुआ फ़रमाएं और हमेशा चैन से मिले-जुले रहने की जगह में आफ़ियत के साथ पहुंचा दे कि दारुल कदूरत में कदूरत से मिलना-जुलना कदूरत से ख़ाली नहीं, यहां के ऐश में जिला (रोशनी) और सफ़ाई नहीं।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

(9)

मकतूब बनाम जनाब मौलावी हकीम रज़ीयुल हसन साहब
(लिखने की तारीख तेरह साल पहले की)

इस ख़त के फ़ायदे

फ़ 1. इस्लामी ज़िंदगी यही है कि ख़ुदा व रसूल के मक़ासिद को कामियाब बनाने में हर क़ूवत— ज़ानी व माली, ज़ोर के साथ मसरूफ़ रहे, मुसलमान इससे निहायत ग़ाफ़िल हैं।

ख़ाकसार को तब्लीग़ का जो एक मुद्दत से ख़्याल है, जनाब पर रोशन है, हमेशा जिस सिलसिले को छोड़ा, उससे आला और उसकी असल और जड़ की तरफ़ तबियत पलटती चली गई जो आयत 'वल्लज़ी-न जाहदू फ़ीना' की हक़ीक़त को वाज़ेह करता रहा, इस वक़्त जो मेरा ख़्याल है, वह यह है कि सबसे ज़रूरी और अहम एक ख़ास बात है, उसकी तरफ़ आम मुसलमानों को मुतवज्जह किए बग़ैर कोई काम दुनिया में नहीं हो सकता। मेरा जी चाहे है कि हज़रत आलो की ख़िदमत में भी अर्ज़ करूं। ख़ुदा करे हज़रते आली के यहां मस्मूअ़ व मक़्बूल होकर मेरे लिए तक़्वियत और बसीरत की वजह हो, वह बात यह है कि मुसलमान आमतौर पर अपनी इस्लामी ज़िंदगी भूल गए। इस्लामी ज़िंदगी यही है कि खुदा व रसूल के मक़ासिद को कामियाब बनाने में हर क़ूवत जानी व माली ज़ोर के साथ मस्रूफ़ रहे, मुसलमान इससे निहायत ग़ाफ़िल हैं। मेरा जी चाहता है कि हज़रते आली इस वक़्त इस बात का इरादा फ़रमा लें तो इसके मुताल्लिक़ मारूज़ात ख़िदमत में अर्ज़ करूंगा। मेरे ख़्याल में कुछ उसूल हैं जो निहायत मुख़्तसर हैं और निहायत ज़रूरी हैं उन पर अमल करने से सब काम सहल हो सकता है और दीनी मामलों को भी बेहद सरसब्ज़ी हो सकती है।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

(10)

(साहबज़ादी के नाम मकतूब)

26 मई 1936 ई०

मेरी बीटी! अगर तू सलीक़ेदार बेटी है तो दीन की और आख़िरत के कामों के अन्दर अच्छी तरह जी लगाने और उन कामों के साथ उलफ़त और मुहब्बत पैदा करने की कोशिश में कमी नहीं करेगी, जैसे नमाज़, क़ुरआन, दरूद, तस्बीह और ग़रीबों से मुहब्बत, दिलदारी और ख़िदमत गुज़ारी और खुश कलामी, शीरीं ज़ुबानी दुनिया की ज़िंदगी से जी न लगाएगी और उसकी तक्लीफ़ और राहत की परवा न करेगी।

फ़क़त वस्सलाम

(11)

पैकरे सिदूक़[1] व वफ़ा,

मुजस्समा जूद व सख़ा मत्तानल्लाहु बिअन फ़ासिकुमु तैयिबा व आराइकुमुलबहीया

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मैं अपनी ग़लत फ़हमी से आठ से नौ और नौ से साढ़े नौ तक इन्तिज़ार में रहा कि किसी के आने की किरणों से अपना यह अंधेरा घर चमक उठे, लेकिन बाद में ख़्याल हुआ और उस पर ग़ौर की नौबत आई कि वायदा परसों का था (जो कल यानी क़ियामत के बाद का दिन है) और मैं अपनी ग़लती से आज इंतिज़ार में रहा। मेरा जी चाहता है कि इस जहान में भी आपकी थोड़ी सी ज़ियारत हो जाए और आपसे मुलाक़ात वाले दिन के वायदे के लिए सही सामान के बारे में हम ख़ादिम लोग आपकी मुबारक राय से फ़ैज़ उठा सकें।

फ़क़त वस्स्लाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बक़लम हबीबुर्रहमान उफ़ि-य अन्हु

---

1. जिसको ख़त लिखा गया, उसका नाम मालूम नहीं हो सका

(12)

इस ख़त के फ़वाइद

फ़ 1. फ़ित्नों की रफ़्तार डाक गाड़ी से भी ज़्यादा तेज़ है और इसके मुक़ाबिल की रफ़्तार चींटी से भी ज़्यादा सुस्त है।

फ़ 2. फ़ित्ने के ज़माने में मश्ग़ूल रहने में क़ुर्ब व रज़ा की उतनी ही ज़्यादा उम्मीदें हैं, जितना फ़ित्नों के अन्दर अंधेरा ज़्यादा है।

मुकर्रम मोहतरम बन्दा[1] दा-म मज्दुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

कई दिन हुए आपका माउल हयात (जीवन-जल) मुसम्मा ब गरामी नामा (यानी ख़त) मिला, जिसको चाहिए था कि दिल को बड़ी चैन और ज़िंदगी बख़्शे, लेकिन मेरे बुज़ुर्ग दोस्त! इस अंधेरे फ़ित्ने, ईमान जलाने वाले, जज़्बात ख़त्म कर देने वाले की रफ़्तार डाक गाड़ी से भी ज़्यादा तेज़ है और इसका मुक़ाबिल, जो हक़ीक़त में यही एक स्कीम है, और अंधेरे को रोशनी से बदलने वाली है उसकी रफ़्तार कीड़ी सी भी ज़्यादा कमज़ोर है, फ़ित्ने की रवानी देख कर ये मिक़्दारें कुछ प्यास को बुझाने के लिए काफ़ी नहीं हैं, बहरहाल अल्लाह तआला आपको ख़ुश रखें, ऐसे फ़ित्ने के ज़माने में मश्ग़ूल रहने के लिए दर्जों की तरक़्क़ी, ख़ुदा का क़ुर्ब और अल्लाह की ख़ुश्नूदी की उतनी ही ज़्यादा उम्मीदें हैं, जितना फ़ितनों में ज़्यादा अंधेरा है, उतना ज़रूर ध्यान फ़रमादें कि अपने हालात के लिखते रहने में मेरे जवाब न देने से कमी न फ़रमावें। यही नाचीज़ बन्दा आज ही आगरा और रियासत जयपुर की एक तहसील टोडा मीम से और वहां की निज़ामत हिंडोन वग़ैरह से वापस हुआ है, उस जगह अल्लाह ने पब्लिक को बड़े ज़ौक़ के साथ मुतवज्जह किया और सबने बड़े इस्तक़लाल से काम करने की लब्बैक कही, मगर मेरे बुज़ुर्गों! ज़ौक़ की लैब्बक़ें सेराबी लाने वाली नहीं हैं और इस दर्द के लिए मरहमी नहीं कर सकतीं, वे अमल से इस क़दर अजनबी हो चुके हैं कि ज़ौक़ के साथ सिर्फ़ हां कर लेना ही — मुन्तहाए अमल रह गया है, अमल के वास्ते

1. जिसको ख़त लिखा गया, उसका नाम मालूम नहीं हो सका

अगर ख़ुसूसी जां बाज़ी के लिए कुछ हस्तियां नमूना नहीं बनेंगी तो लब्बैक के मैदान से अमल की सड़क पर पहुंचना निहायत दुश्वार होगा।

(13)

फ़वाइद मक्तूब हाज़ा

1. कलिमा और नमाज़ का सही करना इस तहरीक का मक़्सूद नहीं।

मख़्ज़ने आमाल व अमानी[1] अरशदनल्लाहु व ईयाकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मुझे इस वक़्त तक हमेशा काम करने वालों से एक ऐसी ज़ेहनी ज़हूल का तजुर्बा है कि उसके अन्दर थोड़े से फ़र्क़ की वजह से काम की नवैयत बिल्कुल बेकार से बेकारी की तरफ़ मुंतक़िल हो जाती है, बहुत थोड़ा करके बहुत कुछ कमाने के बजाए 'कोहे कुन्दन व काह बर आवरदन' का नक़्शा हो जाता है। मैं बहुत ही तरद्दुद में हूं कि मैं उसके किस तरह ज़ेहन नशीन कर दूं, ज़्यादा तर तो उसको तकल्लुम और मुख़ातबत समझें, बहरहाल क़ियादत किताबत में भी कोशिश करता हूं कि समझ में आ जावे, ख़ुदा करे कि मेरी नाक़िस तहरीर से आपके ख़्याल के नएपन को फ़ायदा पहुंचे।

वे दो बातें हैं–

एक तो वह जो न होना चाहिए, और वे करते हैं,

दूसरा वह जो होना चाहिए और नहीं करते।

पहली बात कलिमा और नमाज़ के सही कराने को गवारा करते हैं, तो मक़्सूद की मंज़िल समझ कर करते हैं कि जैसा कि इस तहरीक का मक़्सद हो, हालांकि यह मक़्सद नहीं और जो नहीं करते, वह यह कि उन मुख़ातबों के लिए यह फ़ैसला कर लें कि जब तक अपने मश्ग़लों को छोड़ कर वतन छोड़ना अख़्तियार करके उस तहरीक को लेकर बाहर नहीं निकलेंगे, मश्ग़लों की अंधियारी और उसकी तेज़ी तवज्जोह का और दिल के ध्यान का मश्ग़ूलों के साथ चिपक जाना कलिमा को सही करने और उनके अनवार व बरकात के क़ुबूल

1. ख़ास तब्लीग़ी कारकुनों के नाम

करने की अहलियत हरगिज़ पैदा नहीं होने देगी और निकलने के बाद भी दूसरों में कोशिश करने को जब तक अल्लाह तआला की रहमत का ज़रिया नहीं बनाएगा और दूसरों में मेहनत करने के ज़रिए अल्लाह की रहमत का सहारा ढूंढेगा, तो सुन्नते इलाही के क़ायदे के मुताबिक़ 'मल्ला यर्हमु ला युर्हम (जो रहम (दया) नहीं करता, रहम नहीं किया जाएगा) और इस क़ायदे के मुताबिक़ 'इर्हमू मन फ़िल अर्ज़ि यर्हमुकुम मन फिस्समाइ' (ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा) इस नीयत से जब तक दूसरों में कोशिश करके अल्लाह तआला की रहमत का सहारा पकड़ के फिर फ़राग़त के वक़्तों में मेहनत करेगा, उस वक़्त तक यह कलिमा और नमाज़ की असली बरकतें, जिससे सारी ज़िंदगी दुरूस्त होती चली आवे, हासिल नहीं होंगी।

मैं बहुत दिल से तमन्ना करता हूं कि उसकी दावत देने का आपस में मश्विरा करके सब हिम्मत करें, शुरू में बहुत दुश्वारी होगी, लेकिन मक़्सद उसी को ज़िंदा करना है और दीन की आसानी उसी को ज़िंदा करने से वाबिस्ता है और तमाम इदारे जो मुश्किलों में पड़े हुए हैं, वे इसी की कमी से। इस मज़्मून का सब लोग आपस में मुज़ाकरा व मश्विरा करके फिर उसकी दावत की हिम्मत करें, सब जमाअतें कभी-कभी अपनी कार्रवाई रवाना फ़रमाती रहें।

—क़ाज़ी मुईनुद्दीन की क़लम से

(14)

अज़ निज़ामुद्दीन औलिया

बख़िदमत इनायत फ़रमाएम जनाब मुंशी नसरुल्लाह व नम्बरदार मेहराब व हाफ़िज़ सिद्दीक़ व हकीम रशीद अहमद व नम्बरदार अब्दुलग़नी व दूसरे दोस्त

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

पहली तारीख़ से तब्लीग़ी जमाअतों की बड़ी गर्म ख़बरें और बड़े-बड़े वायदे हो रहे थे, लेकिन इस वक़्त तक जमाअत की शक्ल में हो कर एक जमाअत भी नहीं आई, ऐसे बड़े मामलों से पहलू बचाना और क़ोताही करना अल्लाह की नेमत से बड़ी महरूमी और घाटे की बात है। तमाम मर्कज़ों के ऊपर एक मुस्तक़िल

जमाअत बहुत जल्द रवाना कर देनी चाहिए जो हर मर्कज़ से जमाअत निकाल कर हटें, ख़ासतौर पर नूह में जो जलसा हो रहा है उस जलसा में आ जाने वाले दोस्तों में बहुत कोशिश के साथ ऐसी जमाअत बना दें जो हर-हर मर्कज़ पर जाकर पूरी कोशिश करें और जमाअतें निकाल दें, हर जमाअत में तीनों क़िस्म के आदमी मिला कर जमाअतें रवाना करें, सिर्फ़ एक ही क़िस्म के आदमी न हों, तीनों क़िस्म के आदमी हों। फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

(15)

अज़ निज़ामुद्दीन

बख़िदमत जनाब मौलवी सुलैमान साहब व मुंशी बशीर अहमद सहाब।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मुझे आप लोगों को एक ख़ास मामले की तरफ़ तवज्जोह दिलानी है, ज़रा आप लोग ध्यान करें। मेवात के अन्दर इस वक़्त अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से यह क़ाबिलियत हो गई है कि अगर मकातिब (मदरसों) की तरफ़ तवज्जोह दिलाई जाए तो थोड़ी सी कोशिश से मकातिब हो सकते हैं, लेकिन जो लोग पढ़ाने के क़ाबिल हैं, उनमें से अक्सर ज़्यादातर तो बेकार हैं और जो पढ़ने-पढ़ाने में लग भी रहे हैं, उनकी बहुत सी बातों की निगरानी और ख़बर ग़ीरी न होने की वजह से जितना नफ़ा हो सकता है, वह नहीं हो रहा, उनमें कुछ आदमी तो ऐसे हैं कि वे थोड़ी तवज्जोह से बहुत अच्छा काम कर सकते हैं, लेकिन उनकी तरफ़ तवज्जोह बहुत कम की जा रही है और माहाना इम्तिहानों और निगरानी से बहुत ग़फ़लत हो रही है। ऐसा न होना चाहिए। अपने मरकज़ के इम्तिहानों की सख़्ती से पाबन्दी की जाए, इसकी सख़्त ज़रूरत है और इनमें कुछ ऐसे भी हैं कि वे बहुत बड़ा काम संभाल सकते हैं, लेकिन उनके लिए तै की गई जगह उनकी क़ाबिलियत के काम करने की जगह नहीं है, उनमें से एक क़द्र के क़ाबिल और अपने अन्दर गौहर और जौहर लेने वाले हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ चंदैनी वाले हैं। मैं जहां तक समझता हूं उन्हें दुन्यवी लालच नहीं है, बल्कि पढ़ाने से खुद शौक़ रखने वाले हैं, ऐसे आदमी कम होते हैं, उनके मुताबिक़ चंदैनी में तालिब इल्मों की तायदाद नहीं है, इसलिए उन्हें

ऐसी जगह रखना चाहिए कि जहां पर 50-60 तुलबा की ज़िम्मेदारी ले लें, तो हाफ़िज़ यूसुफ़..... की जगह चंदैनी के लिए वहां के लड़कों के मुनासिब आदमी तज्वीज़ कर देना चाहिए और उनको इन दोनों जगहों में से किसी जगह तज्वीज़ कर देना चाहिए। इसमें ऐसे आदमियों को मुक़र्रर किया जाए कि तब्लीग़ी कामों में बाल बराबर भी फ़र्क़ न आवे।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

बक़लम हबीबुर्रहमान

9 मार्च 1980 ई० (सनीचर)

(16)

786

मोहतरमानम दीनदाराने मेवात सब्बतल्लाहु क़ुलूबना अलद्दीनि व अलहम्नल्लाहुर्रुश्-द वल ईमा-न वल यक़ीन

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मेरे दोस्तो! एक निहायत लतीफ़ ज़रूरी, जो दीनी और ईमानी तरक्क़ियों की बारीक-सी जड़ है, इस पर मुतनब्बह करने की नीयत से इस तहरीर का इरादा है। खुदा करे उसके फ़ज़्ल व करम व रहमत से यह बरकत की वजह बने। आमीन! मुझसे अदाएगी भी हो जाए और दिलों में क़ुबूलियत भी हो और उसके मुनासिब ज़िंदगी पर पड़ने की अल्लाह पाक से तौफ़ीक़ नसीब हो और फिर दीन की जड़ों की सेराबी और अल्लाह की रिज़ा और खुशनूदी उस पर मुरत्तब हो। अल्लाहुम-म आमीन, सुम-म आमीन

मेरे दोस्तो! यह तब्लीग़ के अन्दर सही उसूल के साथ कोशिश करना जो है, इसको ख़ूब ग़ौर करके समझ लो कि यह क्या चीज़ है, ख़ूब समझ लो और ख़ूब समझ लो कि ये दीन के इदारे और जितने भी ज़रूरत के मामले हैं, इन सब दीनी मामलों के लिए तब्लीग़ी सही उसूल के साथ मुल्क-मुल्क फिरते हुए कोशिश करना बाक़ी सब मामलों के लिए ज़मीन हमवार करने जैस है और बारिश बरसाने जैसा है और दूसरे जितने भी मामले हैं, बे मज़हब की ज़मीन के ऊपर बाग़ों की तरह परवरिश करने के हैं। बाग़ों की हज़ारों क़िस्में हैं, कोई खजूरों

का है, कोई अनारों का है, कोई सेबों का है, किसी में केले हैं और कोई फुलवारियों का बाग़ है, बाग़ हज़ारों चीज़ के हो सकते हैं, लेकिन कोई बाग़ दो चीज़ों के अन्दर पूरी-पूरी कोशिश करने के बग़ैर नहीं हो सकता। पहली चीज़ ज़मीन का हमवार और दुरुस्त होना है, ज़मीन के हमवार करने में कोशिश के बग़ैर या ज़मीन में कोशिश करके खुद उन बाग़ों में मुस्तक़िल परवरिश किए बग़ैर सब क़िस्म के बाग़ परवरिश नहीं पा सकते।[1] सो दीन में तब्लीग़ी मामलों की कोशिश, यह तो मज़हब की ज़मीन है और सब इदारे बाग़ है। अब तक मज़हब की ज़मीन ऐसी ना-हमवार और हर तरह की पैदावार और बाग़ों से इस क़दर ना-मुनासिब हो रही है कि कोई बाग़ उस ज़मीन पर लग नहीं सकता, यही वजह है कि जितने भी मज़हबी इदारे हैं, वे ज़मीन की ख़राबी की वजह से ख़राब और बर्बाद होते चले आ रहे हैं और ज़्यादा तर इसकी वजह यह है कि हमारी आज़माइश के लिए हमारा दुश्मन जो नफ़्स और शैतान मुक़र्रर किया हुआ है, वह हमारे इरादों, हमारी नीयतों और हमारे अमलों पर कुछ ऐसा पूरा पंजा गड़ा कर क़ाबू पाए हुए है कि वह सब कामों से दीन के बिगाड़ का काम ज़्यादा लेता है। हम बाग़ों के सर सब्ज़ होने के नशे में ऐसे बेख़बर होते हैं कि नीचे की जड़ों और ज़मीन के बर्बाद होने की ख़बर भी नहीं रखते। अगर दोनों चीज़ों के अन्दर अपनी कोशिश को हिम्मत और इस्तिक़लाल के साथ जारी न रखोगे, तो न ज़मीन ही दुरुस्त होगी, न बाग़ ही सरसब्ज़ होंगे।

इस वक़्त मेरा मक़्सद नूह के मदरसे के लिए ग़ल्ले की ज़रूरत की तरफ़ तवज्जोह दिलाना है कि इस वक़्त मौक़ा दो चीज़ों का है, यानी एक मज़हब की ज़मीन की हमवारी के लिए लोगों को बाहर निकालना और मदरसों के चमन के लिए ग़ल्ले की फ़राहमी करनी, अगर इस चमन की, जो तुम्हारे यहां पहले से क़ायम है, उसे तुम सरसब्ज़ न कर सकोगे और ग़ाफ़िल रहोगे, तो फिर तुम्हारे अन्दर दूसरे मदरसों के लिए पैदा करने की क़ूवतें कहां से पैदा होंगी और यहीं से एक ज़रूरत बात कहनी है और यही है असल, इस ख़त का मग़्ज़ कि ईमान

1. दीन में तब्लीग़ी मामले की कोशिश मज़हब की ज़मीन है और सब इदारे बाग़ हैं, अब तक मज़हब की ज़मीन ऐसी नाहमवार और नामुनासिब है कि कोई बाग़ उस ज़मीन पर नहीं लग सका।

की जो जड़ है और ईमान के सही रास्ते पर उस वक़्त तक नहीं पड़ सकता, जब तक मुनाफ़िक़ की चाल का अपने अन्दर डर न हो अैर उसकी सूरत यह है कि यों समझे कि ये दीनी काम जो कि मैं कर रहा हूं मेरे से शैतान करा रहा है। मैं भला ऐसा कहां था कि अल्लाह को राज़ी करने के लिएं यह काम करता और अपने नफ़्स के निफ़ाक़ की दलीलों को ढूंढने में लगा रहे और तंहाइयों में नफ़्स को क़ायल करता रहे कि तू झूठा है, चुंनाचे आपके मुल्क में अब तक मदरसों की शौक़ ही की मिसाल ले लीजिए, मेरे नज़दीक मदरसों का शौक़ ख़ुलूस और अल्लाह के वास्ते नहीं था, बल्कि शैतान हमारी गरदनों पर सवार होकर आपसी लड़ाई का बहाना ढूंढ रहा था, ताकि मदरसों के हीले से मुसलमानों में आपसी लड़ाई और फ़ित्ना व फ़साद पैदा करने के ज़रिए इस्लाम और मुसलमानों को बर्बाद करे, क्योंकि अब तक तब्लीग़ की बरकत से उसका यह दाव न चला, इसलिए तुमसे वे गुर जो इस बात पर तुम्हें तैयार करे था, उसने छोड़ दिया और यह रिज़ा-ए-इलाही के वास्ते सिरे से ही न था, इसलिए मदरसों की बढ़ौतरी रूक गई। अगर मदरसों की कोशिश अल्लाह की रिज़ा के लिए होती, तो मुझे बतला दें कि क्या वजह है कि इस साल ग़ल्ला की फ़रावानी भी बहुत है और लोगों को दीन का शौक़ भी पैदा हो चुका है, लोगों के दीन का शौक़ होने और ग़ल्ले की फ़रावानी होने के बावजूद ग़ल्ला की वसूली इतनी भी नहीं, जितनी क़हत और दीन की जिहालत के ज़माने में थी। मेरे नज़दीक अगर रिज़ा-ए-इलाही के लिए होता तो अब सैकड़ों मदरसे होते, इस वक़्त दीनदार लोगों का इसमें कोशिश न करना साफ़ बतला रहा है कि हमारा दुश्मन फ़ित्ना व फ़साद पर उभार रहा था। उसको अपनी ग़रज़ें नज़र न आएं, इसलिए उसने छोड़ दिया। अल्लाह की रिज़ा की इतनी तलब ही नहीं कि ख़ालिस उसके वास्ते जान तोड़ कर कोशिश हो जाए। मेरा मक़्सद सिर्फ़ इलज़ाम नहीं है, बल्कि एक तरफ़ मुतवज्जह होकर इत्मीनान के साथ ज़िक्र की ज़्यादती और नमाज़ें पढ़-पढ़ कर फिर नए सिरे से कोशिश की हिम्मतें करें और इन दोनों बातों में पूरी कोशिश करें कि आदमी भी ज़्यादा निकलें, ताकि ज़मीन हमवार हो और मकातिब की ज़्यादती हो और वह रविश ज़िंदगी की हो कि हर मुसलमान की मस्जिद वहां के बच्चों के मक्तब की सूरत हो, अपने दुश्मन की घात से होशियार रहो, और अल्लाह तआ़ला जल्ल

जलालुहू की रिज़ा के हासिल करने में जान देने के रिवाज में पूरी कोशिश करो।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु बक़लम शब्बीर अहमद

नोट— इन ख़त की नक़लें अलग-अलग दोस्तों की तरफ़ रवाना फ़रमा दें।

(17)

786

मोहतरमानम हज़रात मियां साहिबान दामत फ़ुयूज़ुकुम व सब्बतल्लाहु अलद्दीनि अक़दामकुम व शर्र-ह लिल इस्लामि सुदूरकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मेरे दोस्तो! अल्लाह ताआला तुम्हारी हिम्मतों को बुलन्द फ़रमाए और तुम्हारे हाथों ही अपने दीन को मंसूर और मुज़फ़्फ़र और पायदार और आबदार और चमकता हुआ और तर व ताज़ा फ़रमाये। इस गांव नई के जलसे में निहायत ज़ोफ़ व सुस्ती रही और आप साहिबों की हिम्मत और क़ुवतों से जमा तो बहुत बड़े-बड़े लोग हुए, लेकिन मेरी कोताह नज़र में इतनी बातों की कमी रही—

1. अपने यहां के असली मक़्सद के छः नम्बरों में से एक भी ख़ास तौर से जैसा कि चाहिए था, नहीं बयान किया गया, सिर्फ़ मुज्मल तौर पर बाहर निकलने को कहा गया, हालांकि चाहिए था कि अपने तमाम नम्बरों के मय उसके अन्दर की फ़ज़ीलतों और उसकी बरकतों, उसके असरों और उन पर जमाने के ज़रिए तमाम दीन में समझ के पैदा होने और जड़ों के जमने और मुसलमानों के पहलुओं को सर सब्ज़ करने में पूरी कोशिश करनी चाहिए थी, हर-हर नम्बर की अलग-अलग ये सब बातें तफ़्सील के साथ ज़ेहन नशीन करने में पूरी कोशिश करनी चाहिए थी और इसके ख़िलाफ़ एक नम्बर की भी कोई ख़ूबी नहीं बयान की गई।

2. सब ज़ेलदारों और बड़े लोगों को हर गांव के दीनदार उलेमा और मियां जी लोगों के साथ अलग-अलग जमाअतें करके, हर एक जमाअत से अलग-अलग 'हां' करानी चाहिए थी और उसमें कोशिश का इक़रार कराना चाहिए था।

3. इन सब जमाअतों से इक़रार करने के बाद हर जगह के वास्ते उनको

अमल में मसरूफ़ करने के लिए अपने पुराने लोगों को तक़्सीम करके अमल में और गश्त में मसरूफ़ कर देना चाहिए था।

4. हर-हर क़ौम की अलग-अलग जमाअत बनाने की मैं बहुत दिनों से ताकीद कर रहा हूं, इस जलसे में ज़रूरी था कि मौज़ा (गांव) नई से हर-हर क़ौम से मुस्तक़िल जमाअत निकालने की पूरी कोशिश करने के लिए एक जमाअत दो चार दिन के लिए मुक़ीम करके आना था, जो हर क़ौम से अलग अलग जमाअत निकाल कर आती।

5. सिर्फ़ तालीम के लिए एक जलसे की ज़रूरत थी, जिसमें तमाम मुदर्रिस व मुबल्लिग़ जमा होकर सिर्फ़ तालीम वाले नम्बर के पहलुओं पर ग़ौर करके तालीम के फ़रोग में पूरा ज़ोर दिया जावे, इस जलसे की कोई तारीख मुक़र्रर कर देनी चाहिए थी, यह भी न हो सका।

6. यू.पी. में जमाअतें भेजने के लिए हर-हर तबक़े से अलग-अलग इक़रार कराया जाता, यह भी न हो सका। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०

यह मैंने इस वास्ते तहरीर किया है कि इस जलसे में इन नाकामियों की वजह से शर्मिन्दगी के साथ अल्लाह तआला से तौबा व इस्तग़फ़ार की कोशिश करें और आगे जलसों में इन सब नम्बरों में हिम्मत और पाबन्दी और बेदार मग़ज़ी के साथ कोशिश करने की अल्लाह जल्ल जलालुहू से दुआ करते रहें।

फ़क़त वस्सलाम

मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

(18)

इस ख़त के फ़वाइद

फ़ 1. दीन के अन्दर की कोशिश हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्द का मरहम है।

अज़ निजामुद्दीन औलिया

बन्दा मुहम्मद इलयास उफ़ि-य अन्हु

14.7.38 ई०

चौधरी मियां जी चांद मल साहब व चौधरी उमराव साहब व नम्बरदार फ़त्तू साहब[1] सल्लम कुमुल्लाहु तआ़ला

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मेरे दोस्तो! इंसान को अपने अल्लाह पाक के राज़ी करने की अपने नफ़्स और अपनी ज़िंदगी को बाक़ी रखने से ज़्यादा ज़रूरी है और मेरे दोस्तो! मरने के बाद की ज़िंदगी के सामान की इस नापायदार ज़िंदगी के सामान से बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। मेरे दोस्तो! दीन की कोशिश में लगा हुआ शख़्स मरने के वक़्त तर व ताज़ा और जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सुर्ख़ रूई से मुंह कर सकेगा और मुहम्मदी दीन से ग़फ़लत में मरने वाला रू-स्याह और जनाब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने मुंह न करने के क़ाबिल और बुरी मौत मरेगा, दीन के अन्दर की कोशिश हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्द का मरहम है, इतनी बड़ी हस्ती के मरहम की फ़िक्र न करना बड़ी जिहालत और सख़्त बुरी बात है, इसलिए मैं तुम्हें निहायत ताकीद के साथ तवज्जोह दिलाता हूं कि मरदाना हिम्मत के साथ इधर-उधर से जिनको कोशिश करने वाला समझो, अपने साथ लेकर अपने गांव में हर घर दो-दो महीने के लिए एक-एक आदमी दीन के फैलाने के लिए निकलने में ज़रूर पूरी कोशिश करो। मेरे दोस्तो! तुम भी समझो और सबको समझाओ कि घर के जितने आदमी हैं, वे सब तो इस थोड़ी सी ज़िंदगी के सामान में लगे रहें और हर घर एक आदमी का मरने के बाद की इतनी बड़ी ज़िंदगी के सामान में और वहां की सरमाया हासिल करने में लगे रहना ज़रूरी है, आख़िर वहां के सामान की भी तो ज़रूरत है। अगर ऐसा करोगे तो तुम्हारी दुनिया में बड़ी बरकत और बड़ी तरक़्क़ी होगी। तुम खुद नम्बरदार मेहराब के काम को देख लो, वह अपने घर में, जो बावजूद अकेला होने के दीन के अन्दर कोशिश करते रहने से उस की दुनिया में कुछ फ़र्क़ नहीं आया, बल्कि बड़ी बरकत हो गई।

मेरे दोस्तो! मरने के बाद का वक़्त बहुत सख़्त वक़्त है और मरने के बाद की घाटियां बहुत भारी घाटियां हैं, ऐसे भारी वक़्त के वास्ते इतनी बात की

1. मेवात में बहुत क़ुरबानियां देने वाले पुराने मुबल्लिग़ीन

कोशिश कना इसके मुक़ाबले में कुछ भारी बात नहीं है मेरे दोस्तो! इसमें कोशिश करने से सैकड़ों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतें ज़िंदा होंगी और हर-हर सुन्नत पर सौ-सौ शहीदों का सवाब मिलेगा, तुम ख़ुद देखो एक शहीद का कितना बड़ा रुत्बा होता है।

मेरे दोस्तो! इस काम के लिए निकलने वालों के क़दम, मैं उम्मीद करता हूं कि फ़रिश्तों के परों पर पड़ते हैं और अल्लाह के यहां बहुत बड़ा दर्जा नसीब होता हैं, दुनिया की मख़्लूक़ और आसमान के फ़रिश्तों के दिलों में इस काम के करने वालों की मुहब्बत और वक़ार जमता है।

मेरे दोस्तो! दीन के हर काम में तुम्हारा गांव आगे रहा है और सबसे ज़्यादा बाहदुर रहा है। हर घर से एक आदमी निकाला जाना यह नई तहरीक है। इसमें सबसे आगे रहो। अगर इनशाअल्लाह तुमने इसमें जम के कोशिश की, अल्लाह की नुसरत से ज़रूर कामियाब होगे और फिर दूसरों को भी रग़बत होगी और फिर वे भी उसमें कोशिश करेंगे और उनके सवाब में तुम शरीक रहोगे। मेरे कहने को ग़नीमत समझो, भली बात कहने वाले मिलते नहीं, देखो, भले काम में कोशिश कर लो, मरने के बाद कोशिश का मौक़ा नहीं मिलेगा और तमन्नाएं होंगी।

फ़क़त वस्सलाम

(19)

786

मौलवी इमरान खां साहब नदवी के नाम

मुकर्रम व मोहतरम!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

इससे पहले एक ख़त भेजा गया था, जिसमें 16 जनवरी के इलाक़ा मेवात में नूह नामी जगह पर एक इज्तिमाअ़ चौधरियों और बड़े लोगों को तब्लीग़ के लिए दावत और उस पर तैयार करने के लिए तै हुआ था, वह मुलतवी कर दिया गया। चूंकि बन्दा बीमार है और डाक्टर ने हरकत करने और बात करने से मना कर दिया है, दोस्तों की राय में मेरी शिर्कत को ज़रूरी समझा गया, इसलिए फ़िलहाल मुलतवी कर दिया गया, इत्तिला के तौर पर अर्ज़ है। मौलवी मंज़ूर साहब के भी इत्तिला फ़रमा दें। मौलवी अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहब इदारा तालीमाते इस्लामिया को भी इसकी इत्तला फ़रमा दें। फ़क़त वस्सलाम

बक़लम इनामुल हसन

अज़ राक़िम सलाम मस्नून बख़िदमत मौलवी इमरान साहब, सलाम मस्नून, अगर मौलवी अबुल हसन साहब मौजूद न हों, तो इदारा तालीमाते इस्लामिया में इस ख़त को भिजवा दें।

(20)

786

अहबाब बा इख़्लास खुसूसन मौलवी सुलैमान साहब की ख़िदमत गरामी में ज़ीदत इनायातुकुम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। पस अज़ सलाम वाज़ेह हो कि एक निहायत ज़रूरी बात के लिए तक्लीफ़ देने के इरादे से एक और ख़त तहरीर में ला रहा हूं, वह यह है कि हमारी ईमान की तहरीक, जिसका हक़ होना दुनिया वाले तस्लीम कर चुके हैं, उसके अमल में आने की शक्ल इसके अलावा और कोई नहीं हो सकती कि हर आदमी लाख जान के साथ क़ुरबान होने को तैयार हो, दुनिया का यही फ़ैसला है और आसमानी फ़ैज़ की हज़ारों बार आज़माई हुई होकर हज़ारों क़ौमों की तरक़्क़ी और तनज़्ज़ुल के नमूने दिखला चुकी, मैं अपनी क़ूवत और हिम्मत को तुम मेवातियों पर ख़र्च कर चुका, मेरे पास इसके अलावा और कोई पूंजी नहीं कि तुम लोगों को और क़ुरबान कर दूं, कोई पूंजी नहीं मेरा हाथ बटाओ इस वक़्त फ़ौरी ज़रूरत यह है कि मैं सनीचर को बारह टोंटी से उस लारी पर जो लगभग पांच बजे चलेगी, धौलेत के जलसे के लिए रवाना हूंगा, आपके दोस्तों की एक ऐसी जमाअत तैयार होकर जलसे में पहुंच जानी चाहिए जो आने वालों को वाज़ वगैरह से पहले ही तैयार करके यू.पी. वग़ैरह के लिए तैयार करके तमाम उन मुक़दमों को जो आख़िर में करने पड़ते हैं और उनमें खंडित पड़ती है, तै कर ले, ताकि जलसे के ख़त्म पर सिर्फ़ उनका दुआ करके चलना ही बाक़ी रहा करे, मगर इस्तिक़लाल के साथ ख़त पर ग़ौर कीजियो, जल्द फ़ैसला न होने का न कीजियो, हिम्मत, मेहनत और इस्तिक़लाल तीन लफ़्ज़ों का ध्यान रखियो।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास, गुफ़ि-र लहू

मेवात के कारकुनों के नाम

(1)

इस मकतूब के फ़वाइद

फ़ 1. तब्लीग़ में निकलने का ख़ुलासा तीन चीज़ों को ज़िंदा करना है–

1. ज़िक्र 2. तालीम 3. तब्लीग़

मेरे दोस्तो और अज़ीज़ो! तुम्हारे एक-एक साल देने की ख़बर से जो अभी से ख़ुशी हो रही है, वह तहरीर से बाहर है, अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमावें और ज़्यादा तौफ़ीक़ अता फ़रमावें। मैं कुछ बातों की तरफ़ आप लोगों की तवज्जोह खींचना चाहता हूं–

1. अपने-अपने इलाक़ों के उन लोगों की फ़ेहरिस्त जमा करके मुझे और शेखुल हदीस साहब को लिखें कि जो ज़िक्र शुरू कर चुके हैं या अब कर रहे हैं या छोड़ चुके हैं।

2. दूसरे जो बैअत हैं और उनको बैअत के बाद जो बतलाया जाता है, उनको निबाह रहे हैं या नहीं?

3. हर मर्कज़ में जो मकातिब है, उनकी निगरानी और नए मकातिब की जहां-जहां ज़रूरत हो,

4. तुम ख़ुद भी ज़िक्र और तालीम में मश्ग़ूल हो या नहीं, अगर नहीं हो तो बहुत जल्द अब तक की ग़फ़लत पर शर्मिंदा होकर शुरू कर दो।

5. नं 1 से मुराद यह है कि जिनको बारह तस्बीह बताई हैं, वे पाबन्दी से पूरा करते हैं या नहीं? और उन्होंने हमसे पूछ कर किया है या ख़ुद अपनी तज्वीज़ से ज़िक्र करने वालों को देख कर शुरू कर दिया है, हर आदमी से मालूम करके नम्बर वार तफ़्सील लिखो।

6. अपने मर्कज़ों के हर-हर नम्बर के मुताल्लिक़ नम्बरवार तफ़्सील के साथ करगुज़ारी मेरे और शेखुल हदीस साहब के पास रवाना करने का एहतमाम हो।

7. जो ज़िक्र बारह तस्बीह कर रहे हैं, उनको आमादा करो कि वे एक-एक

चिल्ला रायपुर[1] जाकर गुज़ारें।

8. हज़रत थानवी रह० के लिए ईसाले सवाब का बहुत एहतिमाम किया जावे, हर तरह के ख़ैर से उनको सवाब पहुंचाया जावे, कसरत से क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म कराएं जाएं, यह ज़रूरी नहीं कि सब इकट्ठे होकर ही पढ़ें, बल्कि हर-हर आदमी का तंहाई में पढ़ना ज़्यादा बेहतर है, तब्लीग़ में निकलने का सवाब सबसे ज़्यादा है, इसलिए इस सूरत से ज़्यादा पहुंचाओ।

9. हज़रत थानवी रह० से फ़ायदा उठाने के लिए ज़रूरी है कि उनकी मुहब्बत हो और उनके आदमियों से और उनकी किताबों के मुताले से फ़ायदा उठाया जाए, उनकी किताबों के पढ़ने से इल्म आवेगा और उनके आदमियों से अमल, इस वक़्त ये कुछ ज़रूरी बातें अर्ज़ कर दीं। आगे तुम्हारी करगुज़ारी आने पर जो चीज़ें बन्दे के नज़दीक ज़रूरी होंगी, इनशाअल्लाह अर्ज़ करता रहूंगा।

10. मरे दोस्तो! तुम्हारे निकलने का ख़ुलासा तीन चीज़ों का ज़िंदा करना है—

1. ज़िक्र 2. तालीम 3. तब्लीग़, यानी तब्लीग़ के लिए बाहर निकलना और उनको ज़िक्र व तालीम का पाबन्द करें।

11. पुराने आदमियों के ख़ास तौर से जो मेरे भाई के मिलने वाले हैं, उनको एहतिमाम से इस काम में अपने साथ लगाने में ख़ुसूसी कोशिश करें।

12. अपने वक़्त की क़द्र करें और बेकार की बातों से ख़ुद भी बचें और दूसरों को भी उससे बचने की तर्ग़ीब दें, तुम्हारा नमूना दूसरों के लिए नमूना होगा।

13. शैतान की कामियाबी दो चीज़ों में लगा देना है, एक लायानी (यानी बे-मतलब के काम), दूसरे अपनी राहत और आराम के फ़िक्र में पड़ जाना।

14. अपनी कार गुज़ारी के साथ शेख़ुल हदीस साहब को इसका शुक्रिया भी लिखो कि तुम्हारा घरो से मकारेह (कराहियत की बातों) को बरदाश्त करते हुए निकलना, सिर्फ़ आपकी तवज्जोह ही की बरकत से हुआ है। हमारे तग़ाफ़ुल से

1. रायपुर (ज़िला सहारनपुर) हज़रत मौलवी अब्दुल क़ादिर साहब ख़लीफ़ा हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी की ख़िदमत में

जो आपको तक़्लीफ़ पहुंची है, उसकी माफ़ी चाहते हैं। 'व ला किल्ला तुहिब्बूनन नासिहीन' (नसीयत करने वालों से मुहब्बत करने वाले) न बनें, बल्कि अपनी नसीहत करने वालों से ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुद करने वाले बनें।

15. सबसे ज़्यादा ज़रूरी उन ग़लतीयों पर शर्मिंदगी, जितनी भी ज़्यादा होगी, उतना ही तुम तौबा करने वालों में मुहब्बत करने वालों के मातहत उसके महबूब हो जाओगे और आख़िर रातों और फ़र्ज नमाज़ों के बाद अल्लाह तआ़ला से दुआ का बहुत ज़्यादा इस काम के फ़रोग़ के लिए एहतिमाम किया जाए, दुआ तुम्हारी तमाम इबादतों का मग़्ज़ है, उसके फ़रोग़ के लिए या यासीन शरीफ़ का ख़त्म वगैरह करा कर एहतमाम से दुआ मंगवाते रहो।

(2)

786

मेरे मोहतरम दोस्त[1]!

अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दीनी जज़्बों को क़ुबूल फ़रमाएं और किसी ठिकाने से लगा दें। आपके ख़ुलूस, जज़्बों की बुलन्दी और जोश से तबीयत में रश्क आता है, अल्लाह तआ़ला हमें अपनी मर्ज़ी में कोशिश की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाएं। मेरे बुज़ुर्ग दोस्त! हर काम हर आदमी नहीं जानता, मेरे नज़दीक जज़्बों की दुरुस्ती और दीन का सही सलीक़ा तब्लीग़ के बग़ैर आना मुश्किल है और ये हर वक़्त के मसाइल मुक़ामी उलेमा अच्छी तरह से पहचानते हैं, हां, अगर तब्लीग़ करनी हो तो ज़रूर आप तशरीफ़ लाएं।

तारीख़ 27 दिसम्बर 1938 ई०

(3)

फ़लां-फ़लां और बन्दे से मुहब्बत करने वाले, बल्कि ख़ुदा व रसूल से मुहब्बत करने वालों और मज़हब व मिल्लत के दोस्तों, तमाम लोगों, दा-म मज्दुकुम की ख़िदमत में, अस्सलामु अलैकुम!

मुसलमान की क़तई तौर पर असल ज़िंदगी और अल्लाह जल्ल शानुहू की

1. जिसे ख़त लिखा गया, उसका नाम नहीं मालूम हो सका।

मख़्लूक़ात के साथ ख़ास रहमत के साथ मुतवज्जह करने वाली ज़िंदगी और मश्ग़ूल होने वाले और बाक़ी मुसलमानों की बलाओं की हटाने वाली और मक़्सदों को तर व ताज़ा करने वाली ज़िंदगी महज़ पूरी तरह सिर्फ़ इन मामलों में कोशिश करने जितनी है। ज़िंदगी के इस तर्ज़ से ग़ाफ़िल होते हुए बहबूदी का इन्तिज़ार और बलाओं के कम होने का वहम एक पागलपन और ग़लत ख़्याल है, इसलिए मैं यह रिसाला भी रवाना कर रहा हूं और अपने दोस्तों को और अल्लाह और रसूल की दोस्ती की तमन्ना रखने वालों को तक़ाज़े के साथ कहता हूं कि हरगिज़ इसमें कोशिश के साथ लगे बग़ैर अल्लाह की रहमत के इन्तिज़ार में न रहें और बलाओं के हटने का वस्वसा निकाल दें, इन चीज़ों में कोशिश ही बला को दफ़ा करने वाली और बेचैनी दूर करने वाली और ग़मों को ख़त्म करने वाली है, मुझे यह मज़्मून लिखाते हुए तबीयत बेचैन होती है, इसलिए इतने ही को काफ़ी समझता हूं।

(4)

मोहतरमानम व मुहिब्बाने सादिक़ानम अरशदनल्लाहु व ईयाकुम!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि अलैहि व बरकातुहू

अलवर का वाक़िया एक इबरत और निहायत सबक़ देने वाला वाक़िया है, हमेशा याद रखो, काम करने वाले को हर काम करते हुए एक मुश्किल और किसी फ़सावड़े का पेश आ जाना, यह अल्लाह की आदतों में से है और वह वक़्त जो है एक किताब ख़त्म होकर उससे अगली किताब के शुरू होने जैसा है और अगली किताब के शुरू होने की शक्ल यह है कि बिल बिला कर और ख़लक़त से और दुनिया की ज़िंदगी से इस्तग़्ना करे और ख़ुदा की मर्ज़ी में अपनी हैसियत और हिम्मत के मुवाफ़िक़ जम कर कोशिश करे, तब तो तरक़्क़ी में अगले दर्जे पर चढ़ जावेगा और अगर ऐसा न किया तो अपनी पहली हालत से भी नीचे गिर जावेगा, सो अगर अल्लाह की तौफ़ीक़ शामिल हाल रहे और फंसावड़े के अड़गड़े से अल्लाह तआला शानुहू निजात बख़्शें तो उसके शुक्रिया के वास्ते अल्लाह का शुक्र वाजिब है। शुक्रिया की हक़ीक़त यह है कि अब तक जो कुछ भी पेश आया है या कामियाबी हुई है, उसको अपनी कोशिश का हरगिज़ नतीजा न समझे, यह

शिर्क है, सिर्फ़ अल्लाह का फ़ज़्ल समझे और नमाज़ की कसरत और तस्बीहात की कसरत, ख़ासतौर से इन दो दुआओं के ज़्यादा से ज़्यादा करने के ज़रिए सिर्फ़ अल्लाह के फ़ज़्ल होने का ज़ुबान से इक़रार करें, वे दो दुआएं ये हैं–

1. अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिइज़्ज़तिही व जलालिही ततिम्मुस्सालिहातु

2. अल्लाहुम-म ल-कल हम्दु शुक्रंव-व व ल-कल मन्नु फ़ज़्लन

और दीन के कामों में बहुत जम कर पहले से सौ दर्जे ज़्यादा लग जावे। उसने कल के बाद अगर ये दोनों मामले किए तो बेशक शुक्रिया अदा किया, वरना कुफ़्राने नेमत होगा और कुफ़्राने नेमत पर अज़ाब की धमकी है जिसको फ़रमाते हैं 'वइन क-फ़रतुम' और जब अज़ाब हुआ तो पकड़ होगी और 'इन-न बत-श'

सो मेरे दोस्तो! यह मुश्किल हटने का मौक़ा आया है, इसलिए दोनों तरह का शुक्रिया अदा करना चाहिए और तमाम मुल्क में इस ढंग पर जगह-जगह शुक्रिया के अदा करने में कोशिश करनी चाहिए। फ़क़त वस्सलाम।

हर मर्कज़ से सैकड़ों की तायदाद में निकालने की काशिश में सबको लग जाना चाहिए, इससे अल्लाह राज़ी होंगे, दर्जा बुलन्द होगा, दुनिया में बड़ी-बड़ी इज़्ज़त वालों में तुम्हारी इज़्ज़त होगी और मरने के वक़्त तमाम बलाओं से छूट कर गोया कि एक सलतनत की शाहाना ज़िंदगी की शुरूआत होगी, इस काम के करने वाले के लिए, और मरने के वक़्त तमाम आलाइश (गन्दगी) से छूटने का वक़्त होगा और अगर ऐसा न किया तो यह ज़िंदगी हमारी सुअर की ज़िंदगी से बदतर चल रही है, इसलिए मेरी तहरीर में कोशिश को ज़रूरी समझ कर अपने को सब सब्ज़ करने वाली ज़िंदगी को दौड़ कर हासिल कर लो, अपने तमाम मुबल्लिग़ों की एक बा वक़ार अच्छी जमाअत लेकर ग्वालदह पर तो ख़ास तौर से और दूसरे मर्कज़ों में आमतौर से अपनी मौजूदगी में कोशिश करके जितने हो सकें, रवाना कर दें और आते हुए ऐसा बन्दोबस्त करके आवें कि मर्कज़ की जमाअत निकलनी वाली जमाअतों का तार न टूटने दें, तब्लीग़ से वापस होने वाली मिक़्दार से तब्लीग़ के लिए निकालने वाली जमाअत की मिक़्दार हमेशा चौगुनी और दस गुनी होनी चाहिए। इस क़िस्म की मेरी तहरीर मौलवी नूर

मुहम्मद साहब जैसों के बाद ख़ुसूसियत से भेज दें। मौलवी इब्राहीम कुछ दिनों के लिए मेरे पास आ जाते।

फ़क़त वस्सलाम
बन्दा मुहम्मद इलयास
उफ़ि-य अन्हु

(5)

786

इस मक्तूब के फ़वाइद

1. हमारी तहरीक और इस्लामी तब्लीग़ न किसी दिलाज़ारी को पसन्द करती है, न किसी फ़ित्ना व फ़साद के लफ़्ज़ सुनना चाहती है।

2. दूसरों के ऐब की कोशिश बे-हुनरी और काम को बे-रौनक़ करने वाली चीज़ है।

काशिफ़ुल उलूम, दिल्ली

मोहतरमान!

अस्सलामु अलैकुम व रहतुल्लाहि व बरकातुहू

मिज़ाजे गरामी! आप हज़रात की तहरीर से तब्लीग़ की सर गुज़श्त और सरगर्मियां ज़रूरी मालूम हुईं, आप लोग ख़ूब यक़ीन फ़रमा लीजिए कि हमारी तहरीक और इस्लामी तब्लीग़ न किसी का दिल दुखाना पसन्द करती है और न किसी फ़ित्ना व फ़साद की बातें सुनना चाहती है, आप लोगों ने बिदअती के लफ़्ज़ से कुछ जगह के लोगों को याद किया है, आगे ऐसे लफ़्ज़ों के इस्तेमाल से बचना चाहिए जो भड़काएं, फ़ित्ना फैलाएं, बल्कि इस क़िस्म के लफ़्ज़ बराबर लिखने चाहिए, जिससे किसी ख़ास फ़िरक़े या जमाअत पर तान न हो, जैसे कुछ जगह के लोग अब तक शक व शुबहे में पड़े हुए हैं, हम अपनी कमज़ोरी और कोताही की वजह से उनके इश्कालात हल न कर सके और शक न दूर हो सके। अपने ऐबों पर नज़र और उस पर तौबा व इस्तग़्फ़ार व शर्मिंदगी, अपने ऐब और कोताहियों को दूर करना बेहतर है, दूसरों के ऐब निकालने की कोशिश बे-हुनरी

और काम को बे-रौनक़ करने वाली चीज़ है, दूसरों में ऐब निकालने से अपना माया भी जाता रहता है और अपने में ऐब ढूंढ-ढूंढ कर निकालने से पूंजी में कमी नहीं होती और अगर उस पर नदामत के साथ इस्तग़्फार और तौबा की तो आगे बरकत व रहमत नाज़िल होती है। बहरहाल तहरीर च तक़रीर में न ऐसे लफ़्ज़ निकलें जिनमें अन्देशा और ख़तरा हो फ़साद का और न ऐसे ख़्यालों का इज़्हार हो जिनसे बद गुमानी और बदज़नी बढ़े, सारे मुसलमान अपने ही भाई हैं, जब नर्मी और तरीक़े से लाया जाएगा तो ख़ुद ही हक़ पर आ जाएंगे, नूह से जमाअत मांगनी है, इसका जवाब यह है कि वहां के लोगों को आप लोग ख़ुद ही उभारिए और निगरानी और जमाअतों की कसरत की तरफ़ तवज्जोह दिलाइए।

यहां मौलवी इब्राहीम साहब से कह दिया गया है कि जमाअतें ले जाने की कोशिश करें। मुंशी बशीर अहमद साहब के पिछले ख़त का जवाब यह है जो उन्हीं लफ़्ज़ों में नक़ल किया जा रहा है—

'ऐ मेरे दोस्त बशीर! जिस ख़ुदा-ए-पाक ने अंबिया अलैहिमुस्सलाम को इस रास्ते पर जमाने के लिए भेजा है, उसकी हिक्मत ने शैतान को उससे फुसलाने और हटाने के लिए भेजा है, जब तक तुम दुआ और तवज्जोह के साथ उस रास्ते की रुकावटों को मग़्लूब करने की कोशिश न करोगे, उस वक़्त तक उस रास्ते पर चल न सकोगे। हज़रते वाला! बहुत नाज़ुक हालत में हैं, दुआ कीजिए और कराइए।

फ़क़त वस्सलाम

बन्दा मुहम्मद इलयास, ग़ुफ़ि-र लहू

बक़लम मुहम्मद उबैदुल्लाह बलियावी

यह ख़त मुंशी बशीर अहमद साहब को भी दिखलाया जाए।

(6)

786

इस ख़त के फ़वाइद

1. उम्मते मुहम्मदिया के पुराने मरज़ों में अमली चीज़ों का बे-महल और बे-ज़रूरत तक़रीर पर इक्तिफ़ा है—

अज़ निज़ामुद्दीन, दिल्ली

मुकर्रम मोहतरम अल-हाफ़िज़ मौलवी अल-क़ारी मुहम्मद तैयब साहब!

मत्तअ नल्लाहु बितूलिहयातिकुमुत्तय्यिबा व अफ़ा-ज़ अलैना फ़ुयूज़ुकुमुस्सरमदीया व अकर-म-कुमुल्लाहु कमा अकरम तुमूना बिज़्ज़ातिल क़ुदसीया

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

हज़रते आली! कोई काम बग़ैर उसूल और बुनियाद के नहीं चलता। इस वक़्त यह तब्लीग़ इस क़दर अज़ीमुश्शान काम होने को पहुंच गया है कि तफ़्सीलाते ज़ाहिरीया व बातनीया व उसूलीया व फ़ुरुईया इस क़दर कसीर और वाफ़िर है कि वे बयाने तहरीर या ग़ौर करके फ़हम के एहाते से बहुत बाला तर हो चुकी हैं और जैसा कि मैं शुरू में अर्ज़ कर चुका हूं, ये सब तफ़्सील बहरहाल बिनाओं (बुनियादों) पर चल रही हैं। इन बिनाई मामलों पर किसी आदमी को यकायक चलाना बहुत दुश्वार है, इसलिए मेरे नज़दीक जो काम चलने के लिए इस वक़्त ज़रूरत है वह मशाइख़े तरीक़त व उलेमा-ए-शरीअत, माहिरीने सियायत के कुछ ऐसे हज़रात की जमाअत के मुशावरत के मातहत होने की ज़रूरत है, एक नज़्म के साथ हस्बे ज़रूरत मुशावरत का इनइक़ाद ख़ातिर ख़्वाह मुदाविदम रहे और अमली चीज़ सब उसके मातहत हो, सो एक तो अव्वल ऐसी मज्लिस के मुनक़िद हो जाने की ज़रूरत है और दूसरे इस वक़्त जो उम्मते मुहम्मदिया के पुराने मरज़ों में से है वह अमली चीज़ों का बे-महल और बे ज़रूरत तक़रीर की कसरत को काफ़ी समझना है और इसके मुक़ाबले में क़ौल पर अमल के बढ़ने की ज़रूरत है, इसलिए आगे जो तब्लीग़ में कोशिश करे, वह इस तब्लीग़ के मैदान में निकल चुकने वालों के साथ ज़िंदगी गुज़ारे।

इस वक़्त मौलवी की तशरीफ़ आवरी से दिल्ली वालों ने तब्लीग़ से वहशत के बजाए उन्स का असर लिया है, इसलिए अगर आप तमाम मुबल्लिग़ों को मेवात भेज दें और कम से कम मौलवी अब्दुल जब्बार को भेज दें, तो दूसरे काम के लिए मददगार मालूम होता है।